मिथिला चित्र-कोर

भाग-3

प्रकाशक

भारती विकास मंच, बरहेता

मिथिला चित्र-कोश

भाग-३

लेखक

कृष्ण कुमार कश्यप

एवं

शशिबाला

भारती विकास मंच, बरहेता

लहेरियासराय, दरभंगा - ८४६ ००१

मुख्य वितरक : भारती विकास मंच
बरहेता , लहेरियासराय
दरभंगा-८४६००१ बिहार
टेलीफोन-०६२७२-२४०५५६

स्वत्वाधिकार : कश्यप एवं शशिबाला

कम्प्यूटर कार्य : मेधा मेघासिनी और अभय कुमार झा
मुद्रित संस्करण : २००६ ईस्वी
मूल्य : दो सौ पचास रुपये मात्र
हस्तलिपि : कश्यप
आवरण-चित्र : कश्यप एवं शशिबाला

भूमिका

मिथिला चित्रशैलीका सम्बंध इसके परम्परागत प्रयोगकर्त्ताओंकी सम्पूर्ण सामाजिक - सांस्कृतिक जीवन - पद्धतिसे रहा है और उनके बीचमें यह चित्र - आधारित सामाजिक परम्परा आज भी अक्षुण्ण है, उनके वंशानुगत पहचानकी तरह।

इस पुस्तकके जन्मकी प्रक्रिया सन् उन्नीस सौ बियासी-तिरासीमें उस समय प्रारम्भ हुई जब नवजात संस्था भारती विकास मंच (बरेता, दरभंगा) में बालिकाओं-महिलाओंके लिए संत विनोबाके "जीवन और शिक्षण" सिद्धान्तपर आधारित विद्यालय प्रारम्भ हुआ। यह एक अत्यन्त कठिन समय था। संकल्पके अतिरिक्त उस समय हमारे पास कुछ भी नहीं था। हमने मिथिला और गोदना चित्रशैलियोंके अलावा परम्परागत कशीदा-कलाको शिक्षण-विषयके रूपमें चुना था जिनमें किसी तरहकी लिखित सामग्रीका सर्वथा अभाव था। हमारे पास न भूमि थी, न घर था और एक बेल-वृक्षकी छायामें विद्यालय प्रारम्भ हुआ। इन कठिनाइयोंके अलावा सबसे बड़ी कठिनाई थी छात्राओंको जुटाना। उन दिनों दरभंगा जिलेके ग्रामीण क्षेत्रमें बालिका-शिक्षाको सामाजिक मान्यता नहीं मिली थी। खासकर श्रमिक और दलित वर्गमें कहीं दूर तक भी बालिका-शिक्षाकी चर्चा नहीं थी। उच्च जातियोंकी बालिकाएँ पढ़ती तो थीं, किन्तु उन्हें कमानेकी छूट नहीं थी। ऐसी विकट परिस्थितिमें जब बरेता ग्राममें सभी जाति-धर्मकी स्त्रियोंके लिए 'पढ़ाईके साथ कमाई' का विद्यालय प्रारम्भ हुआ तो गाँवके कुछ महिला-विरोधी कट्टरपंथियोंने

सुनियोजित उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। एक तो अभाव, ऊपरसे अशांति। लेकिन कहते हैं, जहाँ चाह वहाँ राह। सो काम चल निकला। काम चलानेमें 'कोर' बहुत सहायक सिद्ध हुए।

'कोर'के संकलन और विकासमें श्रीमती शिवा कश्यप, अनीता, विनीता, बसन्ती और अनेक शिल्प-छात्राओंका महत्वपूर्ण योगदान है। यह पुस्तक सबके लिए है — बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय।

'मिथिला चित्र शिक्षा' पुस्तक-मालाका तीसरा पुष्प यह 'मिथिला कोर' चित्रके साथ साहित्य विषयक पाठ्य सामग्री है।

शुभमस्तु !

त्वदीयं वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पयामि।

बसन्त पंचमी
१७ फरवरी, २००२

कृष्ण कुमार कश्यप

शशिबाला

परिछन

श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने विवाह के बाद पहली बार अयोध्या आगमन पर, दुलहन श्रीसीताजी चारों बहिनों और दुलहा श्रीरामजी चारों भाइयों के परिछन का वर्णन किया है -

"निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवरे देत ।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥"

'परिछन' अत्युच्च शुभाकांक्षा और परमादरणीय स्वागत विधि है । बारात सहित दुलहा या दुलहिन सहित दुलहा, जहाँ जब प्रथम-प्रथम द्वार पर पधारते हैं तो उनका स्वागत परम्परागत परिछन विधि से किया जाता है । यह मिथिला की सर्वजनीय विधि-परम्परा है , जिसके बाद वर-वधू गृह-प्रवेश करते हैं । अद्यावन के रूप में 'कोर' पहली बार आपके द्वार पधारे हैं । दूर्वा-अक्षत से इनका परिछन कर आशीस दें कि सबका शुभ हो ! शुभ हो !!

विनीत :
कृष्ण कुमार कश्यप
१५ सितम्बर, २००६

मिथिला चित्रमें कोर

किसी चित्रके अंश, खण्ड या सम्पूर्णताके द्योतक किसी रचनाको, जो उसे एक पृथक या स्थानीय पहचान देती हो और चित्र-रचनाके क्षेत्रका परिसीमन करती हो उसे कोर या बॉर्डर कहते हैं।

मिथिला चित्र-परम्परामें चित्रांकनका प्रारम्भ कोरसे होता है। कोर माने होता है सीमा, किनारी जैसे खेतोंमें क्यारी। इस लोकशैलीकी सभी तरहकी चित्र-रचना कोरसे सज्जित क्षेत्रमें की जाती है। भितिपर बनाना हो, भूमिपर बनाना हो चाहे कागज या कपड़ेपर बनाना हो —— मिथिला चित्र सदैव कोरके भीतर बनाए जाते हैं।

कोर मिथिला संस्कृतिका सौरभ है।

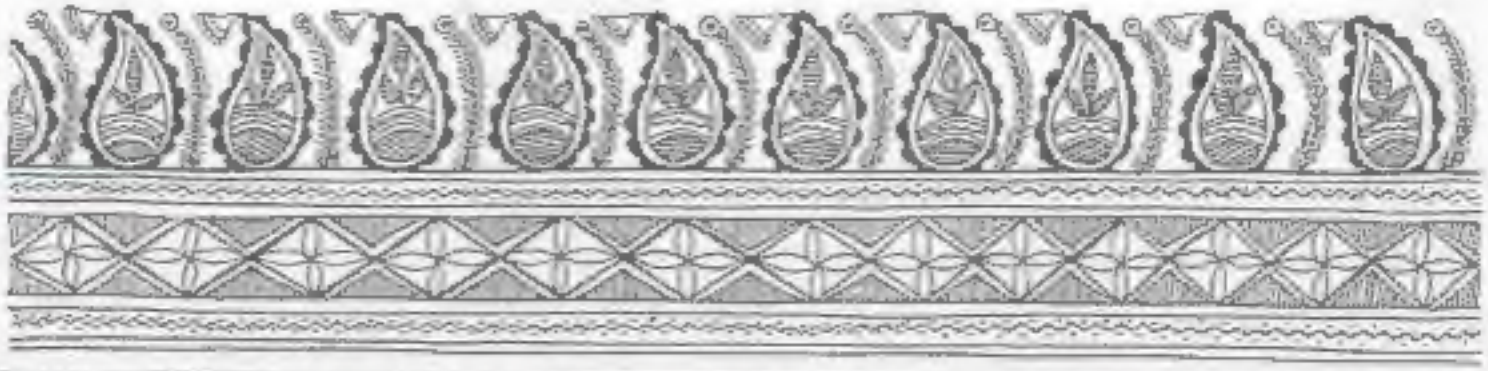

एक कहावत है —

मिथिलाका कोर,
बंगालका माछेर झोल और
मथुराका चीर (कृष्ण)—

दुनियामें नामी है।

कोर और डोरकी महिमाका दन्त साहित्योंमें व्यापक बखान हुआ है—

बिना कोर सब और है
जैसे प्रकृति अनंग,
बिना डोर निस्संग है
जैसे फूकय-पतंग।

मिथिला चित्र मात्र सौन्दर्यबोध या कलात्मक अभिव्यक्तिका माध्यम ही नहीं है बल्कि इसकी जड़ अतीतकी अपरिमित सीमा तक फैली है जिसकी एक एक अभिव्यंजना किसी अनबूझे मंत्रकी तरह अन्तश्चेतनाके अतल गहराइयोंसे उठनेवाली ऊर्जा-ध्वनिकी तरह प्रकम्पित है. इस प्रकम्पनकी निरन्तरता ही जीव-जगतका ऐहिक सुख है।

कोरके अलंकरण तत्व

मिथिला चित्रशैलीके कोर मुख्यतः विशिष्ट प्रतीकोंसे बनाए जाते हैं। इन प्रतीकोंमें कमल, पुरइन, मत्स्य, शंख, सुग्गा, पान, भ्रमर, बाँस, नयन, सर्प, हाथी, कच्छप सूर्य, चन्द्र, चौनि प्रमुख हैं। इन प्रतीकोंसे निर्मित कोर क्रमशः आगेके पृष्ठोंमें दिए जा रहे हैं। इन स्थापित प्रतीकोंके अतिरिक्त वानस्पतिक अवयवों (फूल, पत्ते, घास, काँटे, शैवाल आदि) से भी कोरकी रचना होती है, जिनका प्रचलन मिथिला चित्रशैलीकी संगचांतेना "गोदना चित्रशैली" में प्रचुर है।

मिथिला चित्रकलामें प्रयुक्त होनेवाले प्रतीक लोक जीवनसे जुड़े दैनन्दिन पर्यावरणके प्राकृतिक अवयव हैं जिनके साहित्य, कला, धर्म और परम्पराकी दृष्टिसे अलग-अलग अर्थ होते हैं। परम्परानुसार प्रतीकोंके दो भेद हैं – **श्रेय और प्रमेय**

कमल, मछ, मुर्गा, शंख, गुड़हल, हाथी, सूर्य चन्द्रमा, कलश, नयन आदि श्रेय प्रतीक हैं जबकि साँप, बिच्छू, भौंरा, मेढक, मगर आदि प्रमेय प्रतीक। ये सभी प्रतीक **शुभ और मंगलकारक हैं।**

प्रतीक :-

कमल

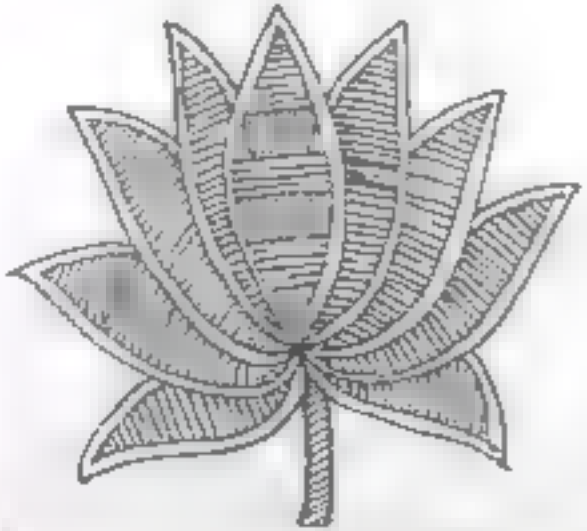

प्रद्युम्न

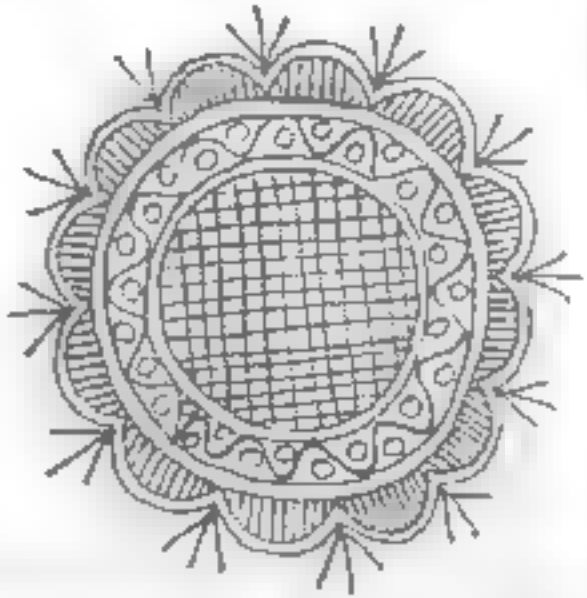

माछ

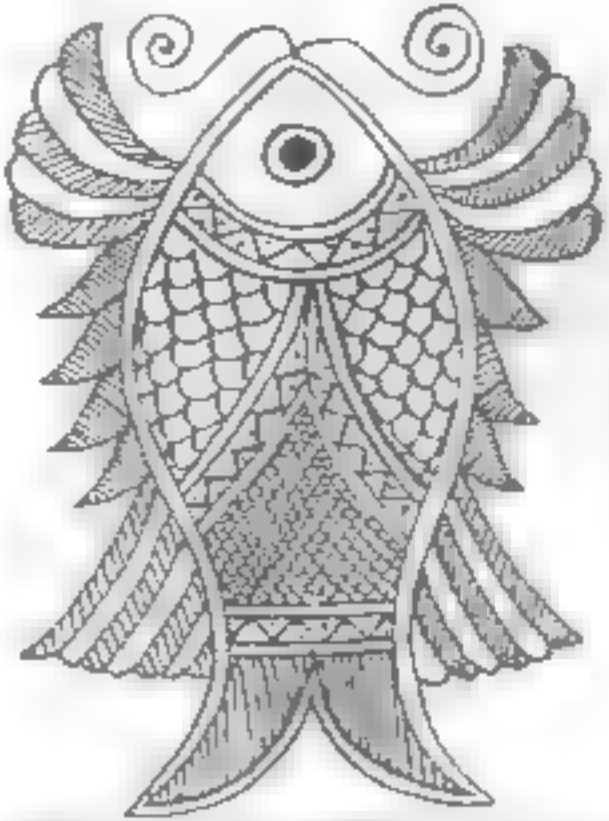

शंख

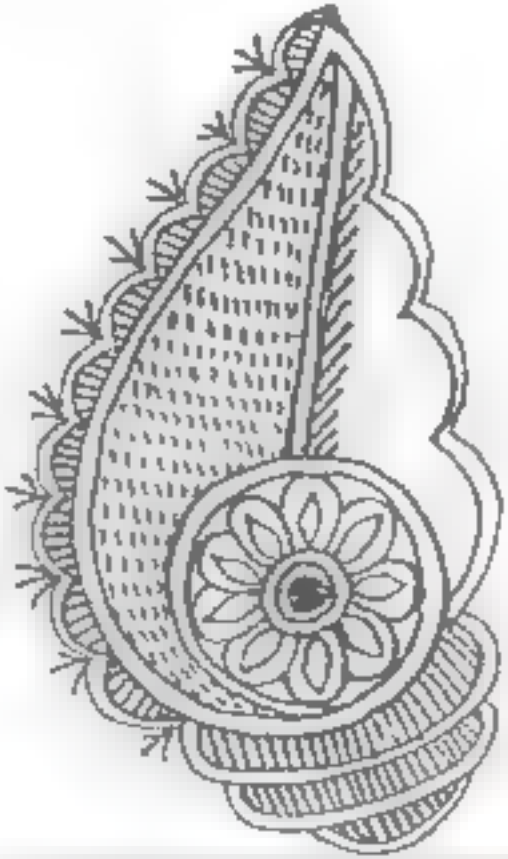

सुग्गा

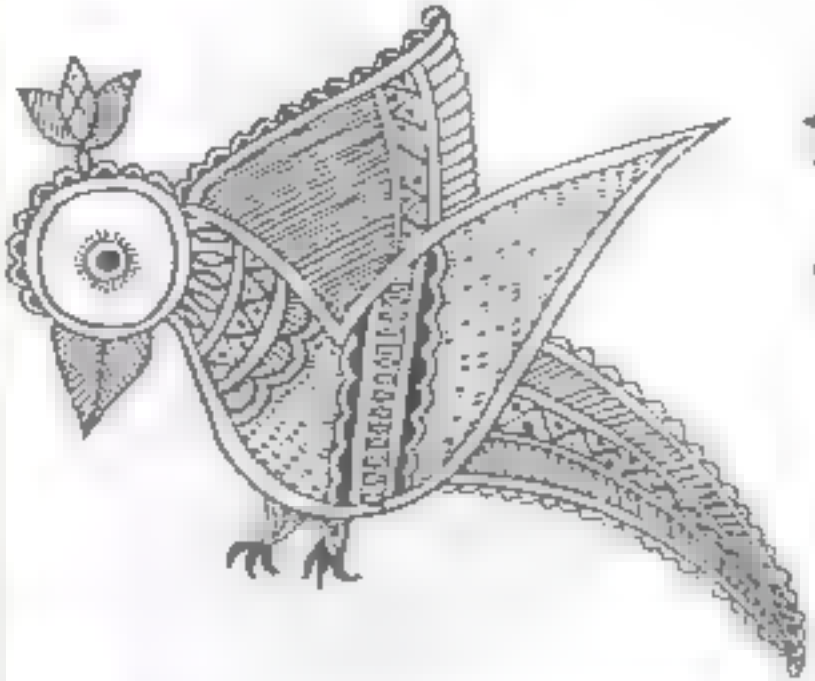

भौंरा

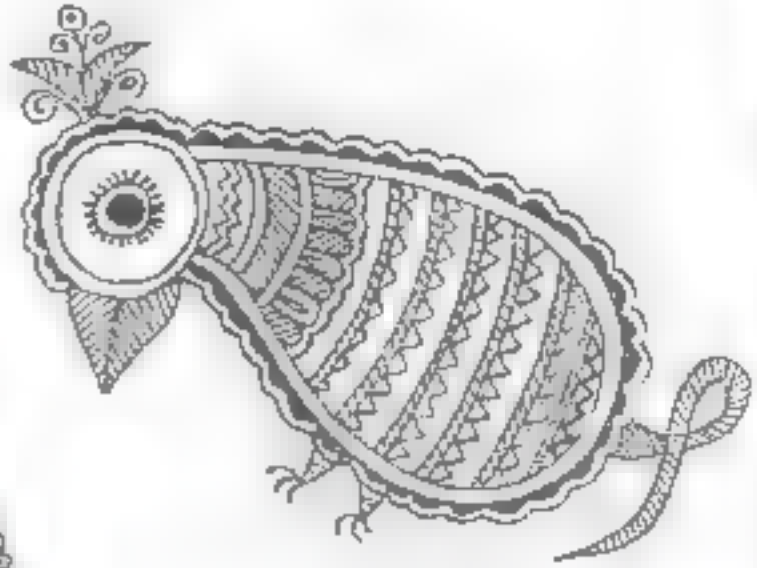

बाँस

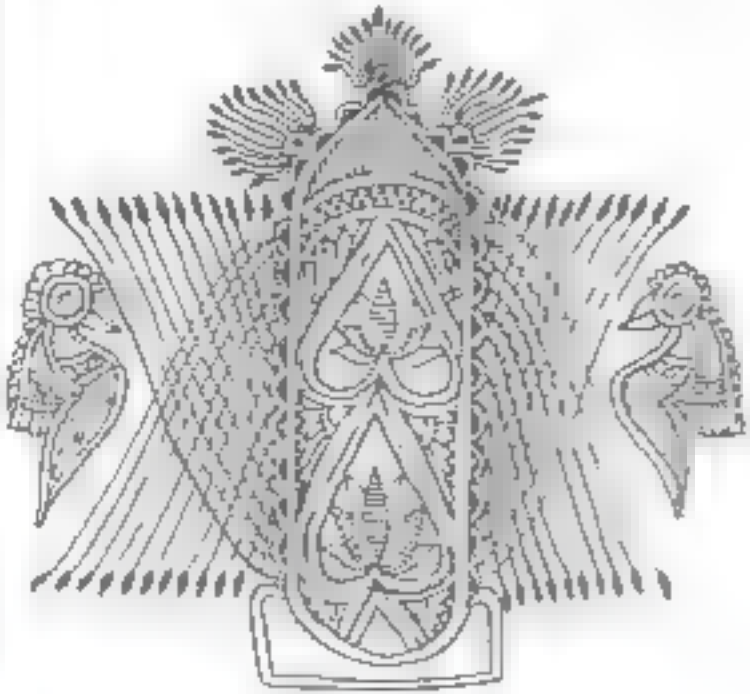

हाथी

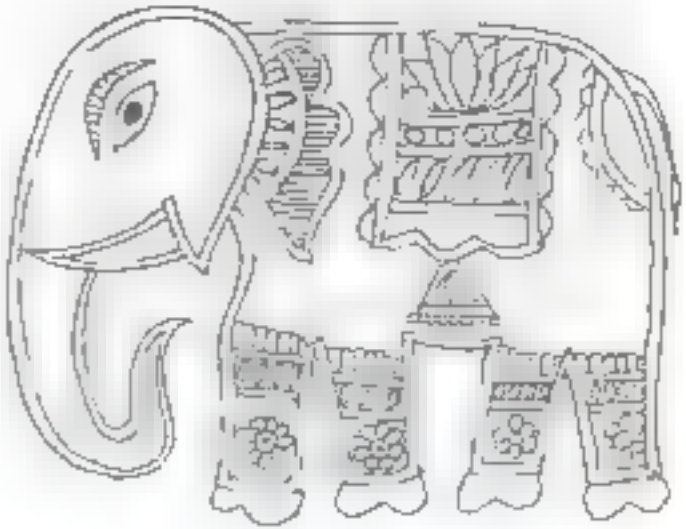

सूर्य

चन्द्र

कच्छप

कॉकोर

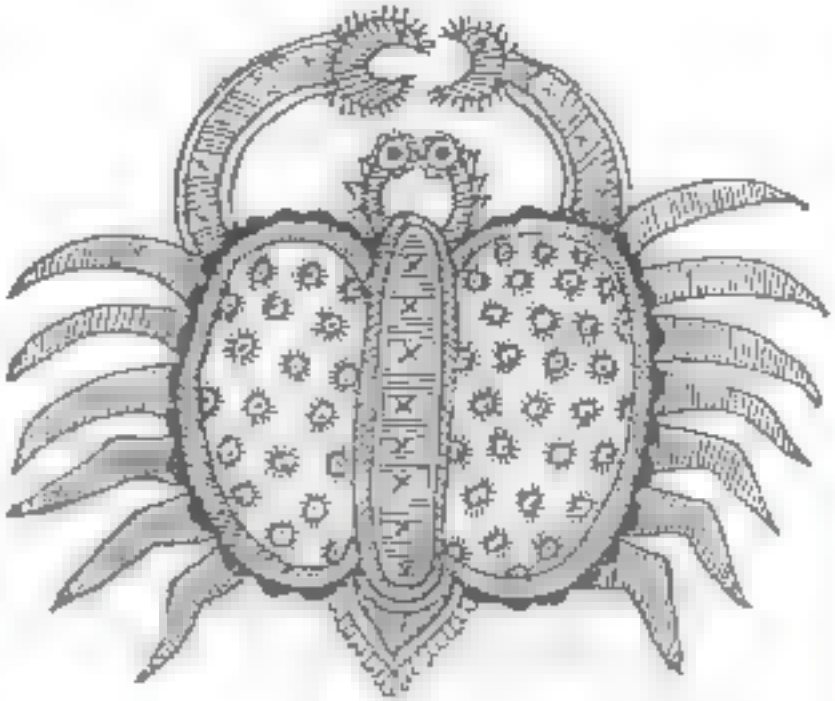

सर्प

बिच्छू

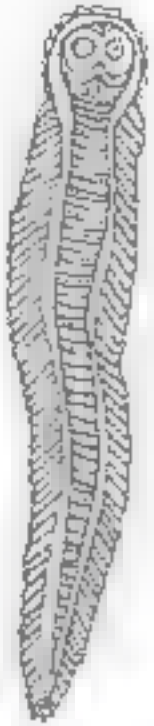

नयन

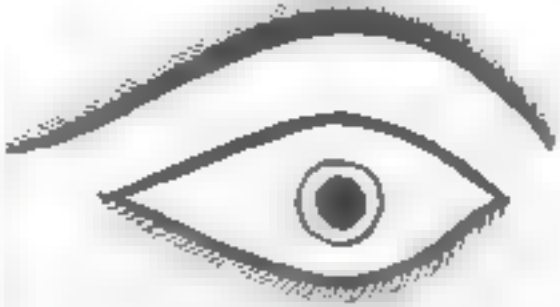

योनि

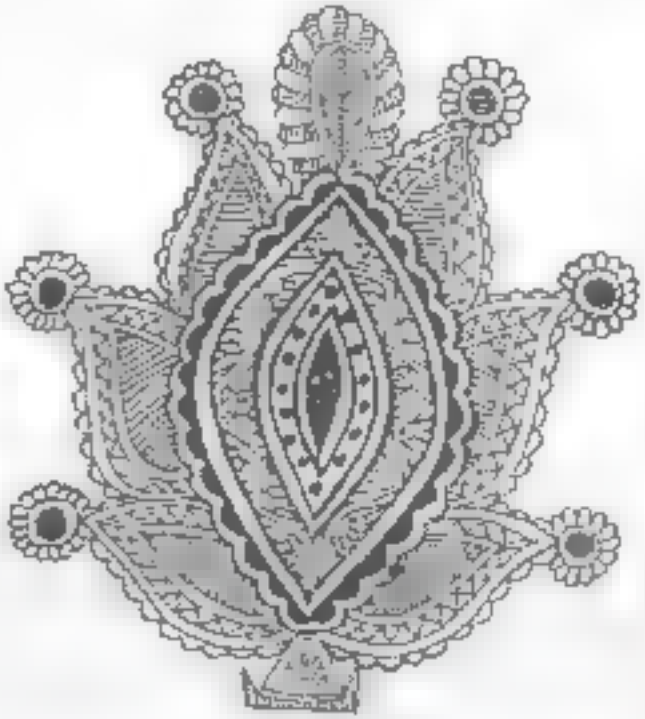

कोरके प्रकार :

प्रकारान्तरसे और प्रतीकान्तरसे मिथिला कोरके कई भेद हैं प्रतीकोंके सम्बंधमें आपने **'मिथिला चित्र शिक्षा – भाग १ और २'** मे अध्ययन किया होगा प्रतीकका अर्थ होता है चिन्ह , किसी शब्द, संख्या, नाम गुण या सिद्धान्त आदिके सूचक चिन्ह ।

जब किसी स्थान पर [illegible] के [illegible] होते हैं तो उस एकल रेखा को रज्जु, तन्तु या डोरी कहते हैं

वस्तुतः रज्जु, तन्तु या डोरी [illegible] नहीं होते

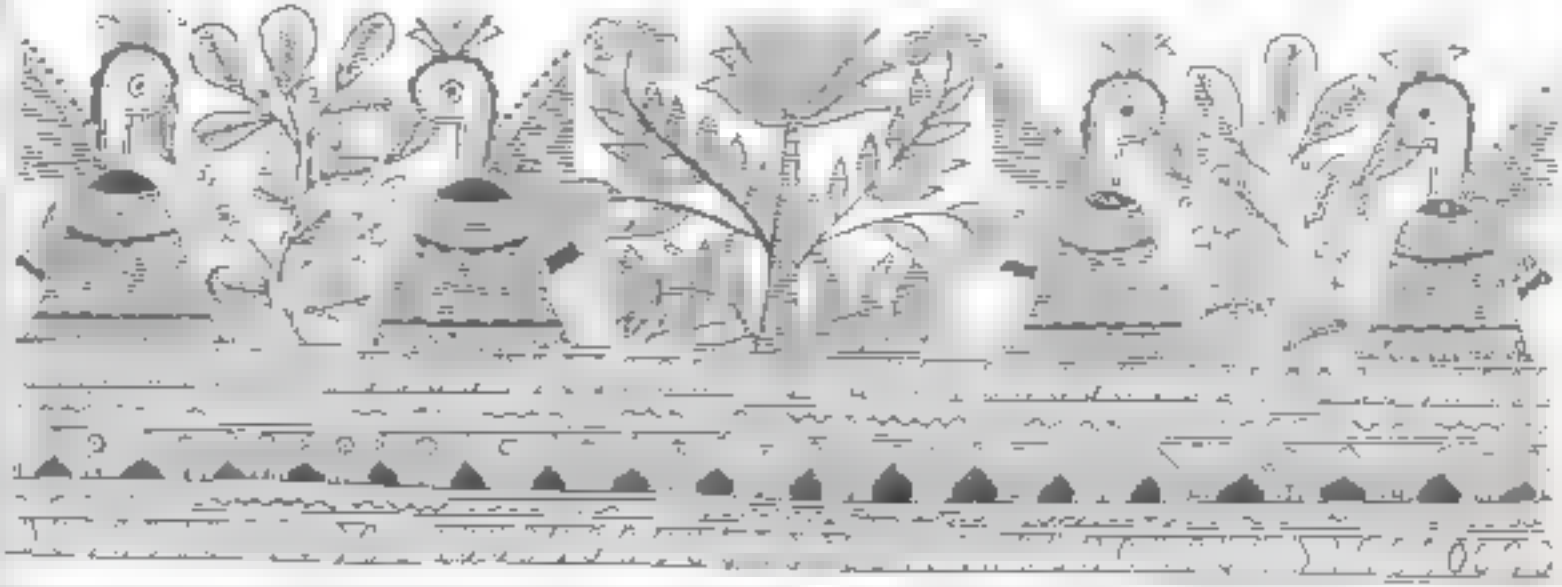

जब रसु या ईरीक्ष दहाते हैं तो उस दुहरे रसुको **नाल** कहते हैं।

पाट : दुहरे रज्जुओं या दो नालके बीचमें यदि रचनाके लिए रिक्त हो तो उस स्थानको **पाट** कहते हैं।

नाल्के भा कोर बनाया जाता है और रजकों खेना दुहरा उसमें एक या दोनों तरफ दुल्लंकरण लगा कर भा कोर बनाए जाते है। इस गहनों रचनाको **एकल कोर** कहते हैं।

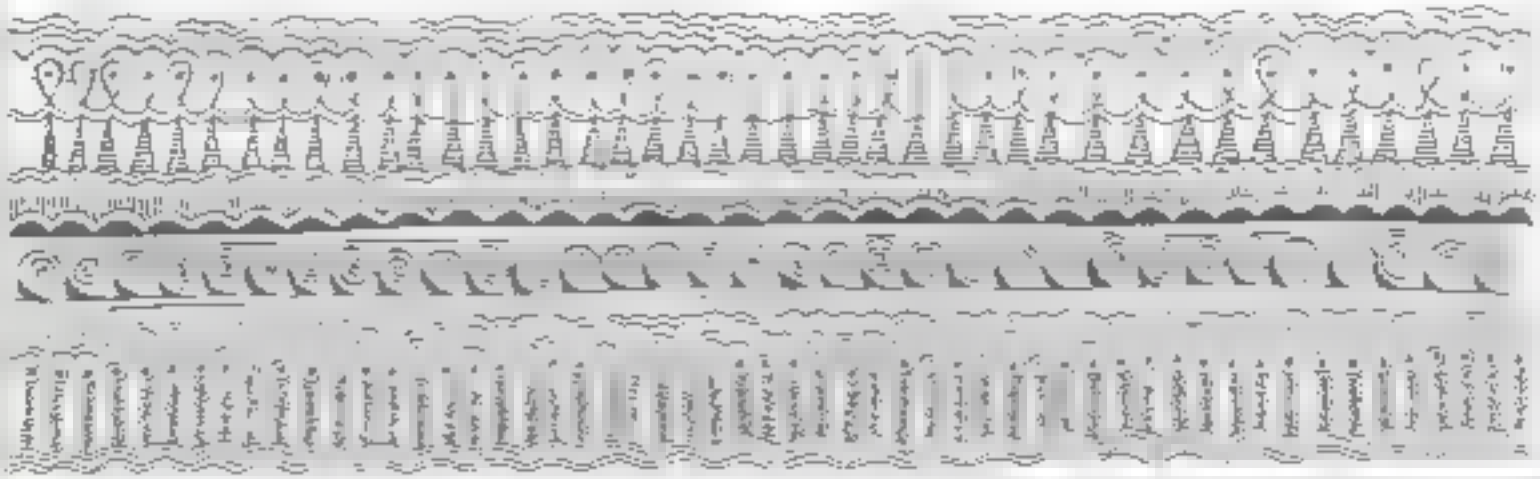

दूसरा कोर. दो एकल कोर [illegible] दूसरा कोर बनाते हैं।

दूसरा कोर

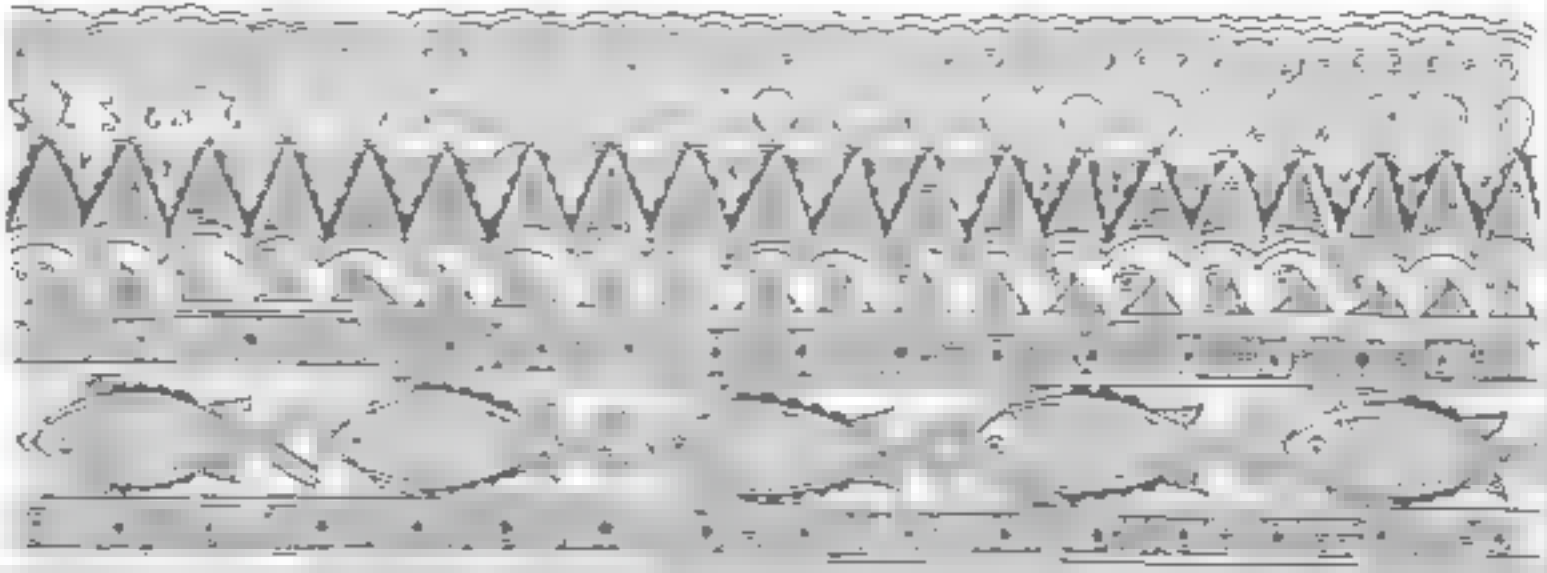

मिथिला शैलीके एक ही चित्रमें कभी-कभी कई प्रसंग समायोजित होते हैं। उदाहरणके लिए, कृष्णलीलासे सम्बंधित किसी चित्रमें एक साथ होकारागारमें कृष्णका जन्म, नवजात कृष्णको बाँसकी टोकरीमें रखकर वासुदेवका यमुना पार करना, यशोदा द्वारा पालनेमें झुलाना, पूतना राक्षसीका दूध पिलाते हुए मरना या फिर बकासुरको मारना — एक ही चित्रमें ये सभी प्रसंग पतले, एकल कोरसे परिवेष्ठित दिखाए जाते हैं। इस तरहके एकल कोरको **आभ्यान्तरिक कोर** कहते हैं एक ही चित्रमें कई आभ्यान्तरिक कोर हो सकते हैं।

प्राथमिक कोर . किसी मूल प्रतीक के दोनो ओर दुहरे कोर लगाकर यदि कोर बनाया जाता है तो ऐसे कोर को प्राथमिक कोर कहते हैं ।

सुलभ कोर

[illegible]

निर्मल कोर - दोनों तरफ पतले नाल कार बीचके पाटन तैरते से प्रतीक - - ऐसे कोरको निर्मलकोर कहेंगे। इस तरहके कोरका अति सुन्दर उदाहरण हड़प्पा सभ्यतासे सम्बंधित उत्खननोंसे प्राप्त चित्रित पात्रोंमें देखा जा सकता है -

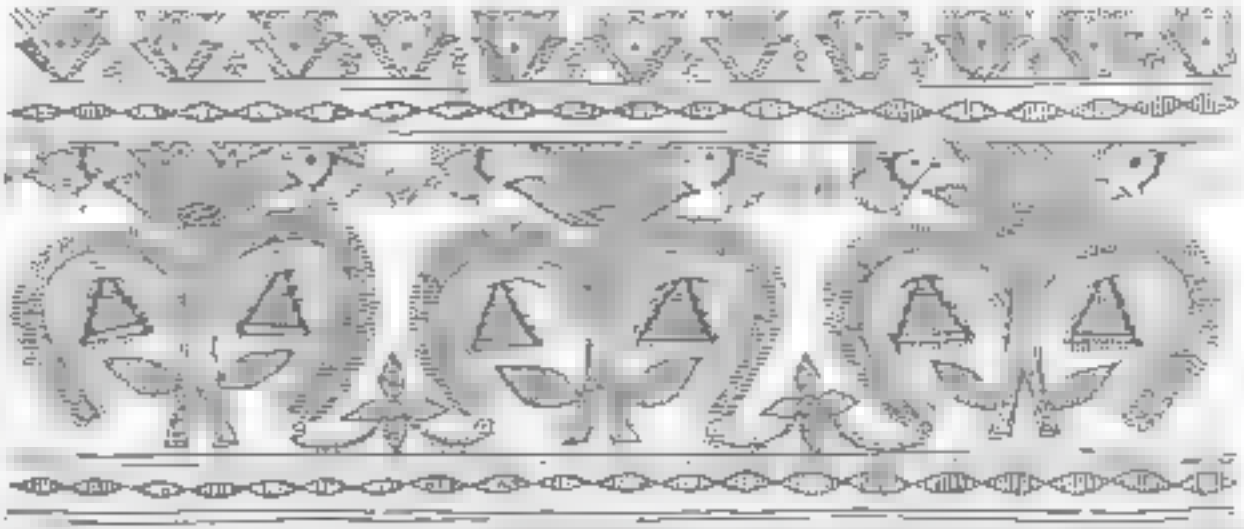

ललित कोर :-

[illegible]

मुख्य कोर और द्वितीयक कोर [illegible] के [illegible] मुख्य [illegible] के [illegible] को द्वितीयक कोर कहा जाता है।

सरस कोर :-

यदि नल और पाट देवोंने वनस्पतिक अवयवों या सामान्य अलंकरणोंसे कोरकी रचना की जाती है तो ऐसे कोरको सरसकोर कहेंगे।

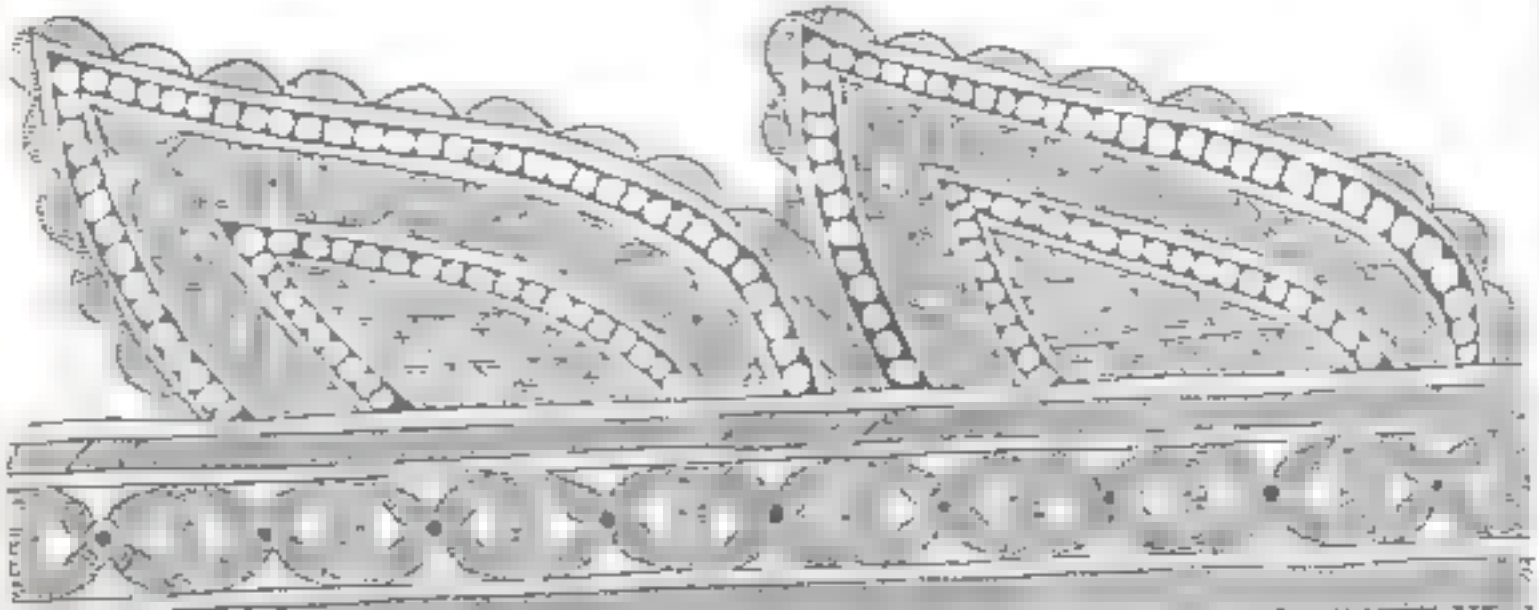

जटिल कोर [illegible] एक या भिन्न भिन्न [illegible] [illegible] [illegible]

और भी समृद्ध कर सकते हैं।

कामायनी

रसोपैसा

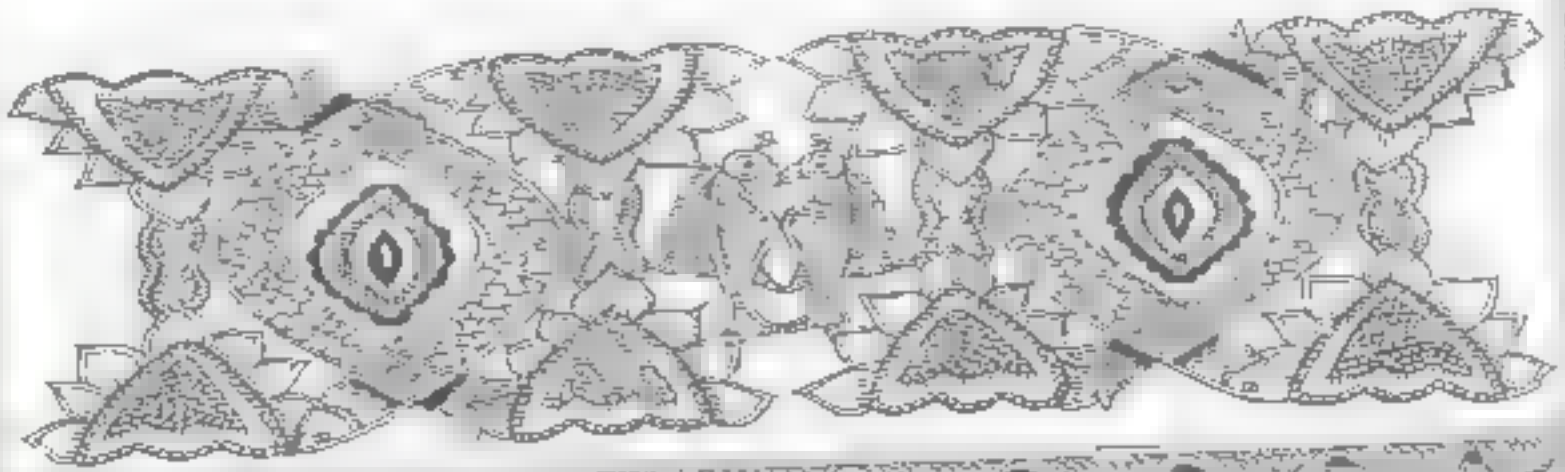

कमलकोर

कमल दिव्यताका प्रतीक है।

सुगन्धमें सन्त [illegible] कमल, [illegible] हैं।

नादब्रह्म [illegible] इसके प्रशस्त [illegible] हुए हैं। गोस्वामी तुलसीदासने **श्रीरामचरित मानस महाकाव्यमें तीन सौ बावन बार कमल उपमानका प्रयोग किया है।**

तुलसीदासजीने अपने आराध्य श्रीराम और उनकी प्रिया सीताजीके समस्त अंगोंकी तुलना कभी नील कमलसे तो कभी रक्त कमलसे की है —

" जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपा निरमल मति पावउँ॥"

अपने महाकाव्यकी सफलताके लिए सीताजीकी स्तुति करते हुए गोस्वामीजी कहते हैं कि राजा जनककी पुत्री, जगतकी माता और करुनानिधान श्रीरामचन्द्रकी प्रियतमा श्रीजानकीजीके दोनों चरण-कमलोंकी मैं स्तुति करता हूँ ताकि निर्मल बुद्धि पाऊँ और सुन्दर रचना कर सकूँ।

परम्परागत मिथिला लोकचित्रके कलाकार बहुधा त्रिदेवों और
उनकी आद्याशक्तियों (महेशिनी) के हाथ और पैर लाल रंगसे रंजित करते हैं इसके
पीछे उनकी कल्पना यह है कि देव देवताओंके चरण और कर तल रक्त कमल
जैसे मनोरम हैं

चरन कमल बलिहारी
रघुनाथ लला के

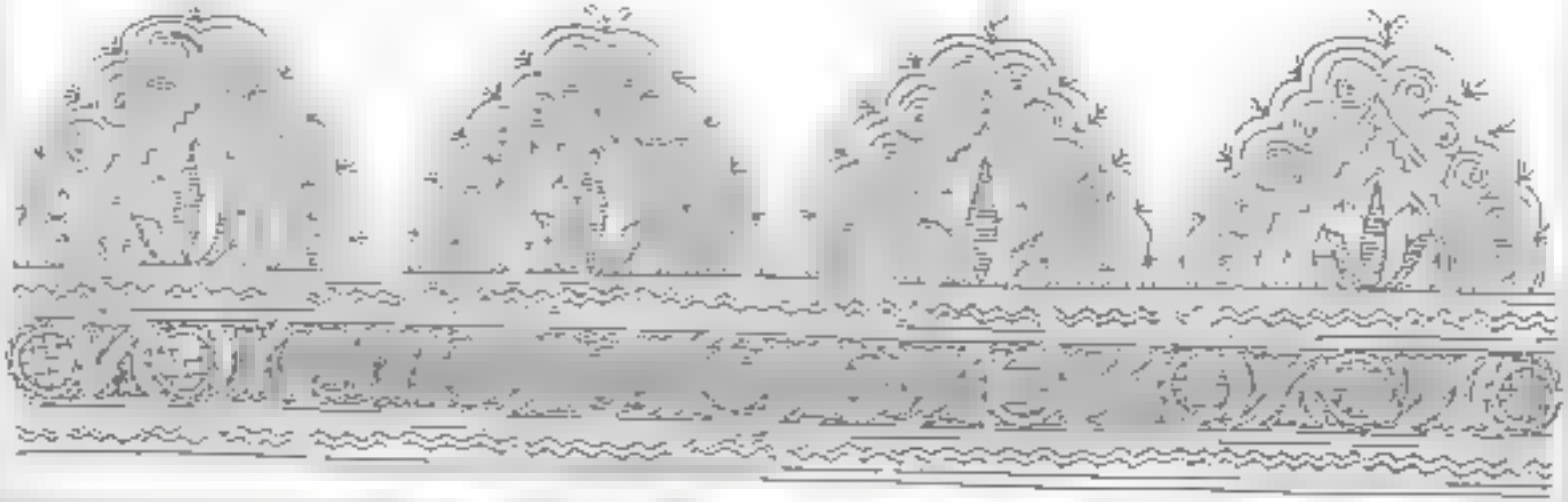

श्रीस्वामी तुलसीदासने [illegible] इसे अपने करुणाको जो विराट दर्शन किया, उसके प्रसाद उन्होंने [illegible] मानसमें स्वकर सर्वसुलभ किया।

"जनकसुता तब उर धीरजु धरेउ। नील नलिन [illegible]
मिला सकल [illegible] सिय [illegible]। तेहि अवसर करुणा महि छाई॥"

(चित्रकूटमें राम-भरत मिलापके समय) जानकीजीके हृदयमें [illegible] करुणा नील कमलके समान नेत्रोंमें जल भरकर, सब सासुओंसे मिलीं। उस समय पृथ्वीपर करुणा छा गई।

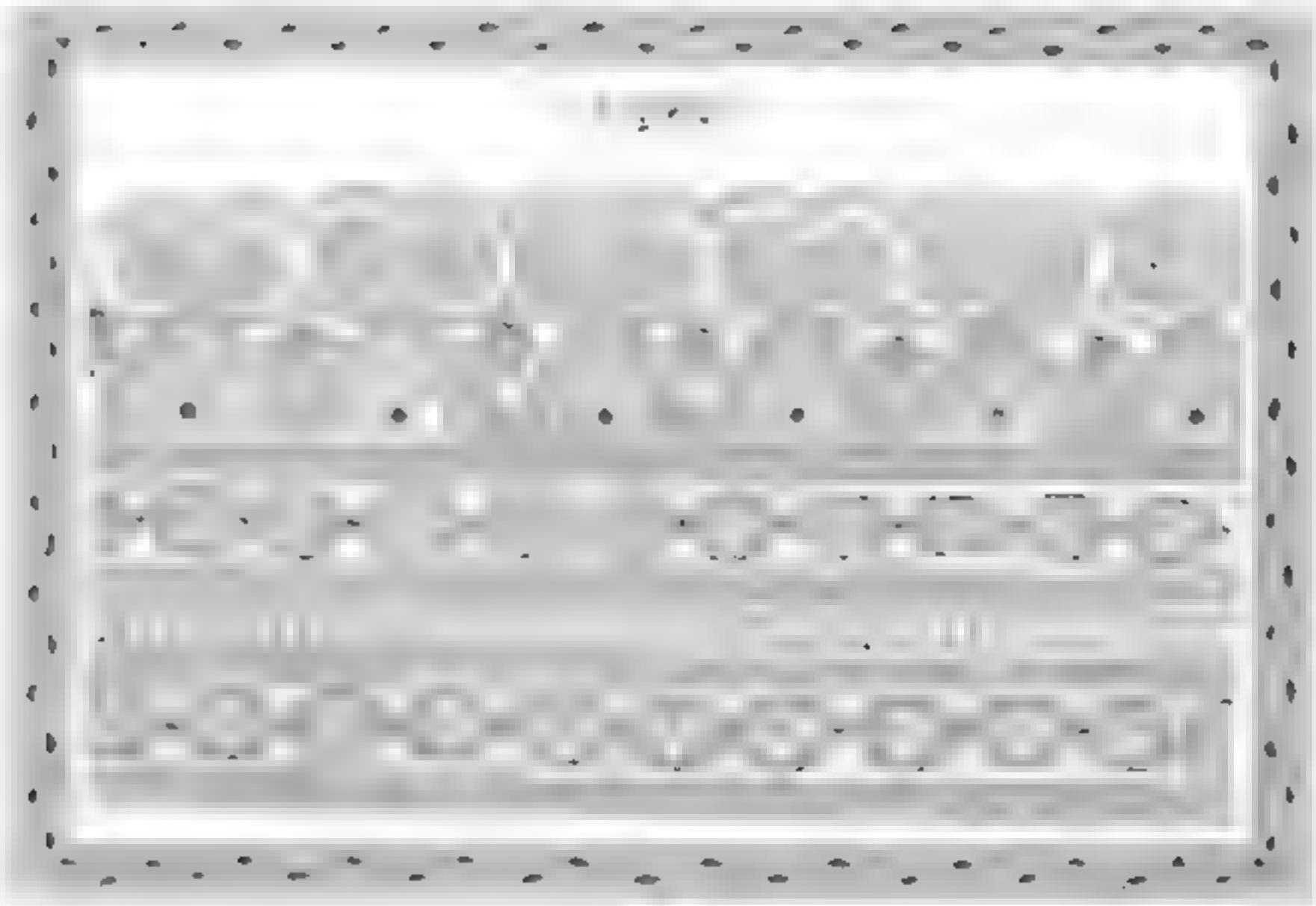

एक अन्य अवसरपर श्रीरामके सौन्दर्यका वर्णन करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं —

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ।

जो नीलकमलके समान श्याम वर्ण हैं पूर्ण खिले हुए लाल कमलके समान जिनके नेत्र हैं और जो सदा क्षीरसागरमें विश्राम करते हैं वे भगवान नारायण मेरे हृदयमें निवास करें ।

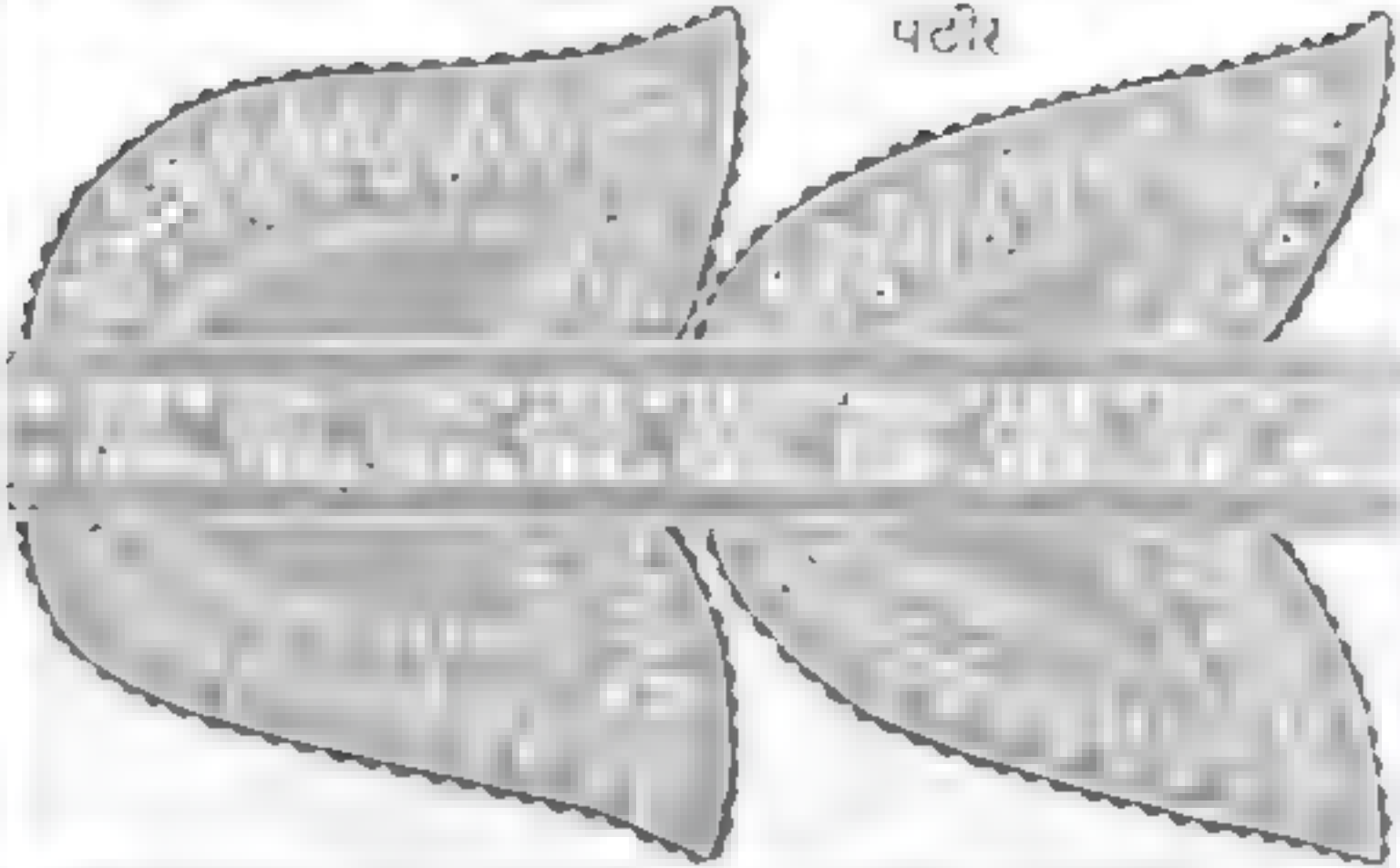
પટીર

[illegible] दर्शन [illegible] हुई राधाके [illegible] अनुनय करते हुए आकुल [illegible] प्रेयसी राधासे कहते हैं —

"स्थलकमलगञ्जनं मम हृदयरञ्जनं
जनितरतिरङ्गपरभागम् ।
भण मसृणवाणि ! करवाणि पदपङ्कजं
सरसलसदलक्तकरागम् ॥"

जयदेवके इस पदका भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने इस प्रकार पद्यानुवाद किया है

" थल - कमल मान - हर मम हृदय प्रानकर ,
सरस रतिरम्भ तुव चरन प्यारे ।
कहैं तो लाइ हिय में महावर भरौं,
हरौं जिय - ताप आनन्दवारे ॥"

"गीतगोविन्द" के ग्यारहवें सर्गमें जयदेवने कृष्णकी सुन्दरताकी तुलना नीलकमलसे की है —

"श्यामलमृदुलकलेवरमण्डलमधिगतगौरदुकूलम् ।
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ॥"

इस पद्यमें राधाको उसकी सखी बता रही है कि श्रीकृष्ण अपने श्याम वर्ण शरीरपर पीताम्बर धारण किए हुए थे; लगता था जैसे नीलकमल आमूलचूल अपने पीले परागसे परिपूर्ण हो गया हो

मिथिला कोकिल विद्यापतिने अपनी नायिकाके मुखमण्डलको कमल और चन्द्रसे भी श्रेष्ठ, अतुलनीय बताया है

" कामिनि करइ सनाह भरि दिठि लाजइ तानि हेरइ पिअ चान्दा
सरिजन सलिल रयनि दिन ससधर ई दिन रयनि सनन्दा ॥

(नायिकाका मुँह देखकर मुझे लगा जैसे यह कमल या चन्द्रमा है, लेकिन कमल रातमें मलिन रहता है और चन्द्रमा दिनमें जबकि नायिकाका मुँह सदैव प्रफुल्ल रहता है

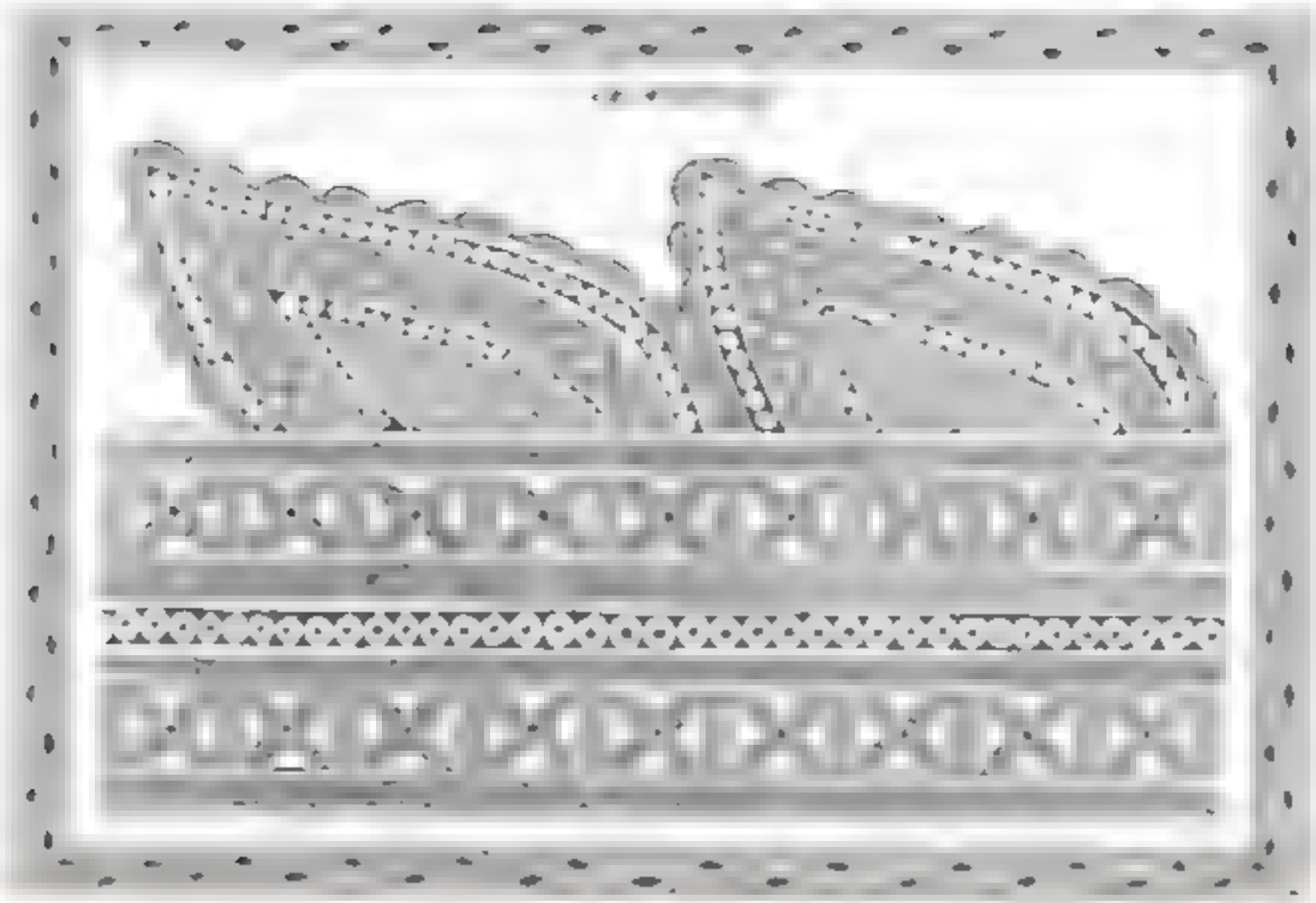

कोमल कान्त पदावलीके गायक विद्यापतिने अपनी काव्य-प्रेरणा श्रीराधाकी वन्दना करते हुए उनके चरण तलकी अप्रतिम सुन्दरताका उल्लेख किया है —

"कत कत लाखबिमे चरन तल नेओछए रंगिनि हेरि बिभोरे ।
करु अभिलाख मनहि पदपंकज अहनिस कोर अगोरे ।"

श्रीराधाके चरण तलकी शोभा देखकर कितनी ही लक्ष्मी इनके चरण-तलपर न्योछावर होती हैं। मनमें यही अभिलाषा है कि इस चरण-कमलको अपनी गोदमें रखकर रात दिन इसे अगोरता रहूँ।

विद्यापतिने यहाँ नायक-नायिकाके मुखकी तुलना कमल से की है किन्तु शैङ्गारिक ढंगसे —

'' ससरि सयनासेम हरि गहलिहुँ गिम,

मुखे मुखे कमल कमल मिलु रे।'

— स्वप्नमें कृष्ण मेरी सेज पर आए और मुझे, कमलसे कमल मिल गया।

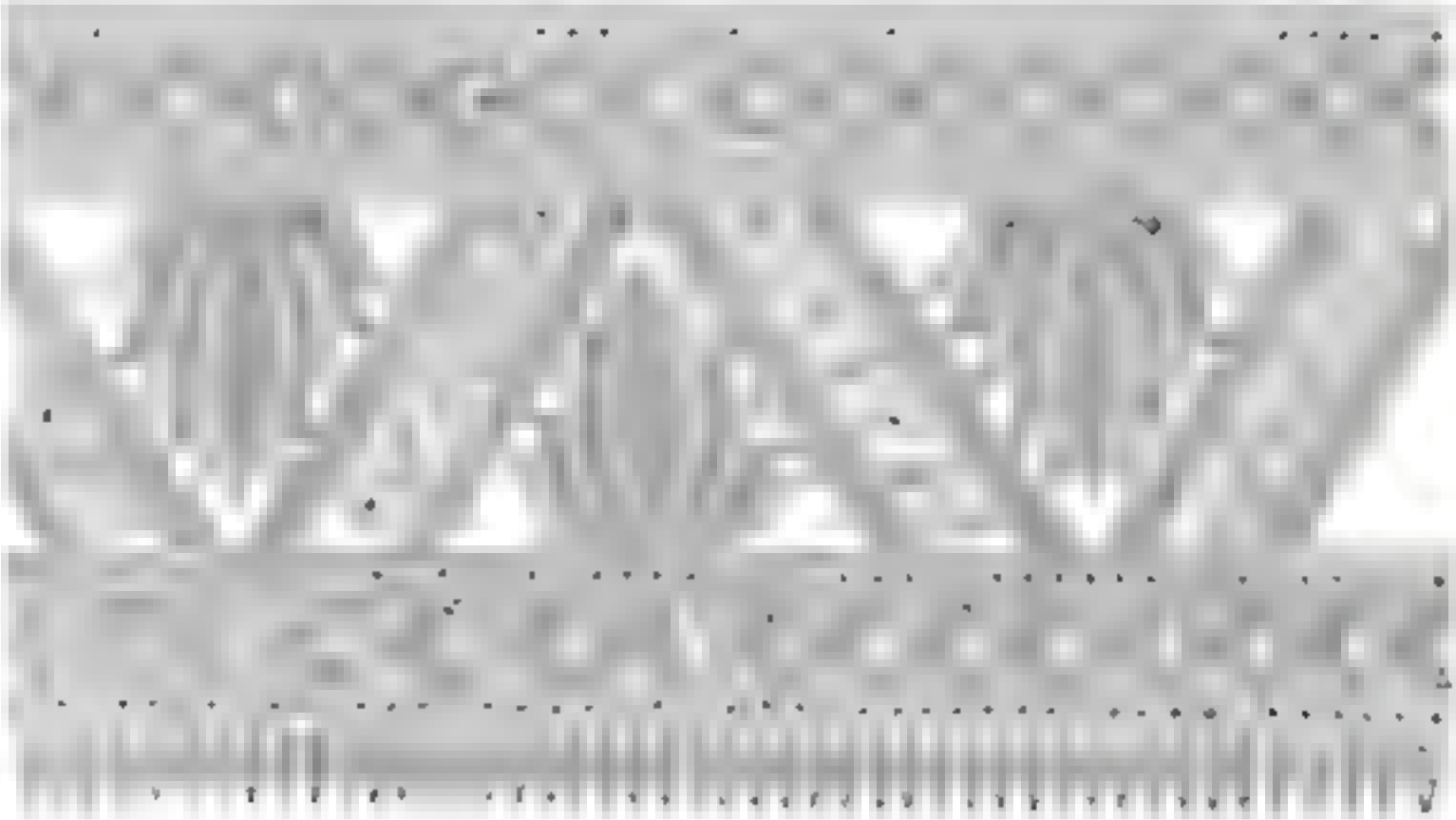

[illegible] नवें
[illegible] भगवती दुर्गाको 'महासिंह' कहा
गया है —

सिंह ऊपर कमल राजित
तापै ऊपर भगवती ...

सिंह की पीठपर कमल और उसपर भगवती विराजमान हैं

कमलका प्रयोग केवल चित्रकला में नहीं बल्कि समस्त भारतीय साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, अन्यान्य विविध वस्तुओं एवं आध्यात्मिक चिन्तनमें भी है। कमल सुख-शान्ति और समृद्धिका प्रतीक है। अनेक पौराणिक और बहुत देवी देवता कमलको अपने हाथमें धारण करते हैं। सुन्दरता और समृद्धिकी देवी लक्ष्मीको कमला कहा गया है।

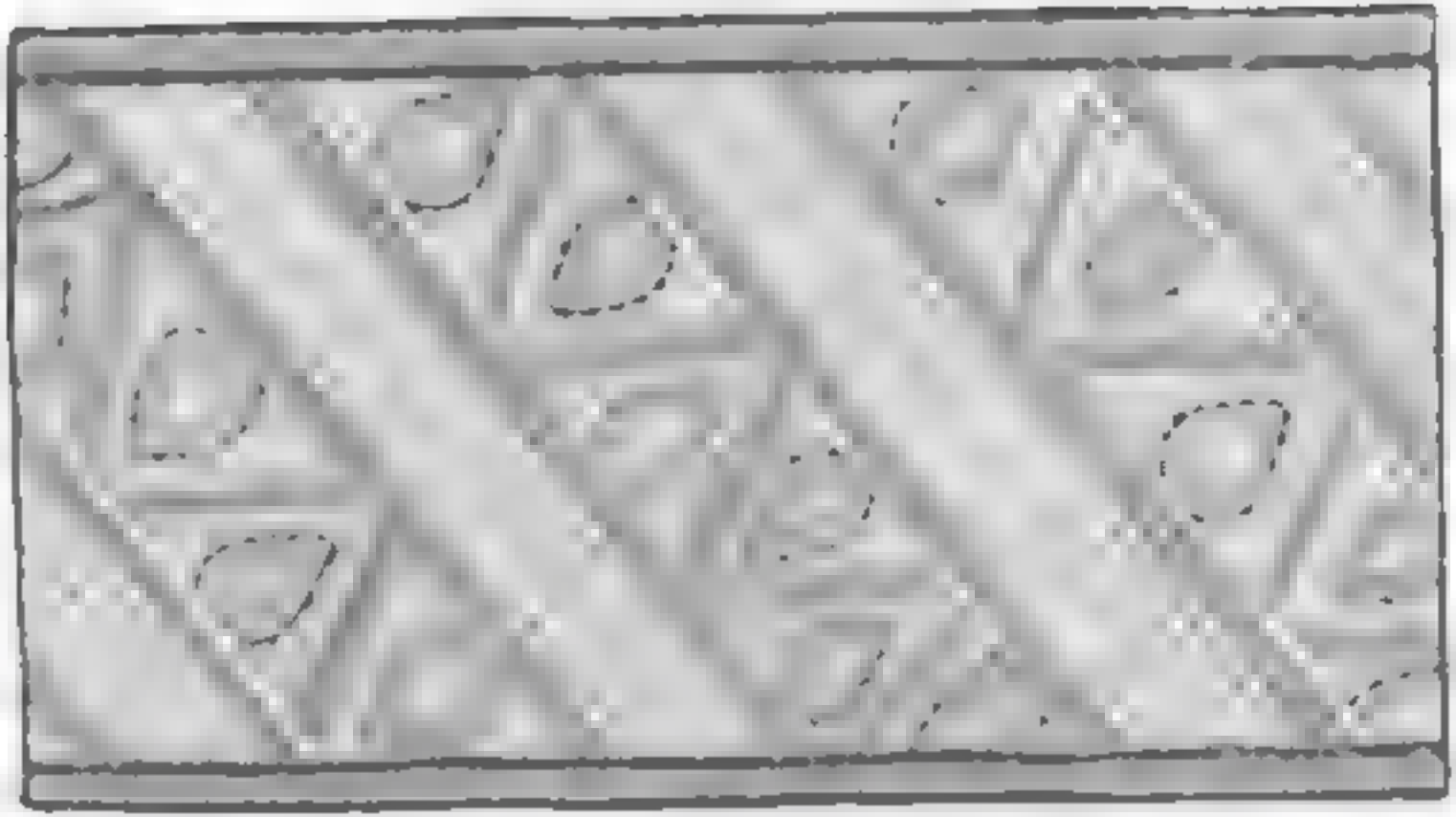

कमलनयन

लक्ष्मीकान्तम् कमलनयनम
योगिभिर्ध्यानगम्यम
वन्दे विष्णु भवभयहरंगम
सर्वलोकैक नाथम् ॥

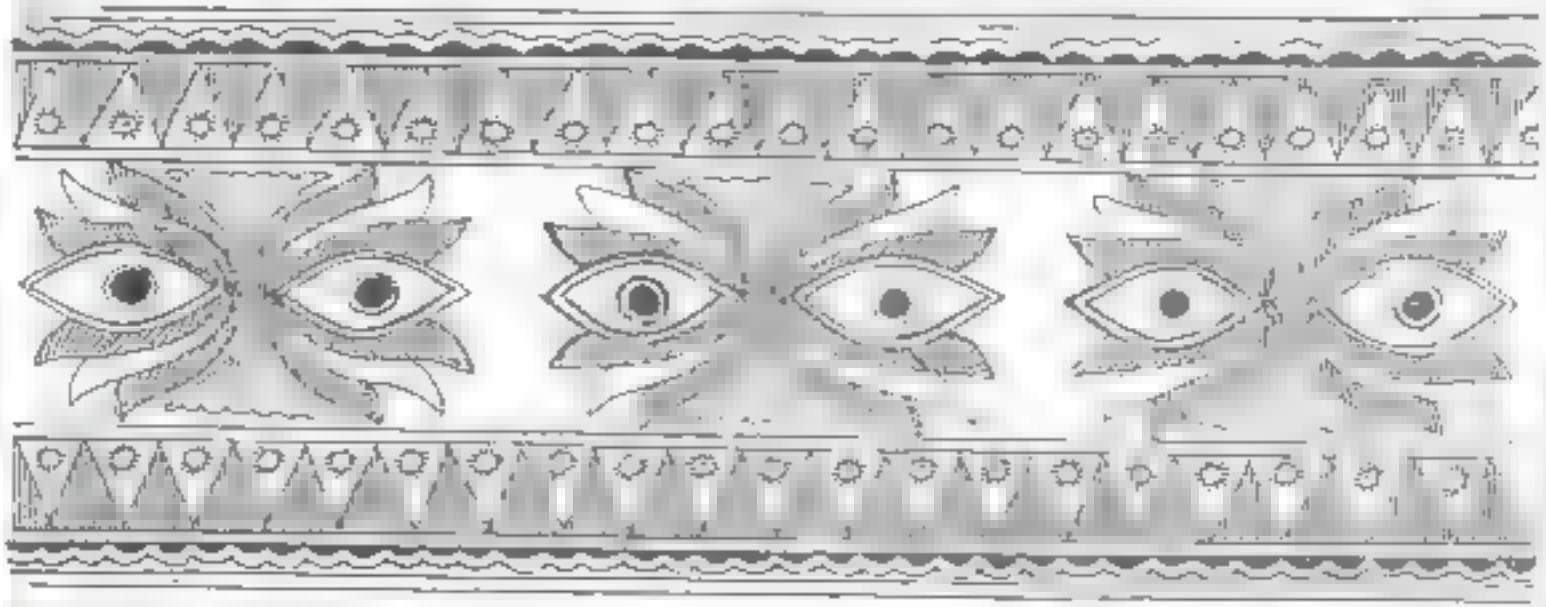

भारतीय [illegible] में [illegible] "कमलनयन" कहा गया है भक्तिकाव्य के पदों में [illegible] कमलनयन [illegible] कमलनयन' अर्थ होता है [illegible] कमल के सुन्दर, [illegible] नयन [illegible] कृष्णदास [illegible] इस प्रकार व्यक्त करते हैं

[illegible]
श्यामाङ्ग [illegible] कमलनयन [illegible]

मीरा श्यामवर्ण हैं, वे [illegible] हैं और [illegible] कमलनयन [illegible] उन्हें [illegible] है।

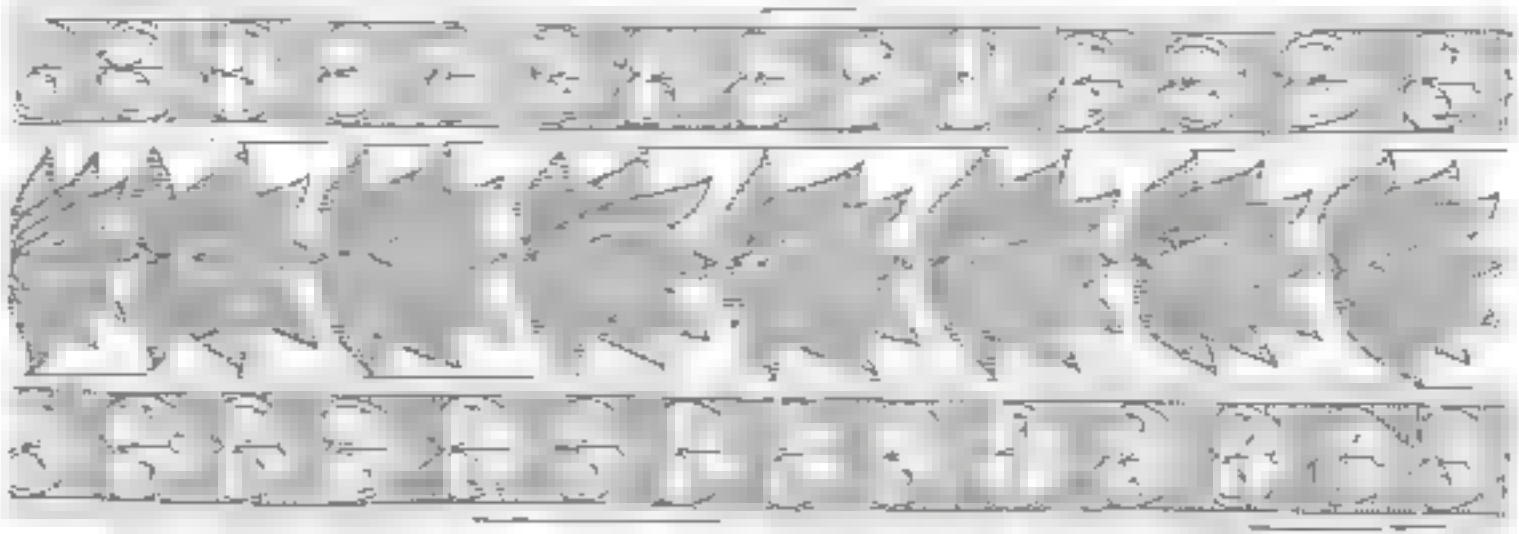

राधा कृष्णके प्रेमको 'गीतगोविन्द' के पदोंमें मानकर परोसनेवाले अमर भक्तकवि जयदेवने भी 'कमलनयन' कहकर कृष्णकी प्रार्थना की है —

"अमलकमलदललोचन भवमोचन त्र
त्रिभुवनभवननिधान तव जयदेव हरे ॥"

हे स्वच्छ कमलदलके समान नेत्रवाले, भक्तजनोंके रक्षक!
त्रैलोक्यकी समुत्पत्तिके कारणस्वरूप भगवन आपकी जय हो, जय हो!

"गीतगोविन्द के तृतीय सर्गमें, कृष्णको अन्य गोप बालाओंसे घिरा देखकर राधा संतप्त होकर चली गयी। राधाकी मनःस्थितिका अनुमान कर कृष्ण कहते हैं

चिन्तयामि तदानीं कुचकलशं कोपभरेण ।
शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥

"जैसे मँडराते हुए काले भँवरोंसे व्याकुल लाल कमल क्षुब्ध हो जाता है, उसी प्रकार मेरे कृत्यसे क्षुब्ध उस राधाकी टेढ़ी भौंहोंसे युक्त उसके मुख-कमलको मुझे इस समय याद आ रही है। हाय वह अनादृत राधा कुपित-सी होकर यहाँसे चली गयी।"

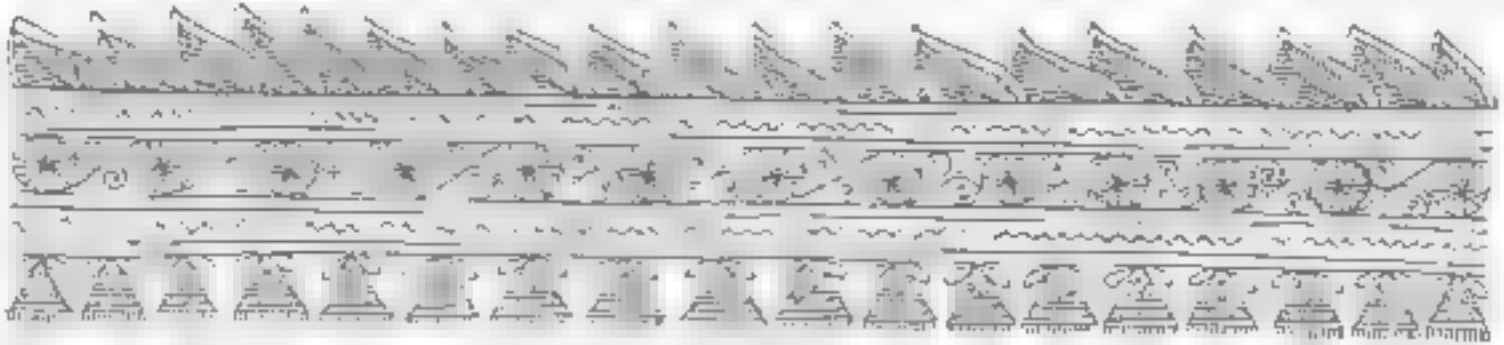

पद्मिनी

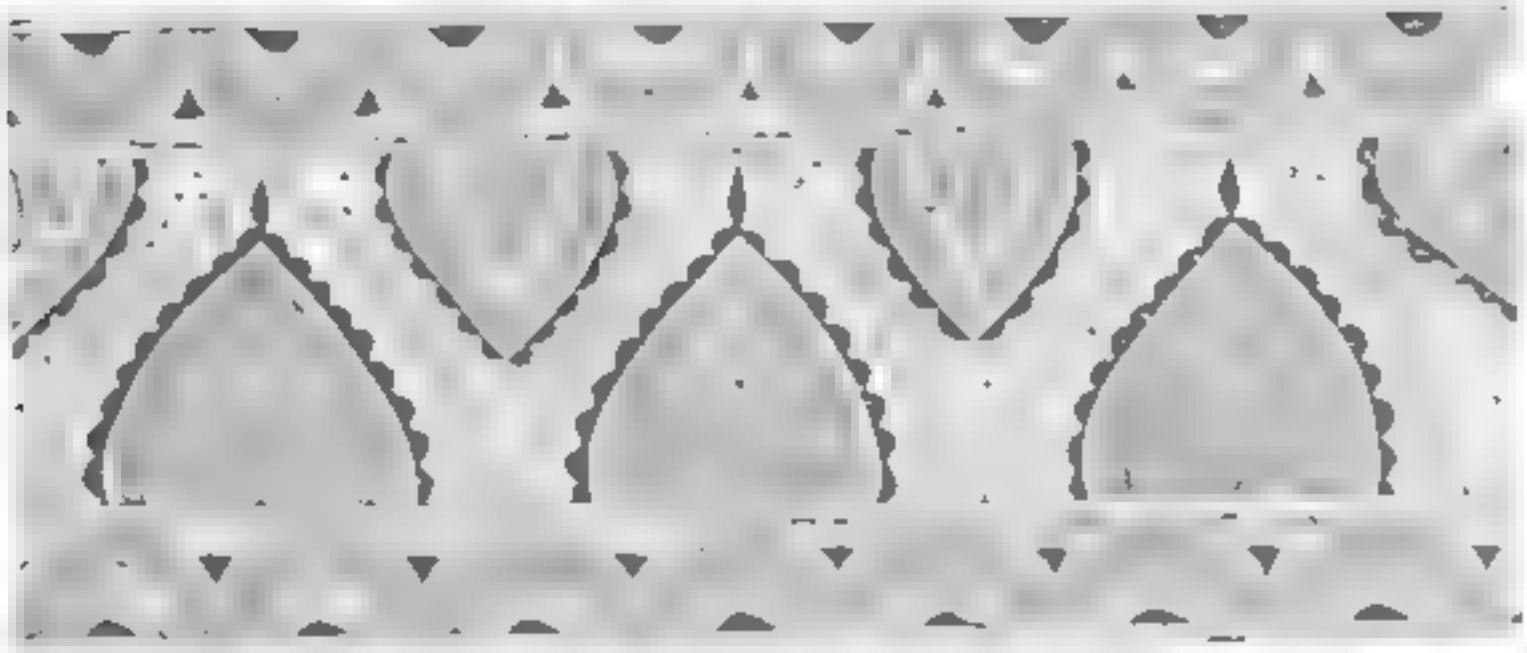

कमल-प्रहेलिका

बाँस करे ठाँय-ठाँय
नदी गुँगुआय,
कमलके फूल दोनों
जलगा जाय .

क्या हुआ? पयोधर

पुरइनकोर

पुरइन कहते हैं कमलके पत्तेको।

कमलासनपर बैठी भगवतीको 'पुरइन' जादामनो कही है

मिथिला चित्रकलामें पुरइन एक दिव्य पात्र, अर्घ्यके पात्र और देवगणोंके निमित्त स्थानके रूपमें चित्रित होते हैं।

भूमि चित्रणके समस्त अल्पनोंमें पुरइन अवश्य होते हैं

पुरइन प्रकृतिका द्योतक है स्त्रीका सकल प्रतीक है।

"आँजुर भरि रूप दियऽ
मुट्ठी भरि गंध,
चुटकी भरि भाव दी तँ
सोनमे सुगन्ध।
आँजुर भरि रूप दियऽ।"

(इन्द्र नारायण)

"गीतगोविन्द"के रचयिता जयदेव ताजे पुरइनके पत्तोंसे
राधा - कृष्णकी अभिसार - शय्या तैयार करते हैं --

सजलनलिनीदलशीतलशयने
हरिमवलोकय सफलय नयने ।

मानिनी राधाको उसकी सखी समझाते हुए कहती है,
हे सखि राधे! जलकणोंसे युक्त ताजे पुरइन पत्तोंसे शय्या तैयार करके तुम्हारी
प्रतीक्षामें व्याकुल हो रहे श्रीहरिको देखकर तुम अपने नेत्रोंको सफल बनाओ।

प्रकृति और शृंगारके अमर कवि विद्यापतिने पुरुषकी
विरह विदग्धा प्रेमिकाके पत्र लेखनकी समस्याके रूपमें प्रस्तुत किया है

"कुसुमित कानन हेरि बसी
नयनक काजर घोरि मसी।

नखसँ लिखलि नलिनि दल पात
लीखि पठओल आखर सात।"

वसंतका आगमन हो गया है। समस्त वनांचल फूलों और मंजरियोंसे सुरभित हो उठा है। ऐसे समयमें अपने प्रियतमसे दूर विरह-कातर प्रेमिकाने उद्वेगातिरेकमें पत्र लिखनेकी सोची किन्तु 'कुसुमित कानन' में कहाँ मिले कागज, कलम और स्याही? आखिर पुरुषके कोमल पत्रेको कागज बनाया, अपनी आँखोंकी कोरसे काजलको निकाले गए काजलको स्याही बनाया और अपनी अंगुलीके नखको कलमकी निब बनाकर प्रेयसीने पत्र लिखा — सात अक्षरोंका प्रेमपत्र

मग्न स्नाता नायिकाका चित्रण करते हुए विद्यापति पुरुषों की नयी छवि देखकर अचम्भित हैं —

" तीतल अलक वदन अति सोभा, भलिकुल कमल बेढ़ल मधु लोभा ।
नीर निरंजन लोचन राता, सिंदुर मंडित जनु पंकज पाता ।

स्नान कर रही सुन्दरीके भीग बाल मुखमण्डलपर छितराए हुए हैं, ऐसा लगता है जैसे मधुके लोभमें भौंरोंके झुंडने कमलको घेर रखा हो। पानीमें डुबकी देकर नहानेके कारण उस सुन्दरीकी आँखें अंजनहीन और लाल हो गई हैं; ऐसा लगता है जैसे कमलके पत्ते (पुरइन) सिंदूरसे रंजित हो गए हों।

घट पूरन

मत्स्यकोर

सम्पूर्ण मिथिला सन्कृतिमे कोर कला मत्स्य या माछकी सुगंधिसे भरावर है [illegible] मत्स्य (मीनध्वज) [illegible] प्रेमका प्रतीक है।

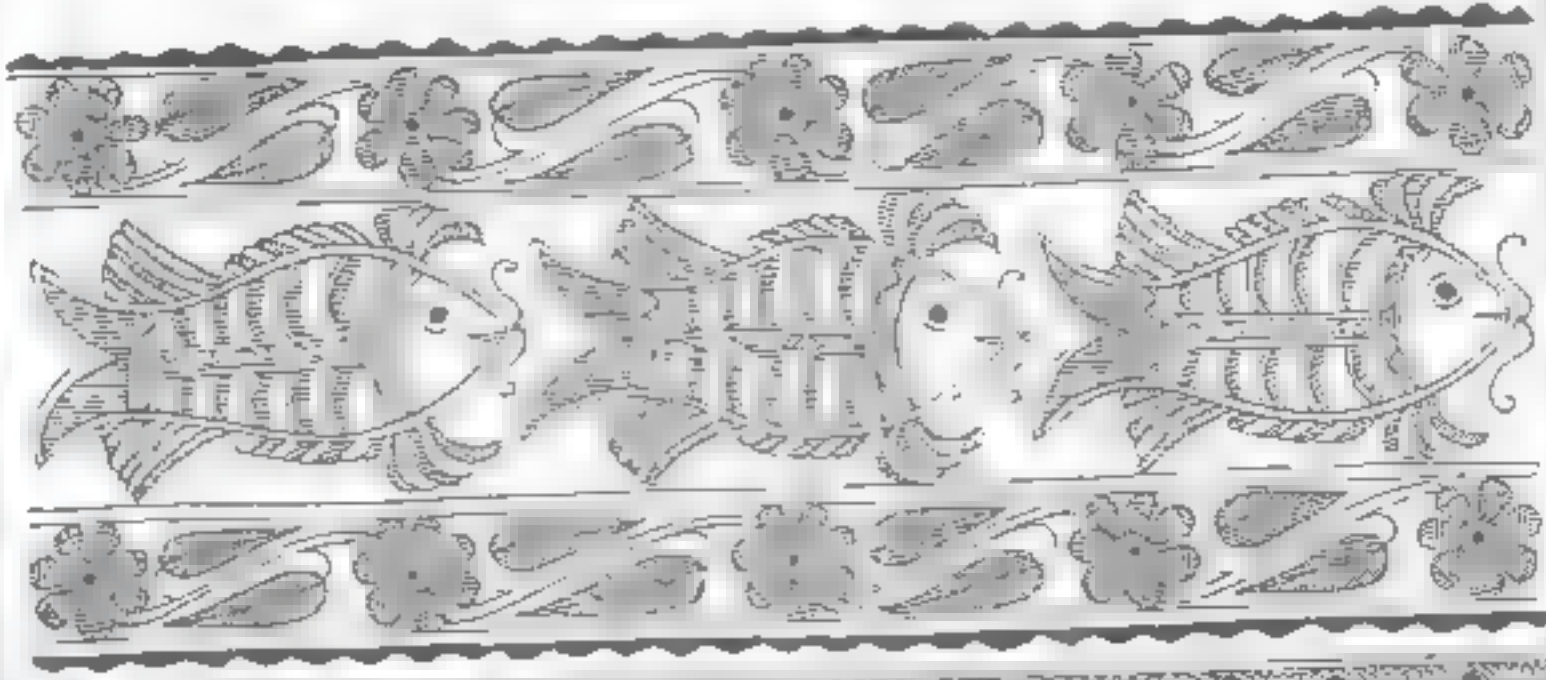

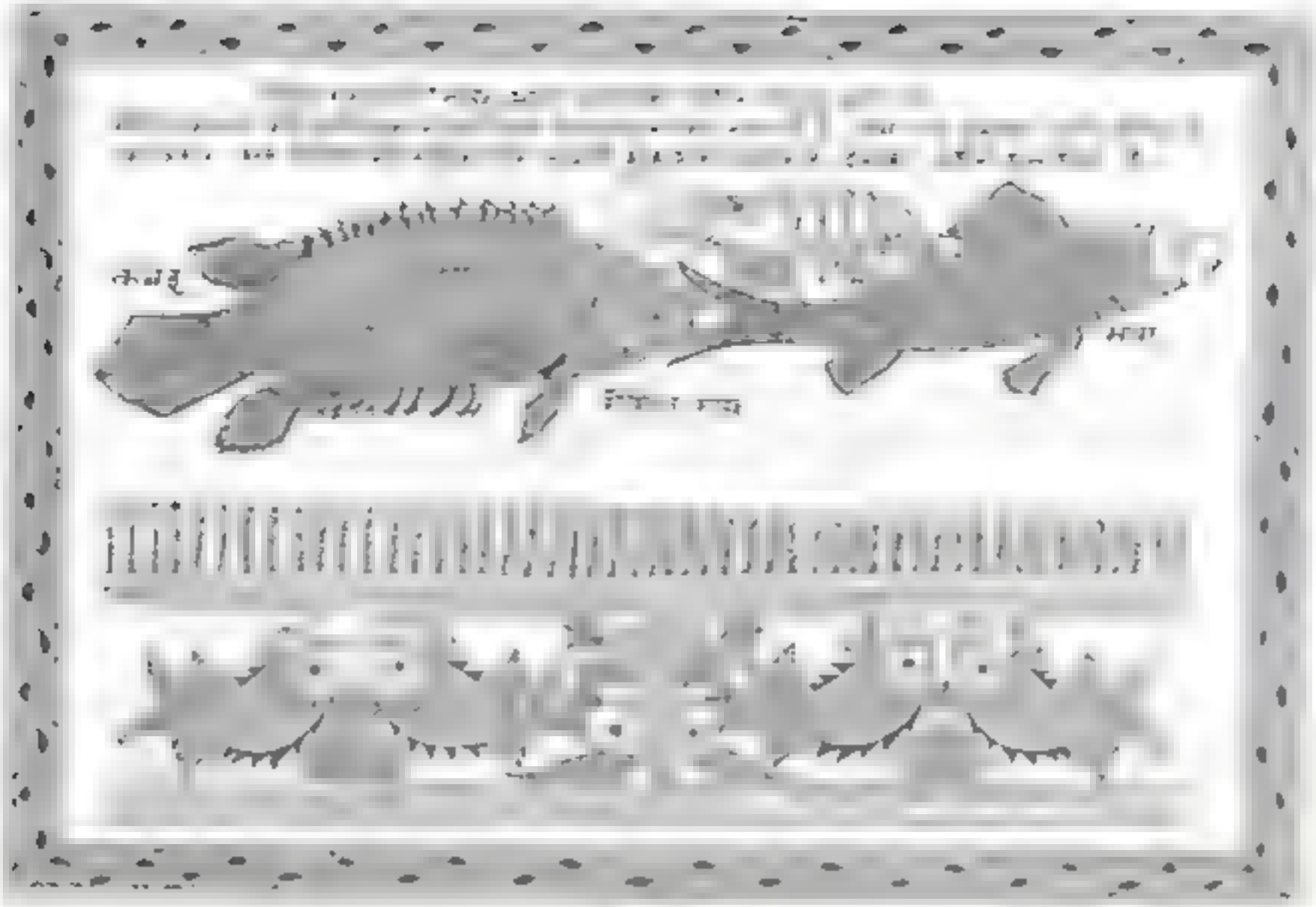

मैथिल समाजमें भिन्न भिन्न मछलियाँ सामाजिक स्तरकी पहचानके रूपमें भी स्थात हैं —

टेंगरा पोठी चाल दिए
रोहू सिर पर दण्ड !

मिथिलाकी मछलियोंमें टेंगरा पोठी - चन्ना सेसरा - मरवा - सिंगरा गरइ - गरचुन्नी जैसी छोटी मछलियोंका बड़ा स्थान है जो किसी सामन्ती समाजमें दलित वर्गोंकी इसके विपरीत रोहू मछली अभिजात्य वर्गका प्रतीक है जिस तालाबमें रोहूके साथ टेंगरा पोठी भी रहती है और धुपके, चिलचिलाहटसे ये मछलियाँ उछल कूद मचाने लगती है तो यह देखकर मछुआरे जाल फेंकते हैं और उस जालमें रोहू फँस जाती हैं बड़े मछलियाँ — रोहू के सिर दण्ड !

[illegible]

[illegible]
नाम सुधम पियूष ह्रद [illegible]

'[illegible] बना रखा है (अर्थात वे नामरूपी सुधाके [illegible] हैं, इसलिए भी उससे अलग होना नहीं चाहते)।'

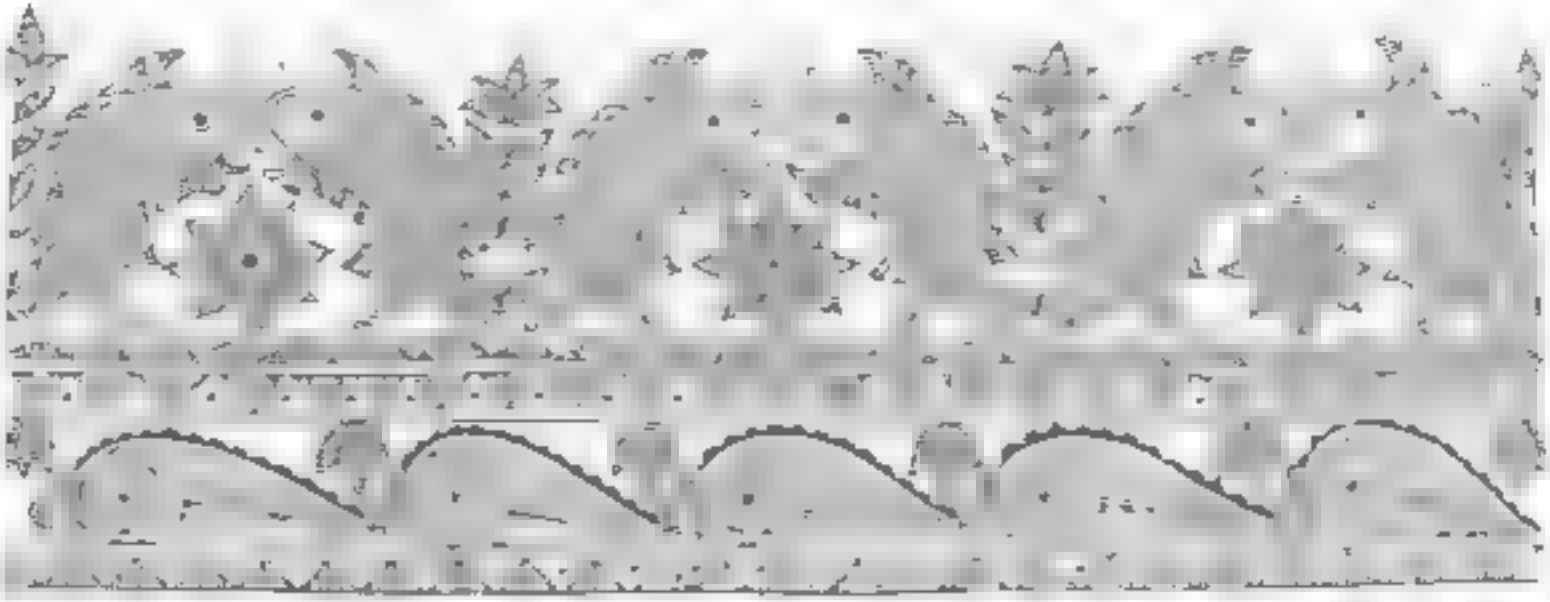

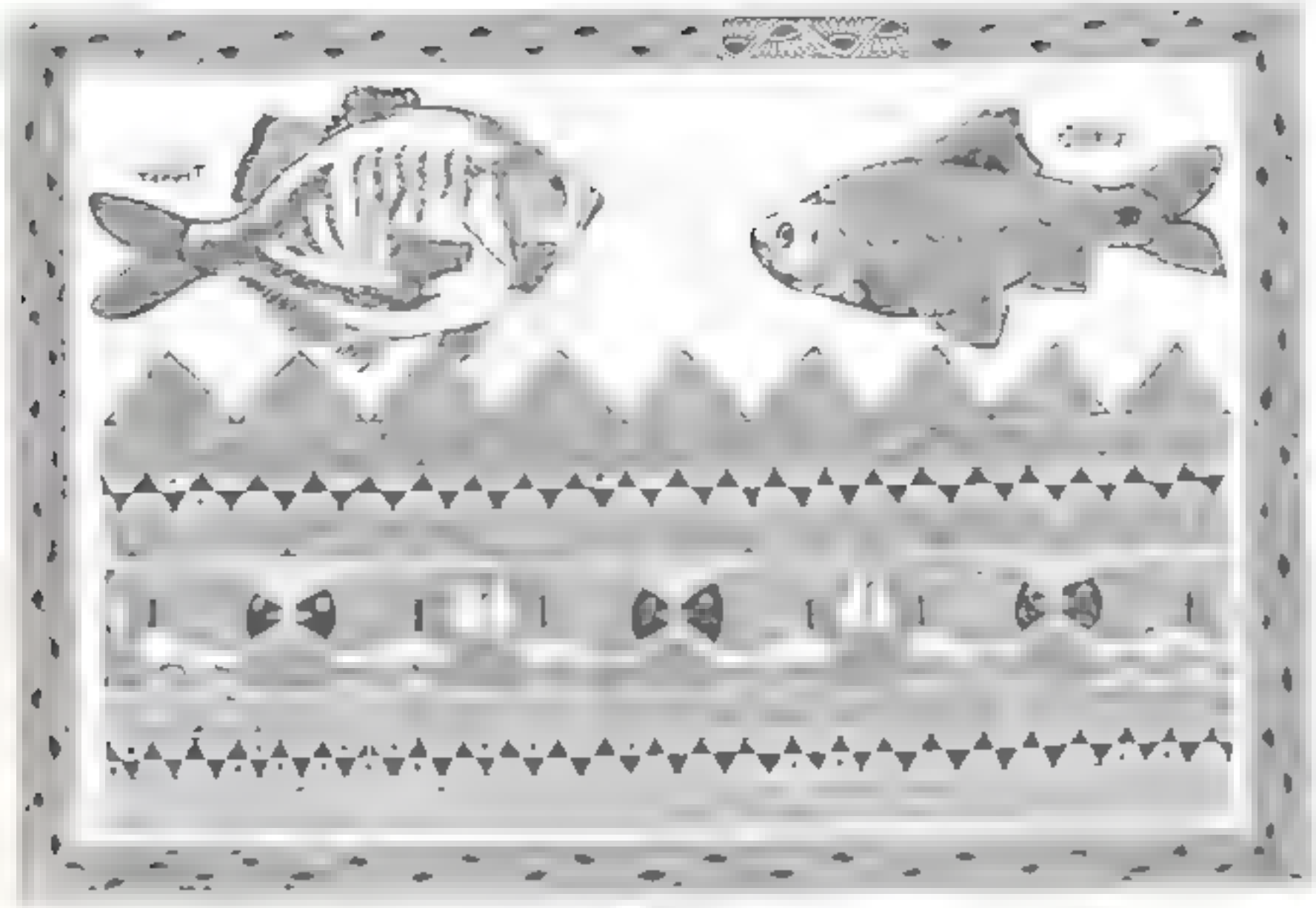

मत्स्यरूप निष्कुल [illegible]

"प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम
[illegible]।
केशव धृतमीनशरीर
जय जगदीश हरे।

हे मत्स्यावतारधारी जगदीश आपने मत्स्यावतार धारणकर वेदोंका उद्धार किया और
[illegible] पोतका कार्य किया आपकी जय हो जय हो

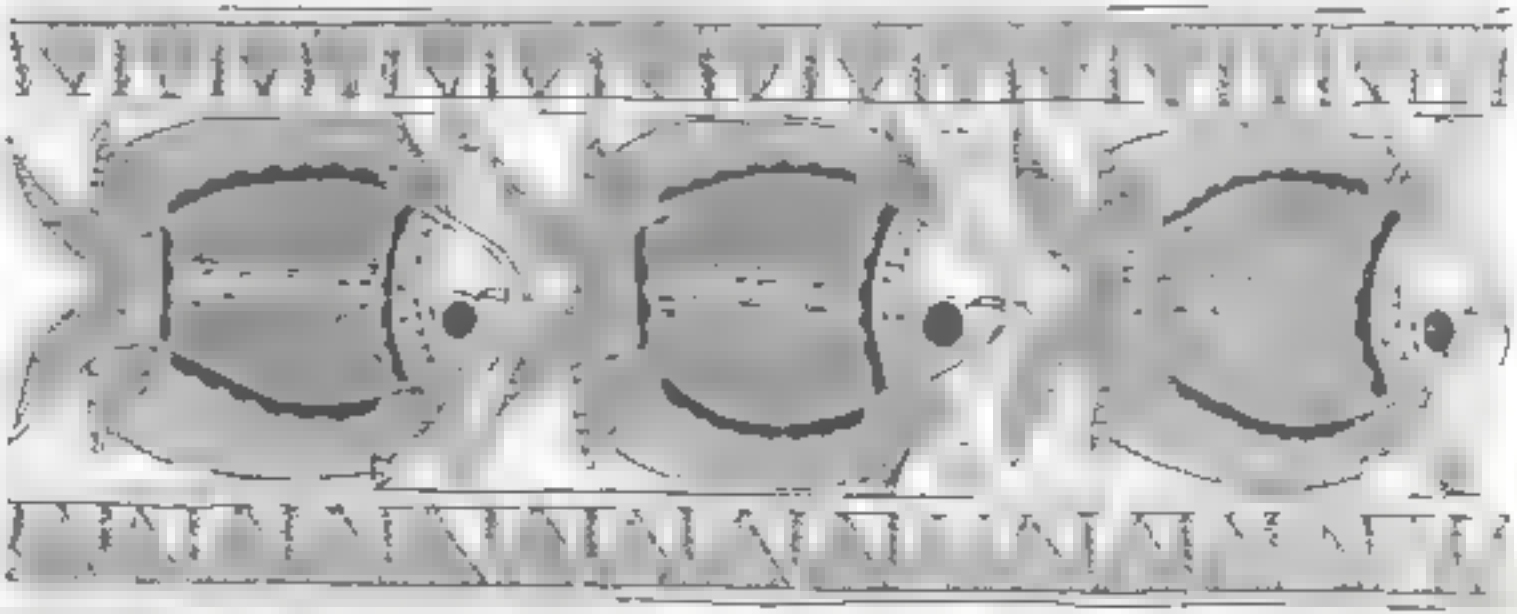

विष्णुका प्रथम अवतार मत्स्यरूप होनेके कारण मछली
वैष्णव और अवैष्णव दोनों मतावलम्बियोंमें भिन्न रूपसे आदरनीय है।

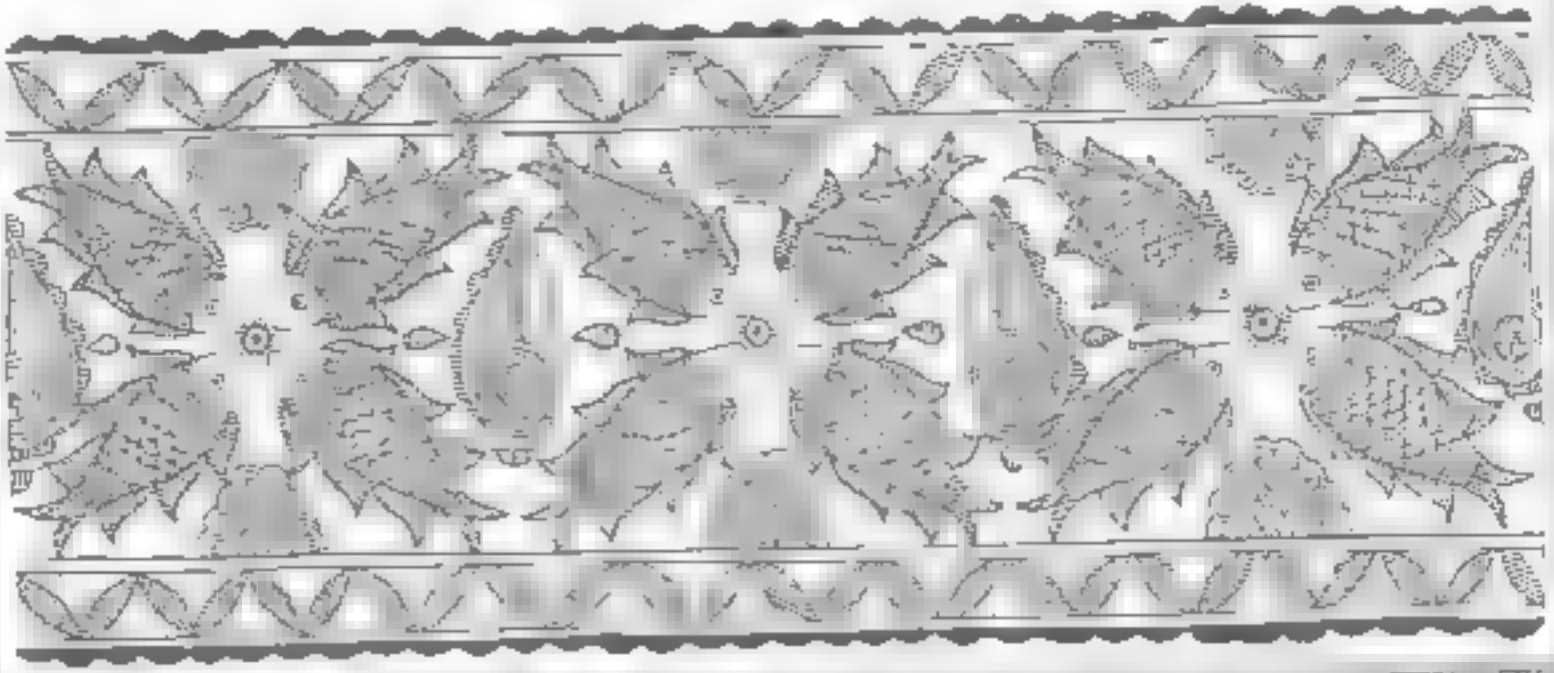

शंखकोर

मिथिलाकी गुणवती [illegible] विष्णुके प्रिय सालेके रूपमें मानती हैं।

[illegible]

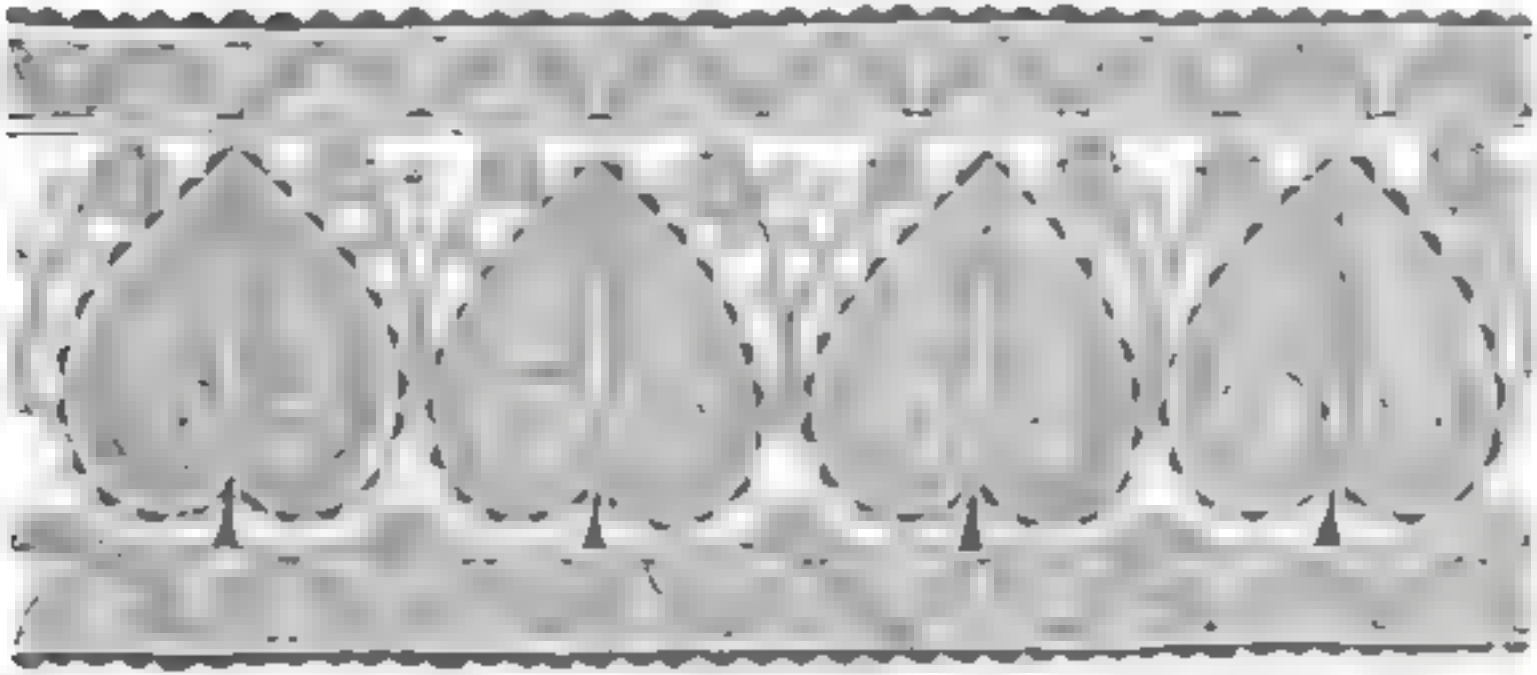

समुद्रका दो [illegible] और दो बेटे। बड़ी बेटी परम सुन्दरी और सुलक्षणी थी उसका नाम [illegible] और कुरूप भगड़ालू बेटीको लोग अलक्ष्मी कहने लगे।

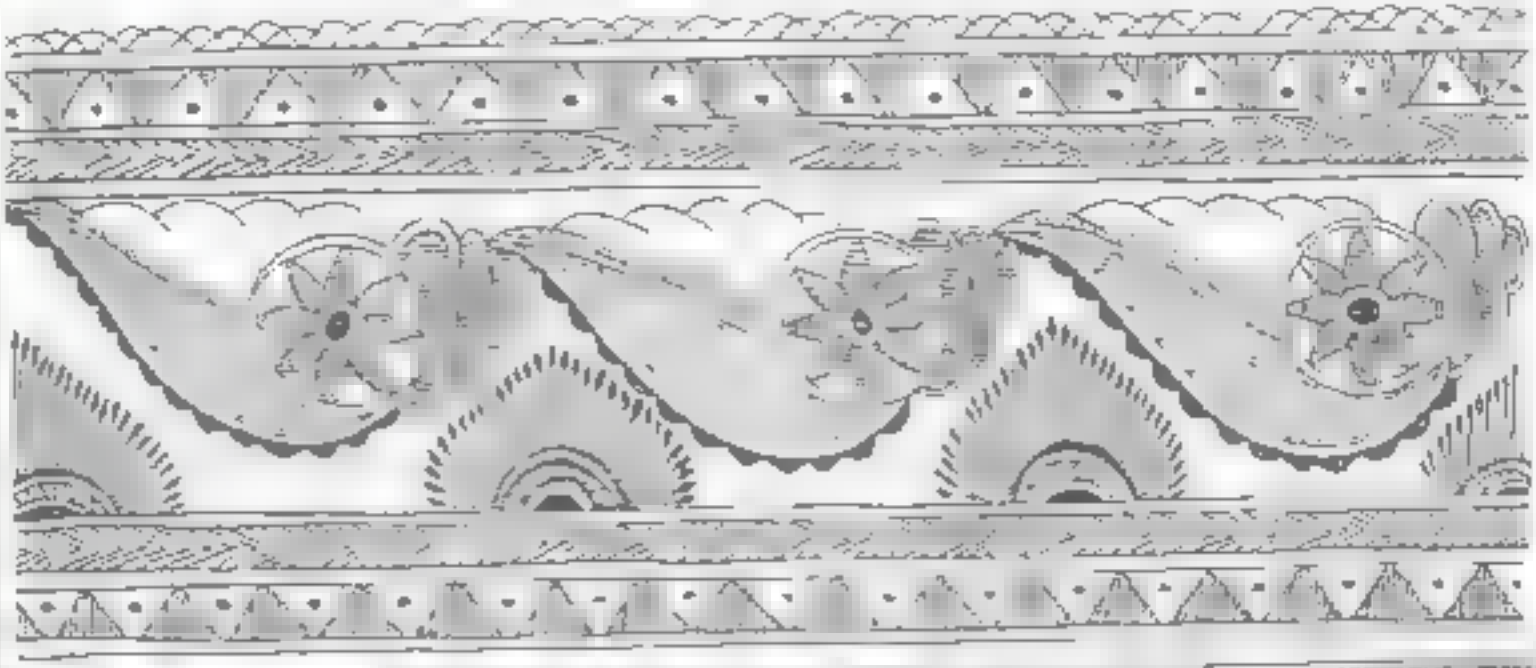

समुद्रके दो बेटे मे बड़ा बेटा शंख सिद्धनाथी, गुणवान और प्रतापी था जबकि छोटा बेटा कुविचारी और विध्वंसक था। उसका नाम हड़ाशंख था। अपने गुण, स्वभाव और सुप्रवृत्तिके कारण लक्ष्मी और शंखमे बहुत मेल था, लेकिन दुष्ट स्वभाववाले अलक्ष्मी और हड़ाशंख उन्हे हमेशा तंग करते थे।

एक बार हड़शंखने लोभमे पड़कर दानवकुलके अति धनाढ्य किन्तु कुरूप और दुर्व्यसनी कुबेरके हाथ लक्ष्मीको बेच दिया। बहुत मुश्किलसे शंखने कुबेरके भोग महलसे लक्ष्मीको मुक्त कराया और विष्णुके आग्रहको मानकर लक्ष्मीका विवाह विष्णुसे कराया।

विवाहके बाद विष्णु जब विदाई कराकर लहरीको वैकुण्ठ
ले जाने लगे तब अपनी प्रिय सखीसे विछोहको याद सोचकर समुद्रके
सभी प्राणी दुखी हो गए। मछलियाँ धाड़ें मारकर रोने लगीं, सीपियाँ सुबक सुबककर
मोती गिराने लगीं, सेवार पछाड़ खाकर कुम्हलाने लगी और जन्म-जन्मकी
संगवाहिनी लहरोंने बहना छोड़ दिया आखिर समुद्र समाजके सभी जीव
जन्तुओंने तट तक आकर लक्ष्मीको विदाई दे अपनी प्यारी बहनको
उत्ताल तरंगोंकी डोलीमें बिठाकर विष्णुके संग शंख उन्हें वैकुण्ठ ले गया।

लक्ष्मीको उसके ससुराल वैकुण्ठ पहुँचाकर शंख वापस नहीं लौटा बल्कि प्रेमवश अपनी बहन और बहनोईके मोहमें ऐसे बँध गया कि उसे धन सम्पदाके अनन्त अक्षय भाण्डारवाले समुद्रके राज्यका लाभ भी नहीं लुभा सका भाई-बहनके अद्भुत प्रेमका अनुभवकर विष्णु भाव-विह्वल हो गए और सर्वोपरि आदरके साथ शंखको अपनी शक्ति बनाकर अपने हाथमें धारण कर लिया।

शंखाकार

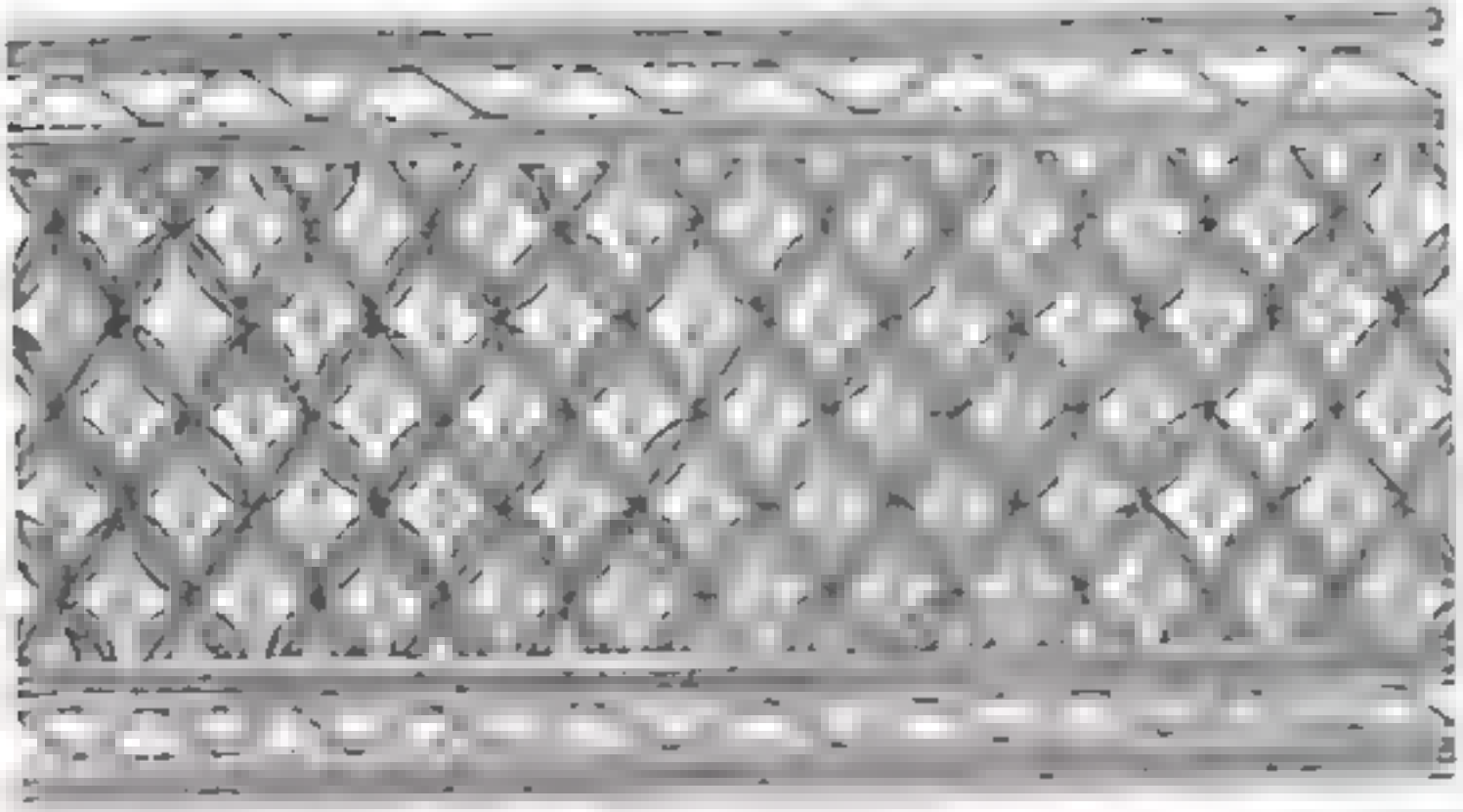

शंख जहाँ भी कहीं जाता है
लक्ष्मी अपने भाईको ढूँढते ढूँढते
वहाँ अवश्य जाती है। इस कारण
शंखको नित्य-लक्ष्मीका प्रतीक कहा गया है

चौगुण शंख

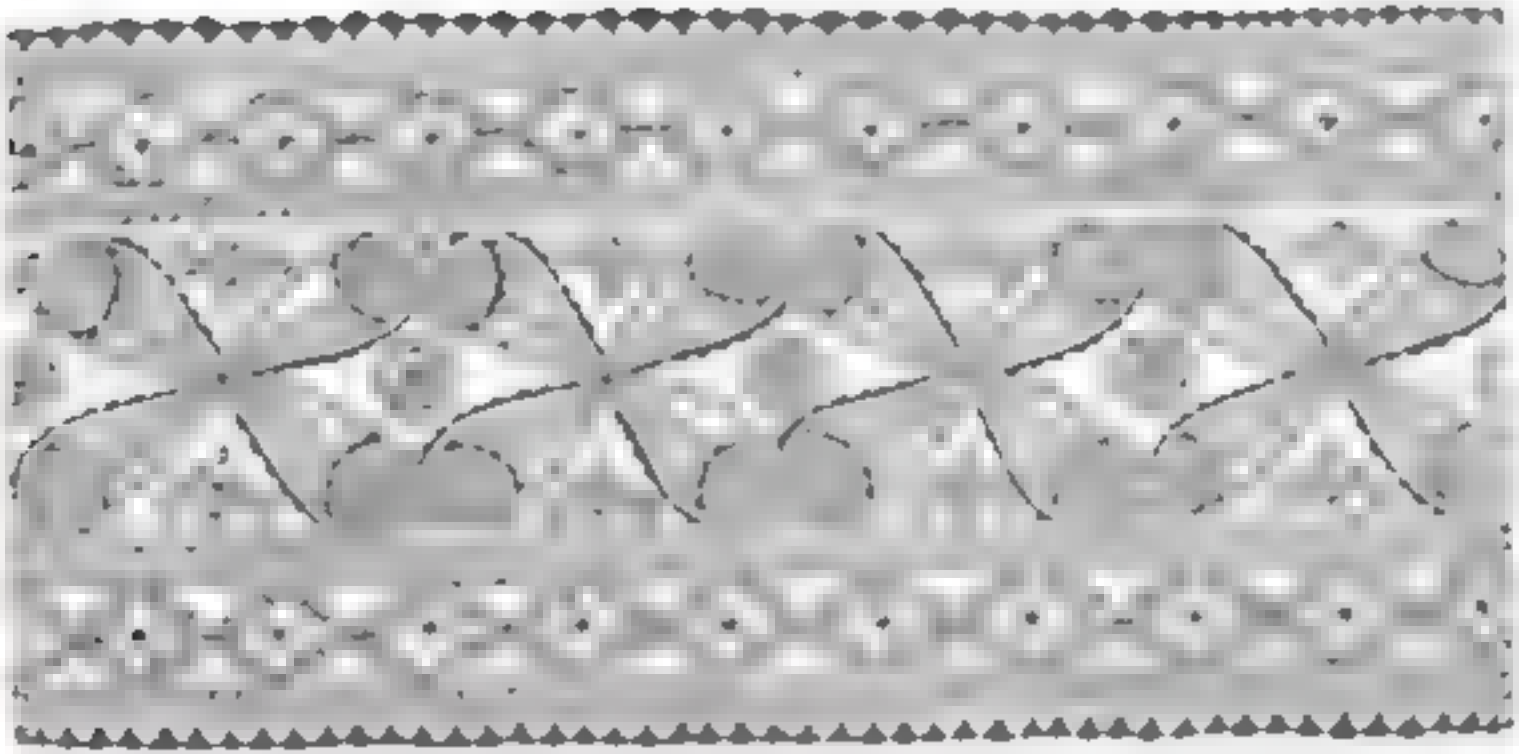

नैमिषारण्यमें तपस्या लीन मनु-शतरूपाको श्रीरामने दर्शन दिए —

सरद मयंक बदन छबि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा।
अधर अरुन रद सुंदर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा॥

— श्रीरामचरितमानस —

"श्रीरामका मुख शरद चन्द्रके समान छविकी सीमास्वरूप था। गाल और ठोड़ी बहुत सुन्दर थे, गला शङ्खके समान (त्रिरेखायुक्त, चढ़ाव उतारवाला) था, लाल ओठ, दाँत और नाक अत्यन्त सुन्दर थे, हँसी चन्द्रमाकी किरणोंको लजानेवाली थी।"

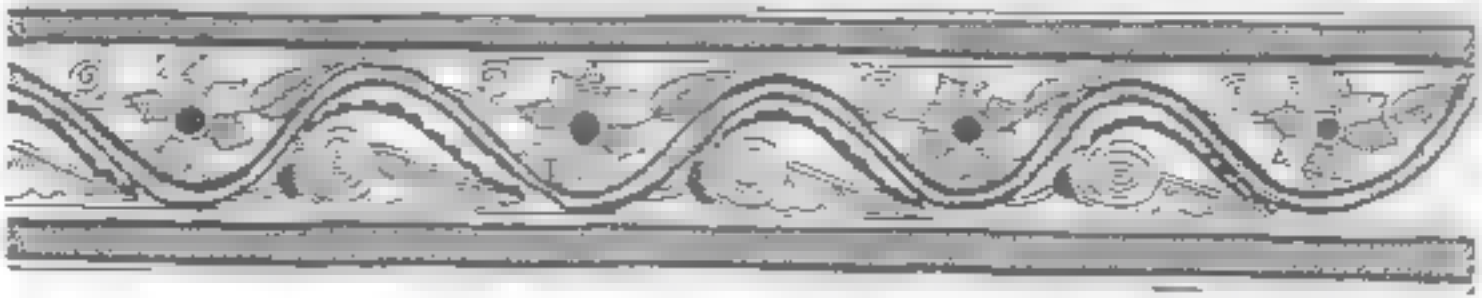

कहते हैं, शंख-ध्वनि विपत्तिका नाशक है

शंख बाजे, बला भागे

स्वस्तिक कोर

स्वस्तिक चिह्नका प्रयोग यद्यपि कि [illegible] यूरोप में प्रचलित है और भारतमें अन्य सामाजिक, धार्मिक [illegible] कार्यों में [illegible] किन्तु मिथिला समाजमें इसका व्यापक प्रयोग है। इसका प्रयोग संस्कारमें [illegible] शुभ और [illegible] लिए किया जाता है। इस मान्यता है कि इसके मंत्र जप प्रेम के हृदय और मन को मिलानेवाले हैं। गृह निर्माण के समय, नए [illegible] के [illegible] हवनमें यज्ञ [illegible] मंत्रोच्चार यात्रा प्रारम्भ करते समय, व्यापारमें [illegible] दीपक आदि [illegible] स्वस्तिक मंत्र या प्रतीकका उपयोग परम्पराप्राप्त है।

मिथिला चित्रमें स्वस्तिक प्रतीक को [illegible] और उनका दो स्त्रियां (सिद्धि और बुद्धि का समन्वित रूप माना गया है।

इसके [illegible] स्वस्तिकको 'लक्ष्मी-गणेश' का रूप और समृद्धिका मार्ग [illegible] 'सौभाग्य स्वस्तिक' कहा गया है

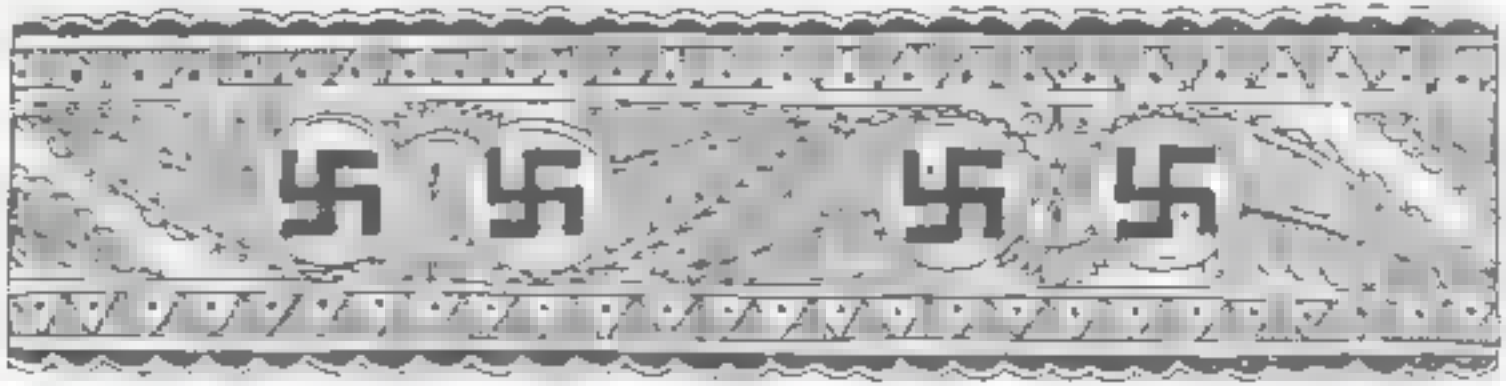

शंख वाटिका

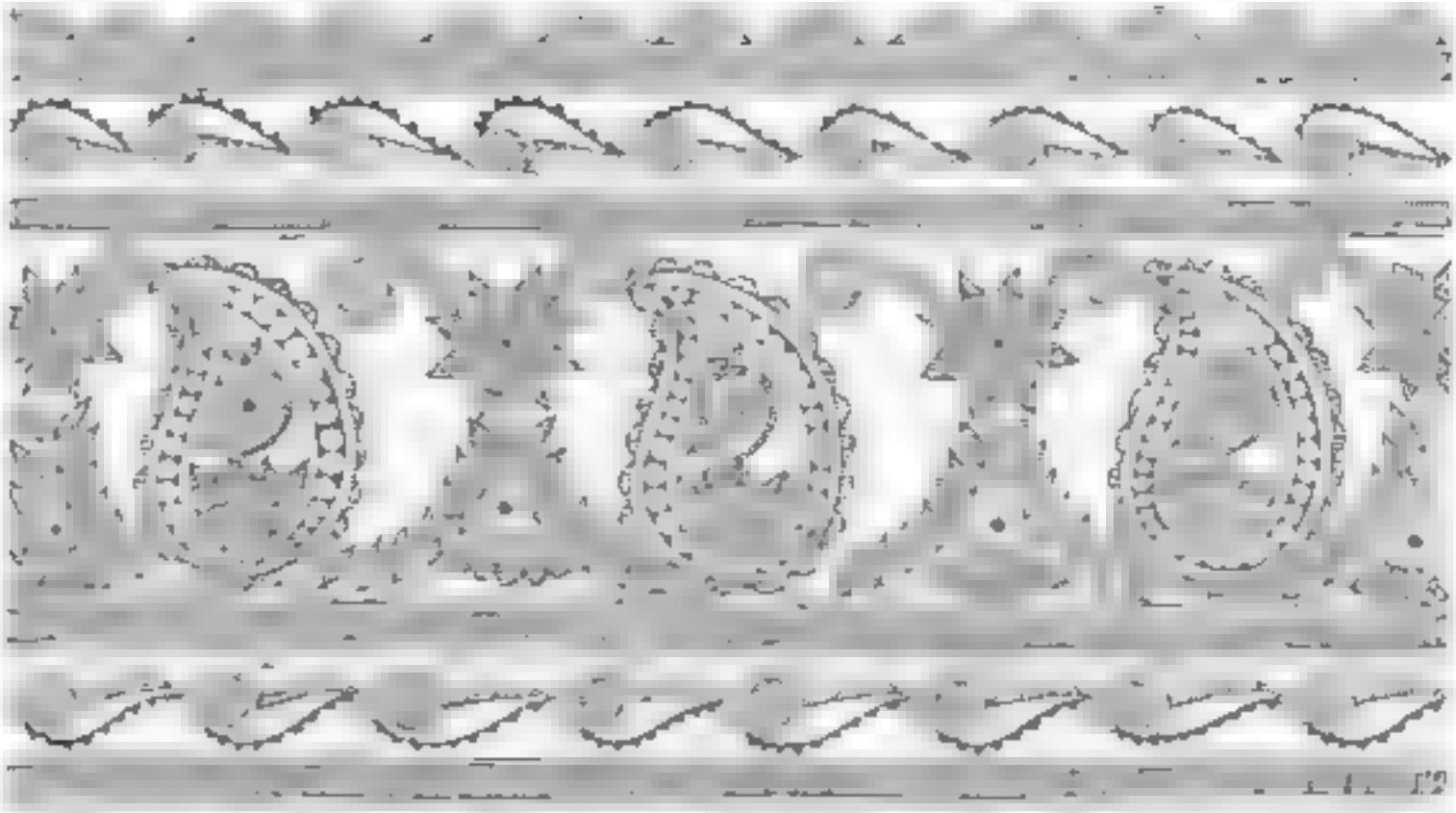

सुग्गाकोर

सुग्गा मानें होता है एक तोता सुन्दर पक्षी।

प्रेम और सुन्दरताके देवता कामदेवके मुकुटमें वास होनेके कारण शुक या पक्षी सहज आंगिक प्रेमका प्रतीक है।

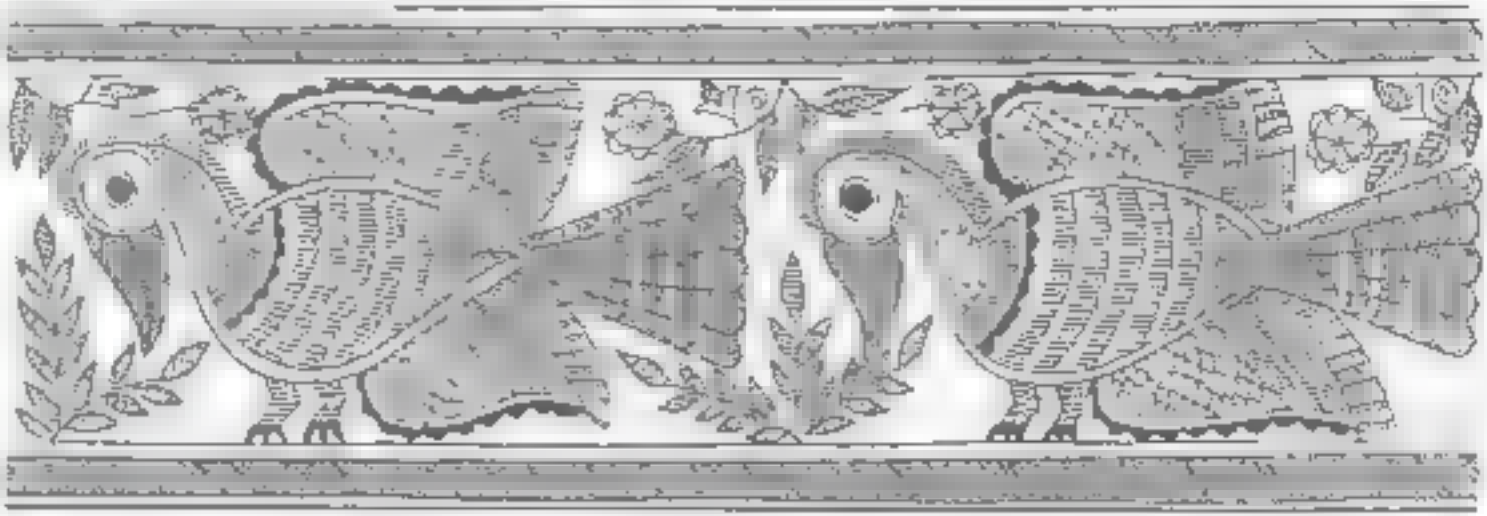

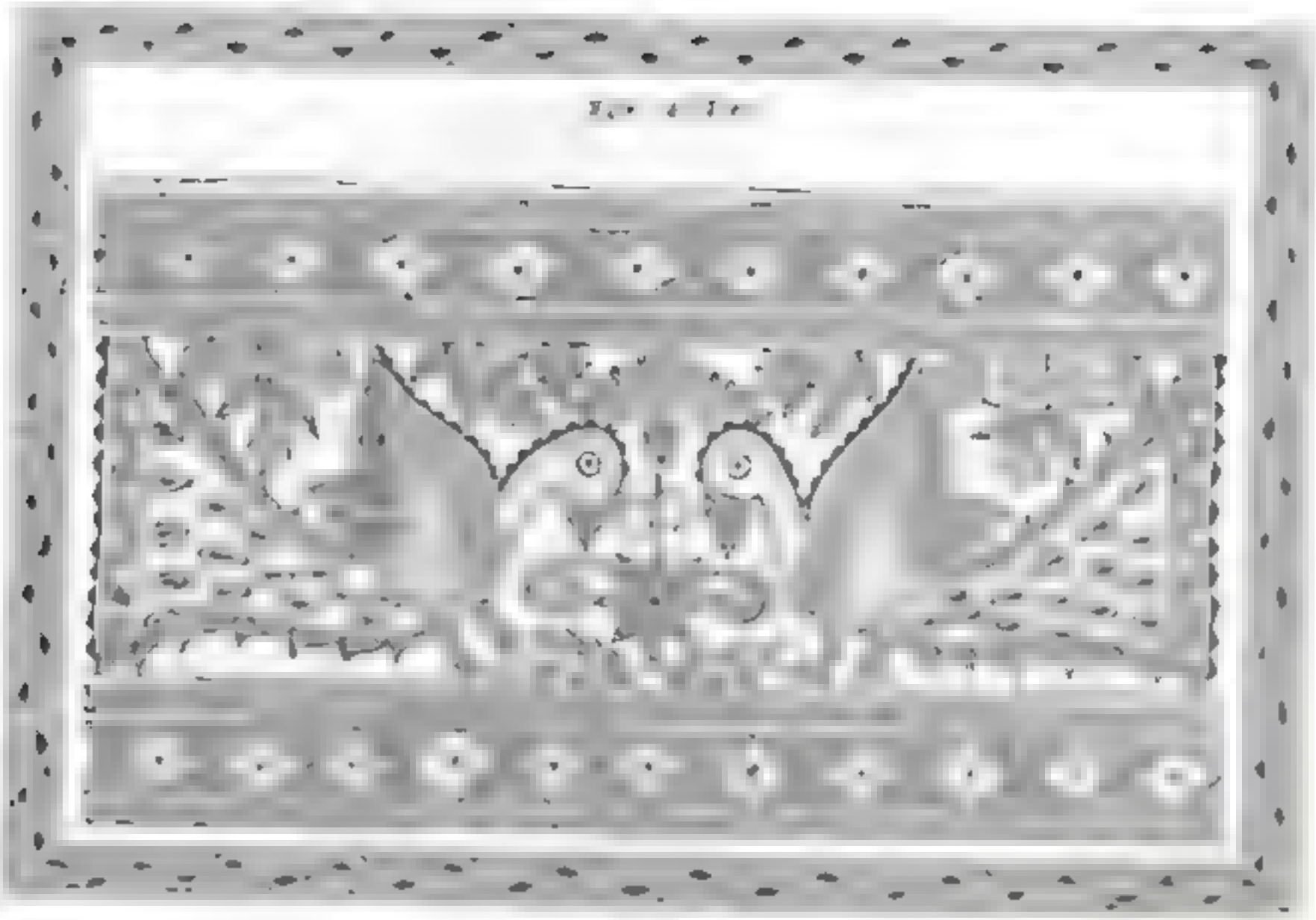

अर्थ्यये ५"
-(इन्द्र नारायण)

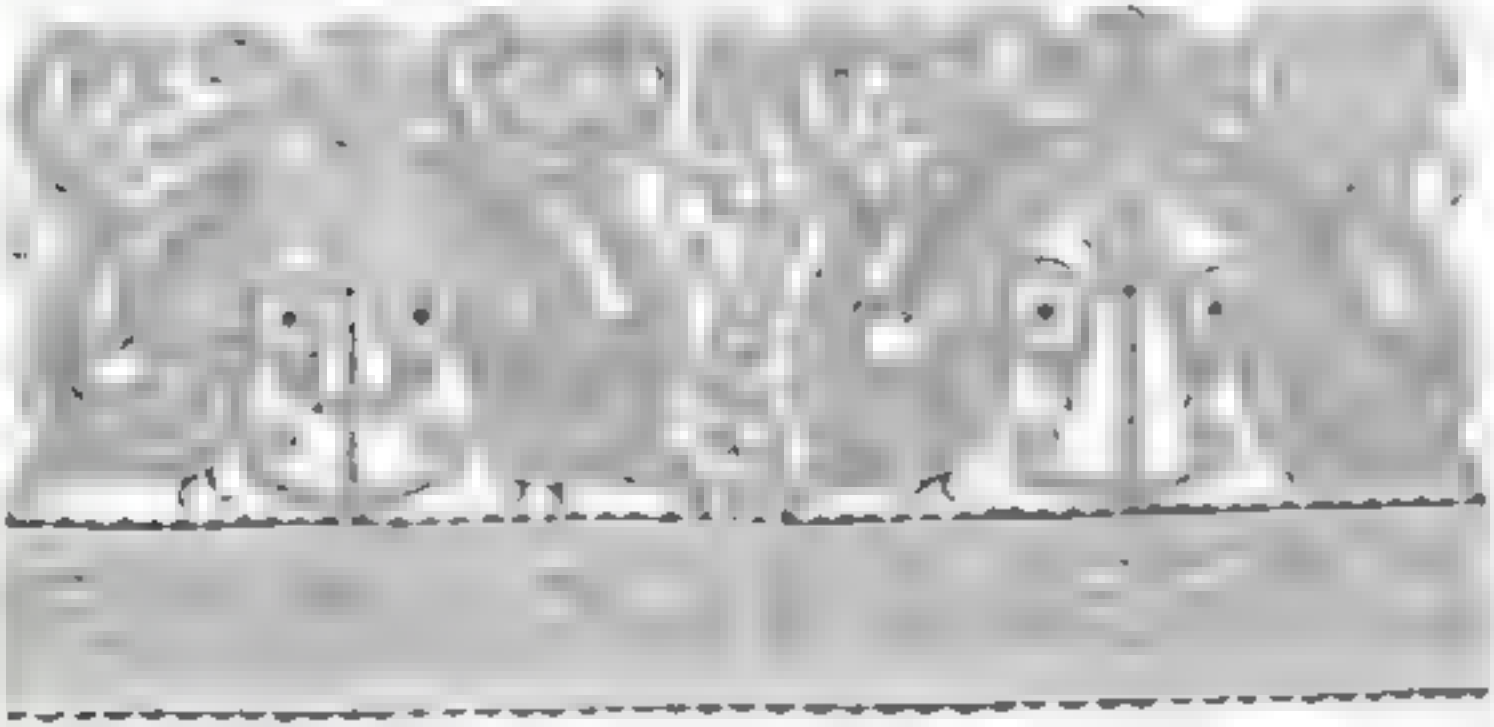

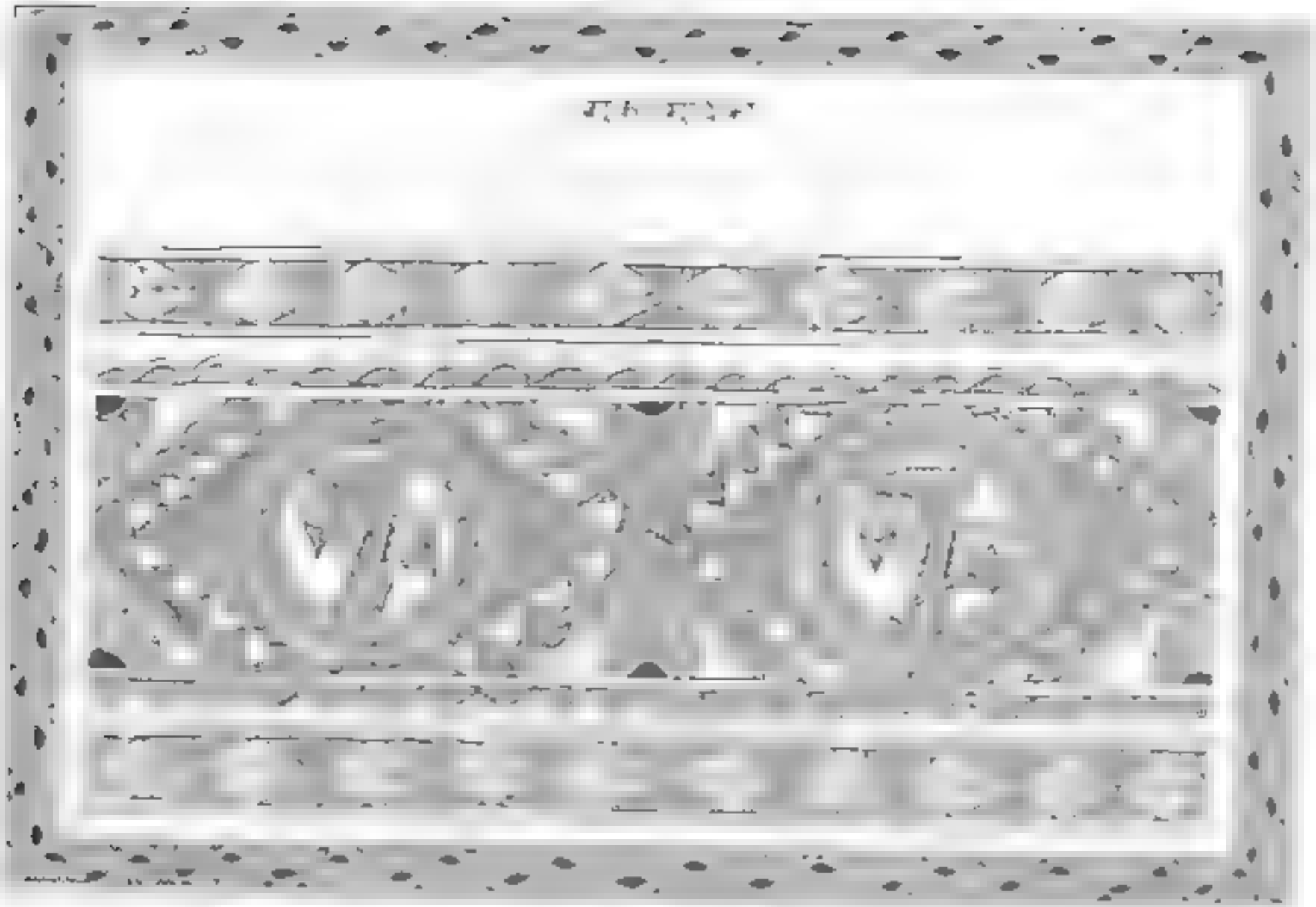

मैथिली लोकगीतोंमें कोइलीको मदालसा स्त्रियोंकी नींदको वैरी "काली सौतन" कहा गया है —

सौतिनिया कारी कोइलिया
सूतल पिया के जगावे ।

आन दिन बोले कोइली
भोर - भिनसरवा ,
आज काहे बोल अधरतिया
कोइलिया सूतल पिया के जगावे

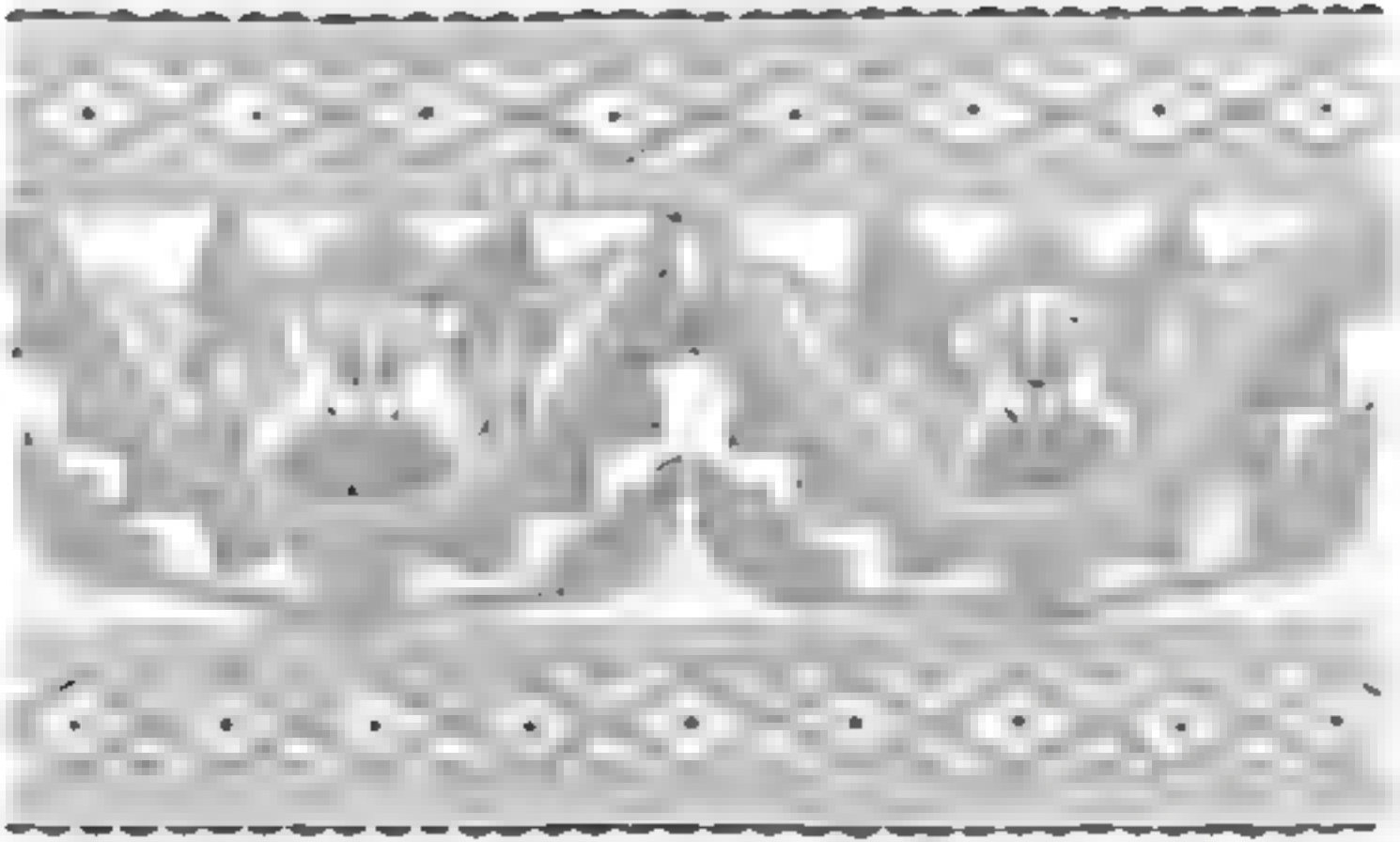

विद्यापतिके गीतोंमे कौएको संवाद-वाहक शकुन पक्षी कहा गया है

मोर रे अंगनमा चंदन केर गछिया
ताहि चढ़ि कुहरय कागरे,
सोना के चोंच मढ़ाए देबउ कागा
जौं पहु आयत हमार रे।

(विद्यापति)

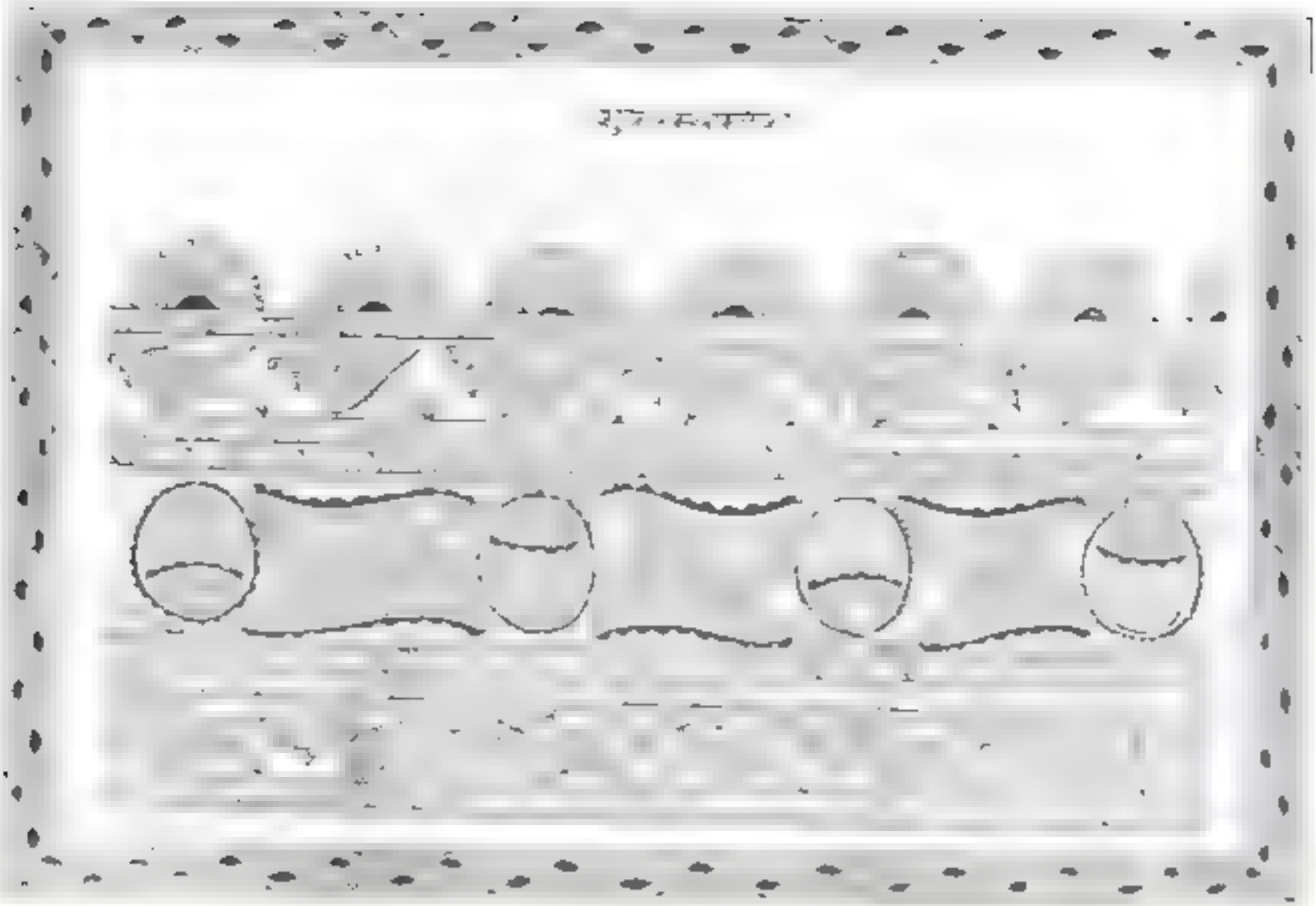

विरहिणी नायिकाकी कोकिलके मधुर बोल चिढ़ाते से लगते हैं -

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि, मूँदे रहु दुनौ नयान
कोकिल कलरव मधुकर धुनि सुनि, कर लेय मोपय कान ।

(विद्यापति) ।

वनकी कुसुमित सुरभित देखकर विरहिणी कमलमुखी नायिकाने अपने दोनों नेत्र मूँद लिए, कोकिलके सुंदर बोल और भ्रमरके गुंजारकी ध्वनि सुनकर उसने अपने हाथसे दोनों कानोंको मूँद लिया ।

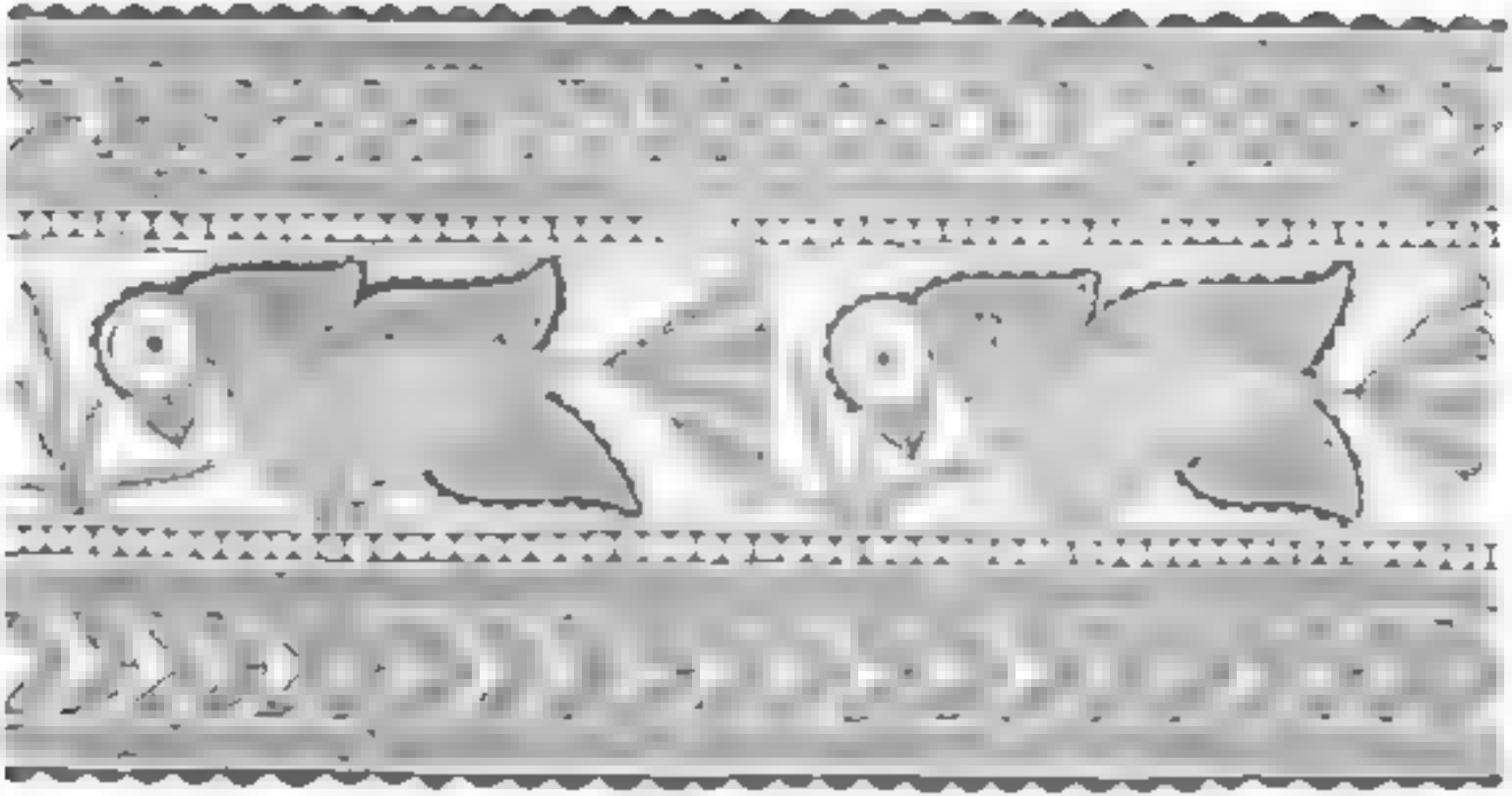

विद्यापतिजी [illegible]
निरुपाय हो जाते हैं

नयन-नलिन दुइ अंजन रंजि
भौंह बिभंग-बिलासा ।
चकित चकोर-जँए जिहि बाँधल
केवल काजर पासा ॥

(विद्यापति) ।

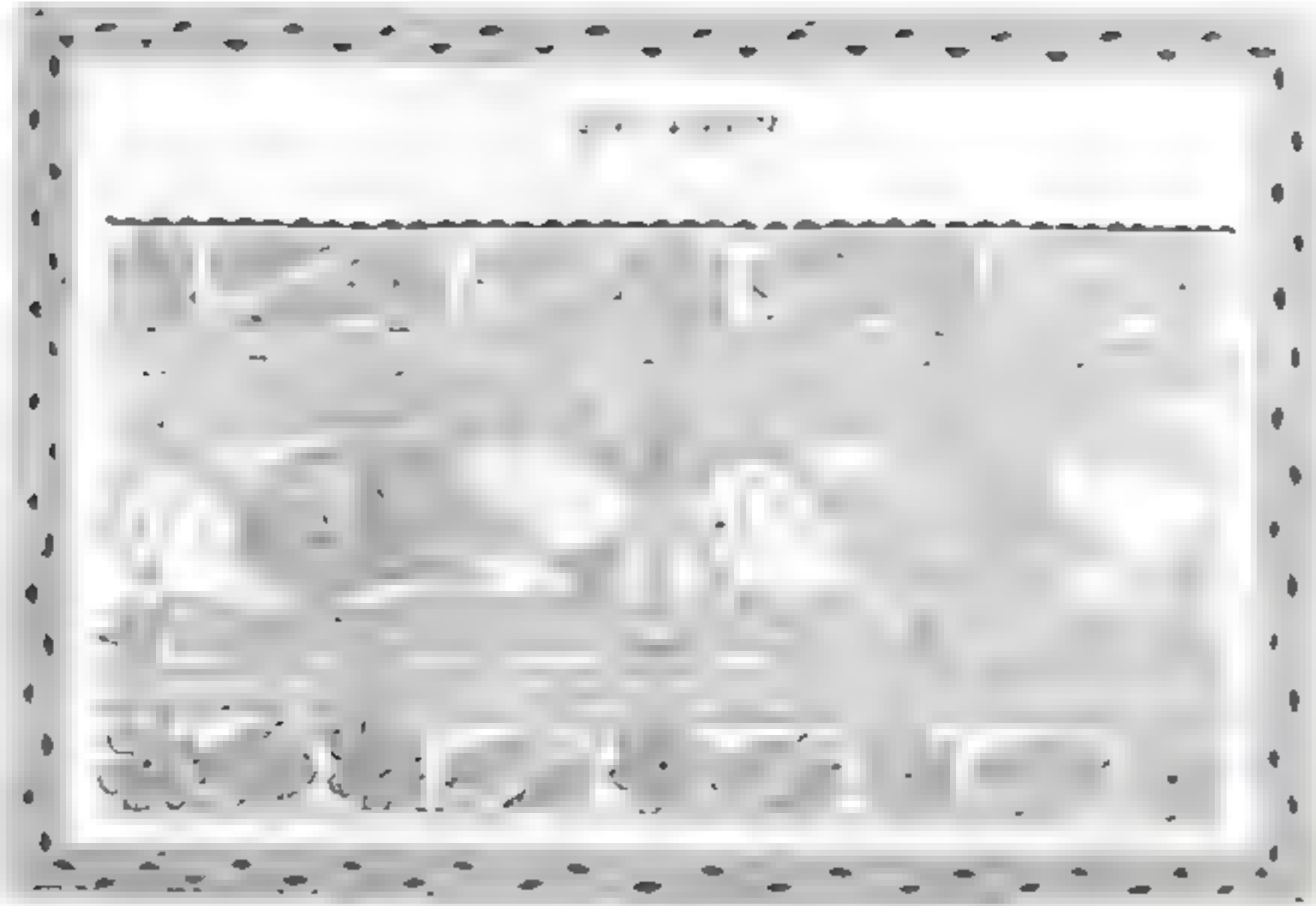

[illegible]

"[illegible]
[illegible]
तें संकारैं भुज पासैं
बाँधि चंचल उड़ि जाएत अकासैं ॥"

(विद्यापति)।

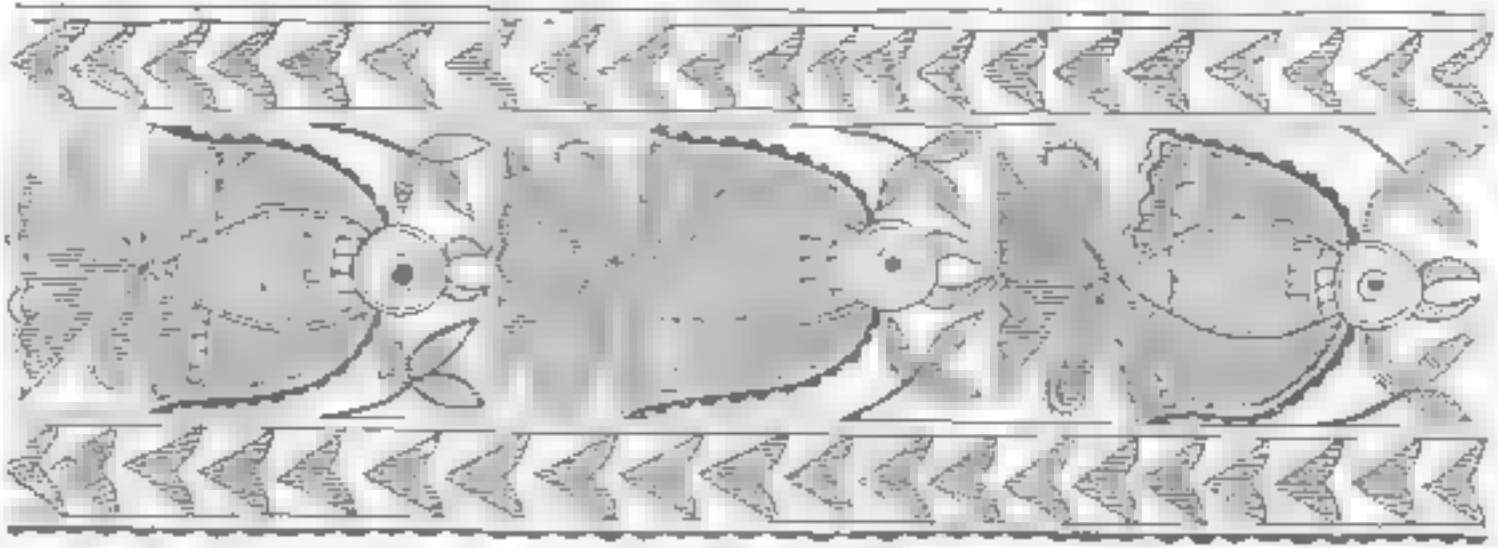

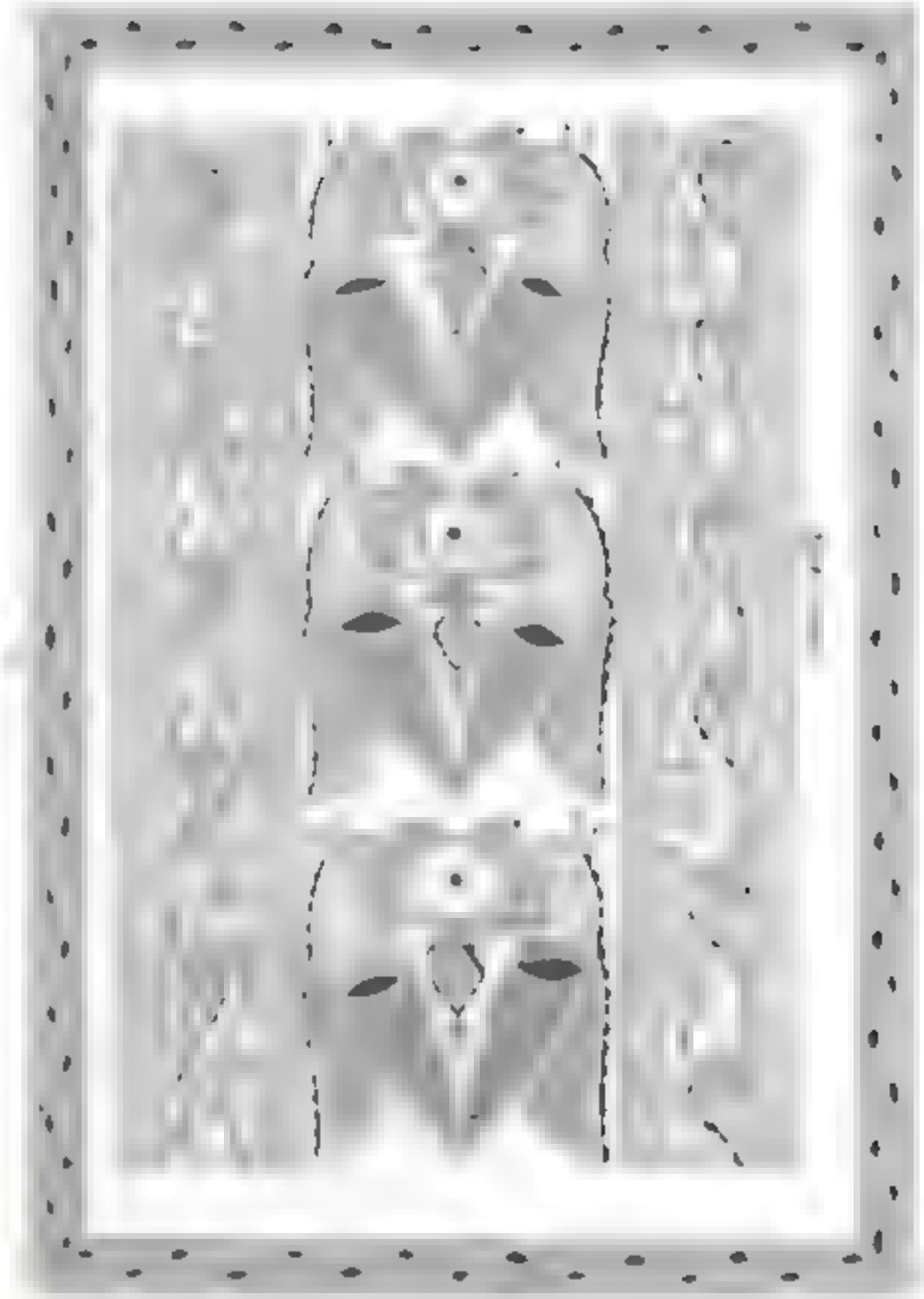

वनस्पती

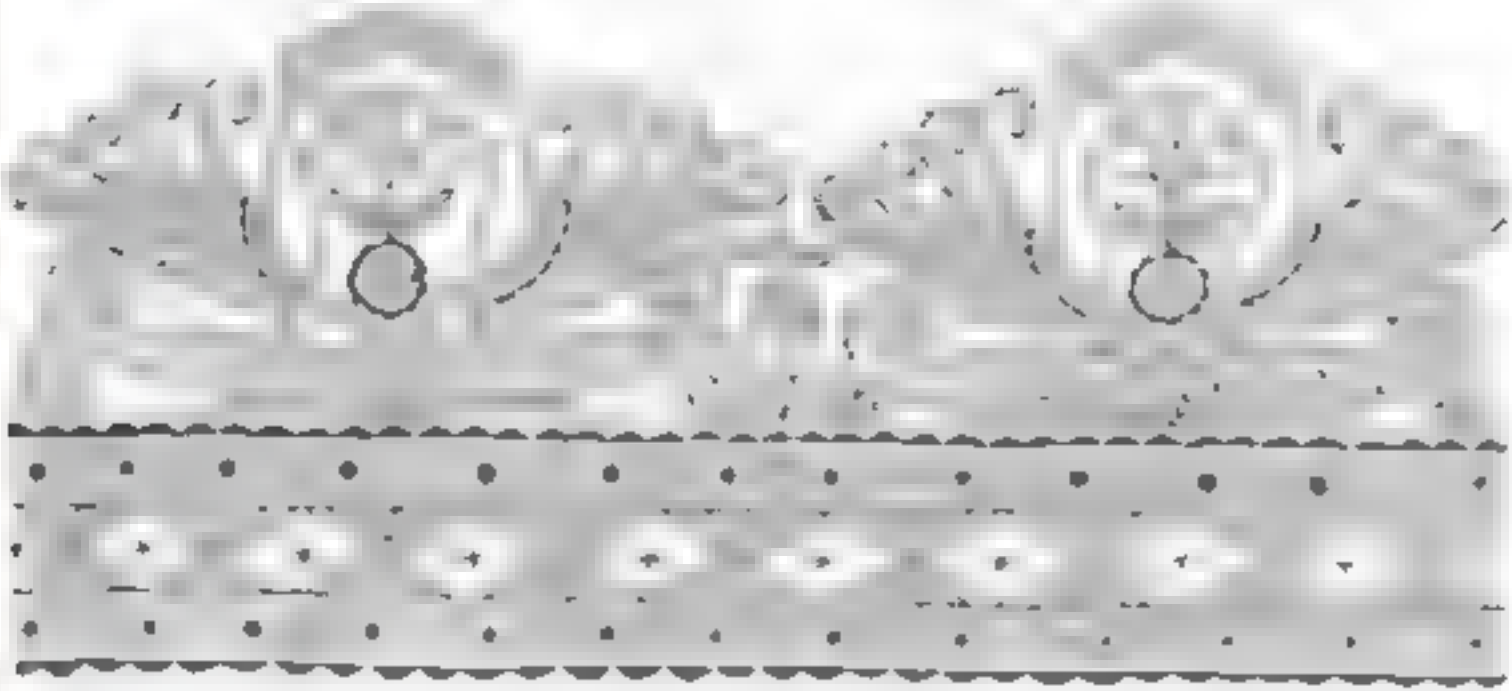

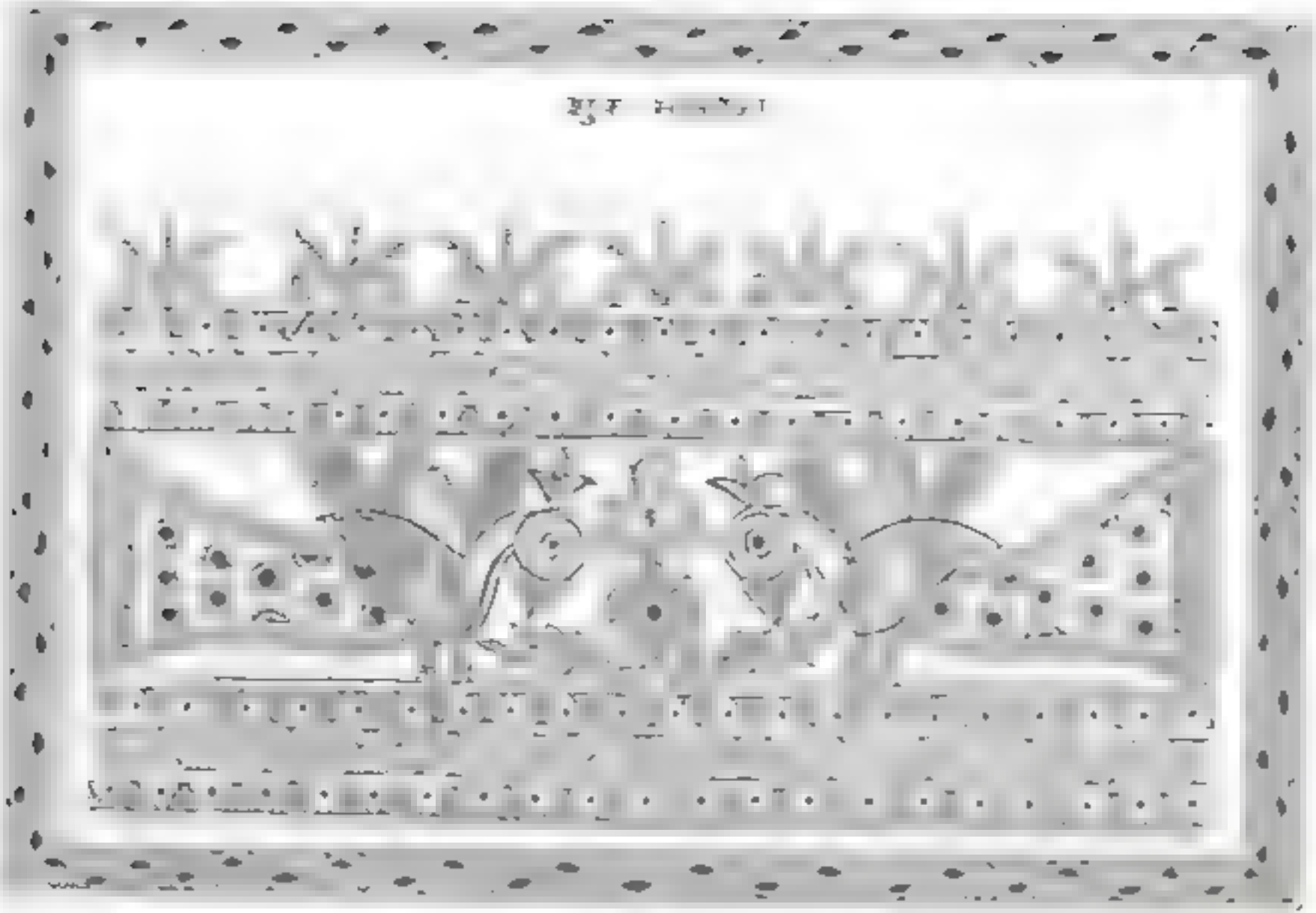

लटपटिया सुग्गा

लटपटिया माने [illegible] है लिपटनेवाला या [illegible] कोबरघरका अनिवार्य चित्र है यह सुग्गा। शुक और [illegible] के मिथुनरत इस जोड़ेको वृत्ताकार प्रदर्शित किया जाता है इस अभिव्यक्तिका निहितार्थ यह है कि धर्मके द्वारा स्वीकृत भोगका मैथुन [illegible] निरन्तर चलती रहे, अनाहत।

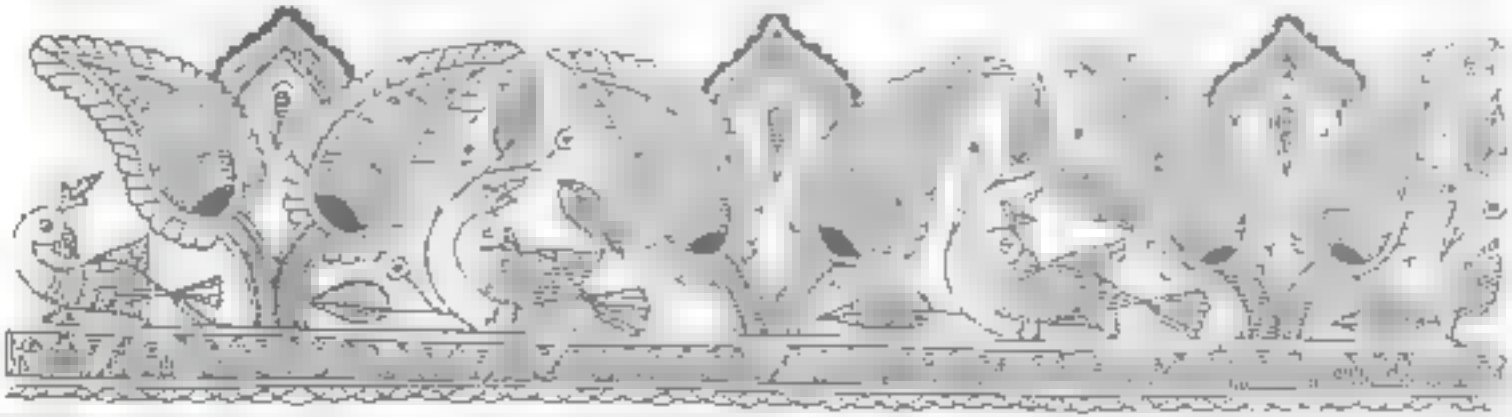

लटपटेया सुग्गा

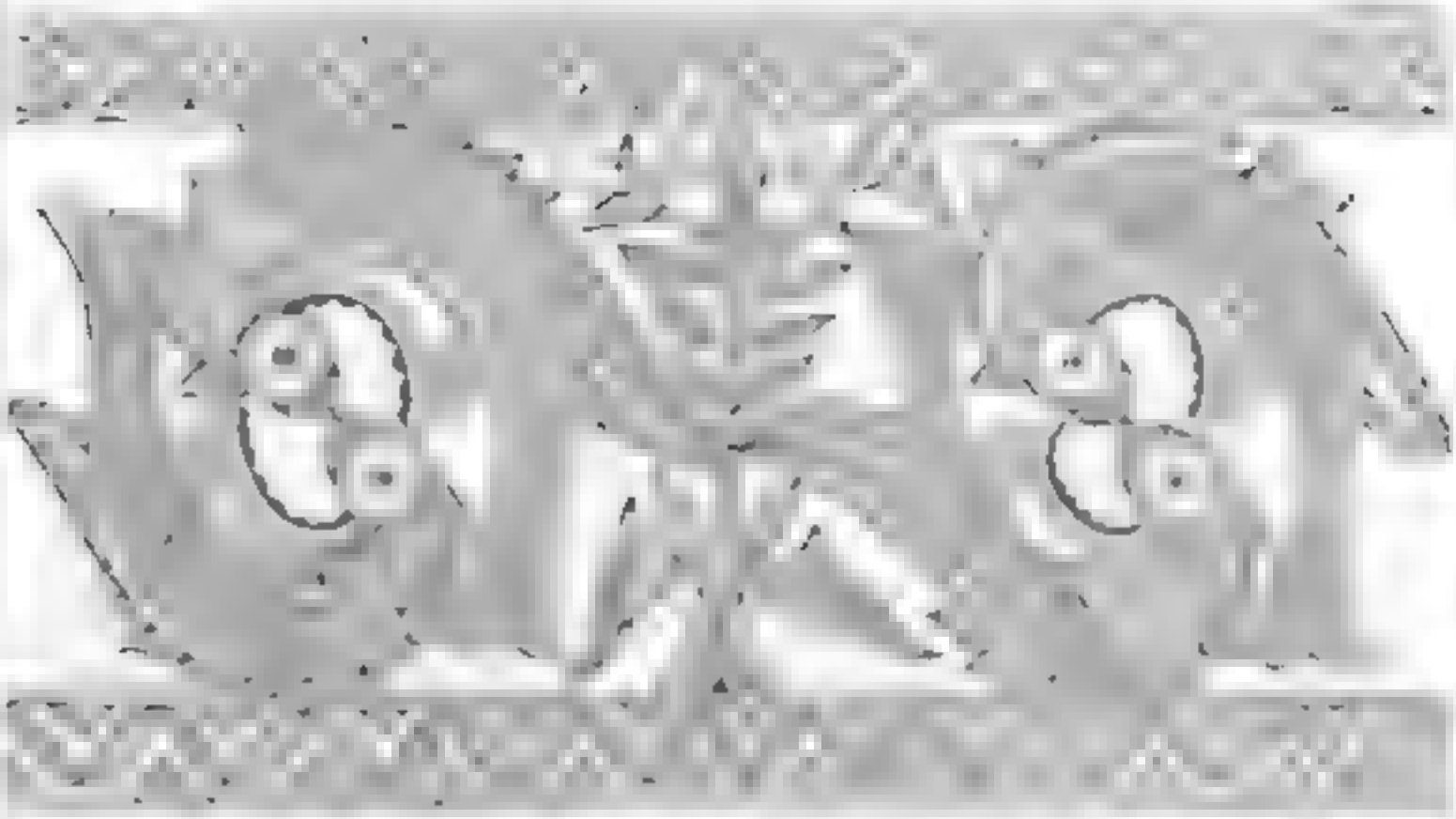

विधि-विधाता

विधि विधाता कपालस्थ दग्ध दर्पण है जो नवजात शिशुके भाग्य लिखते हैं।

"बिधना लिखन मेटन नहिं जाय"।

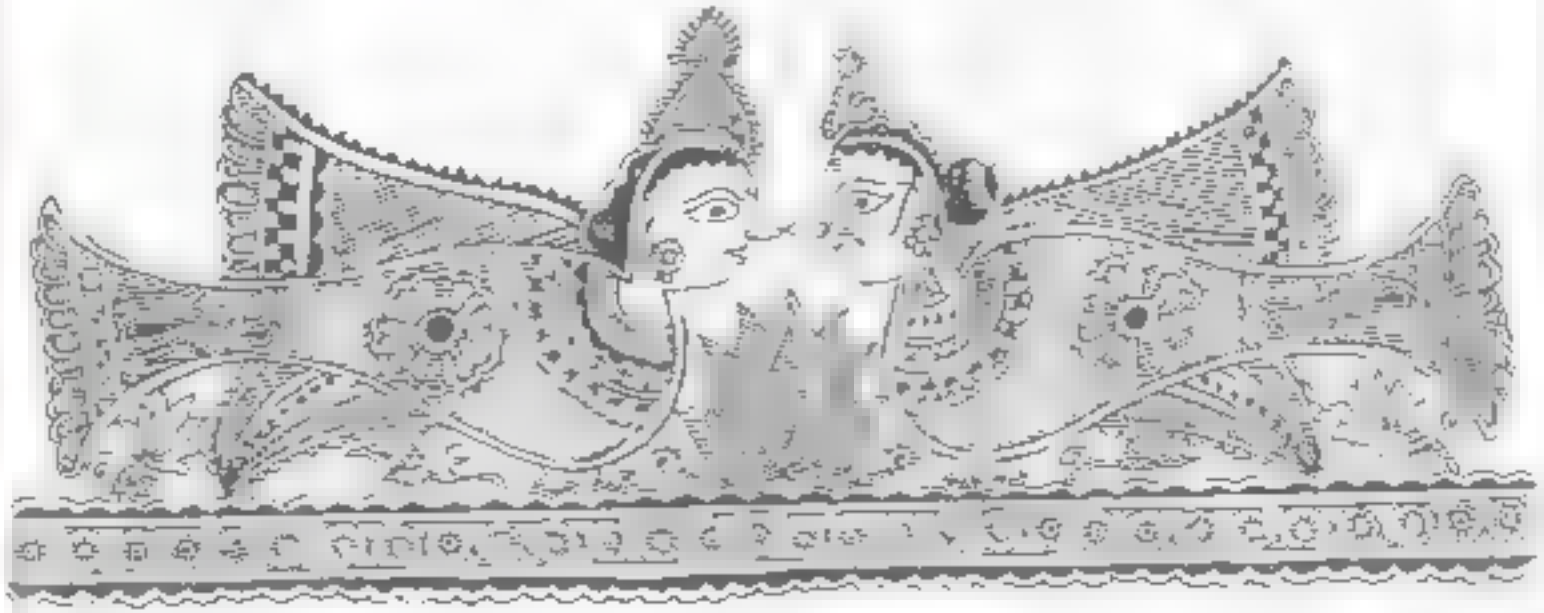

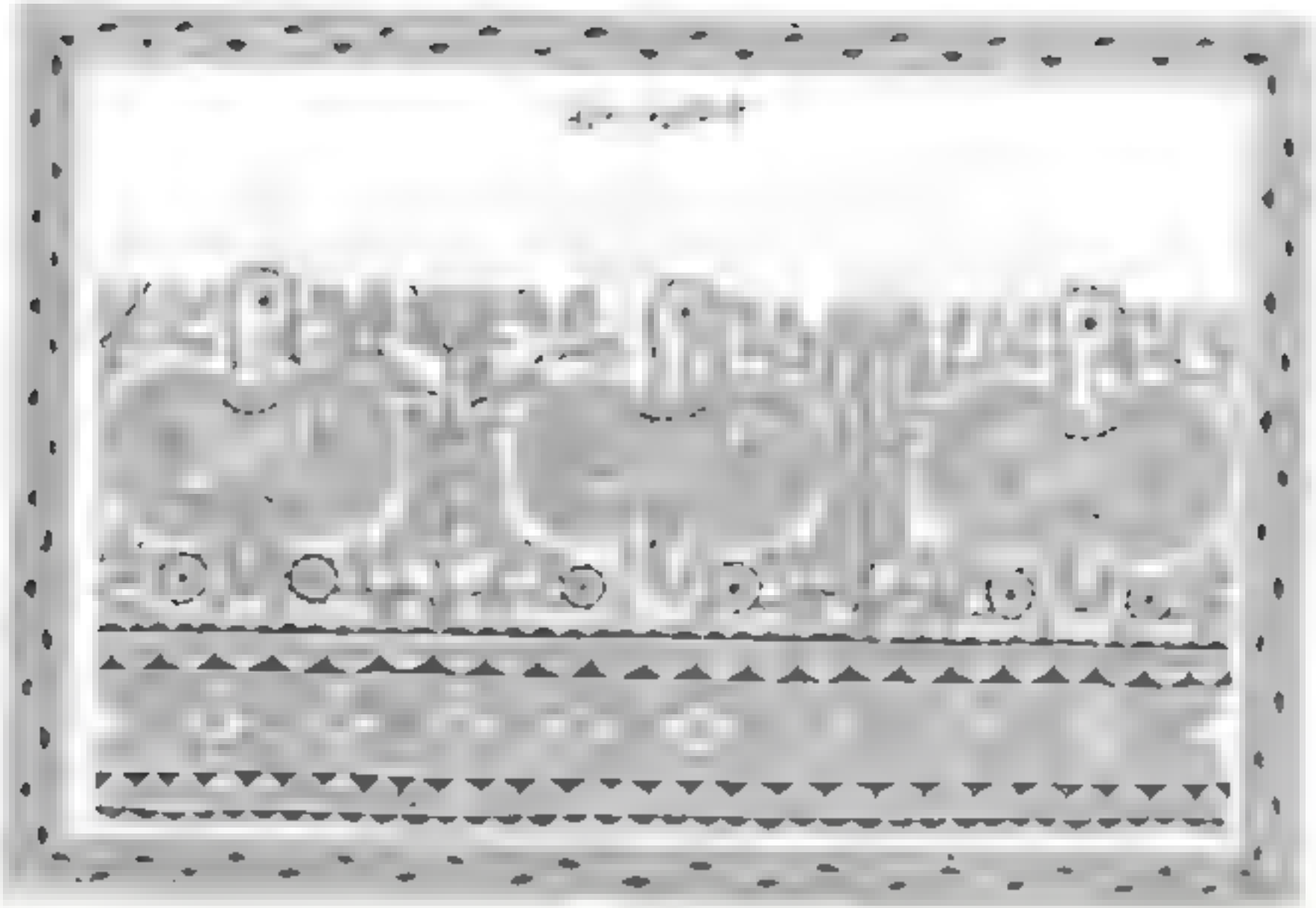

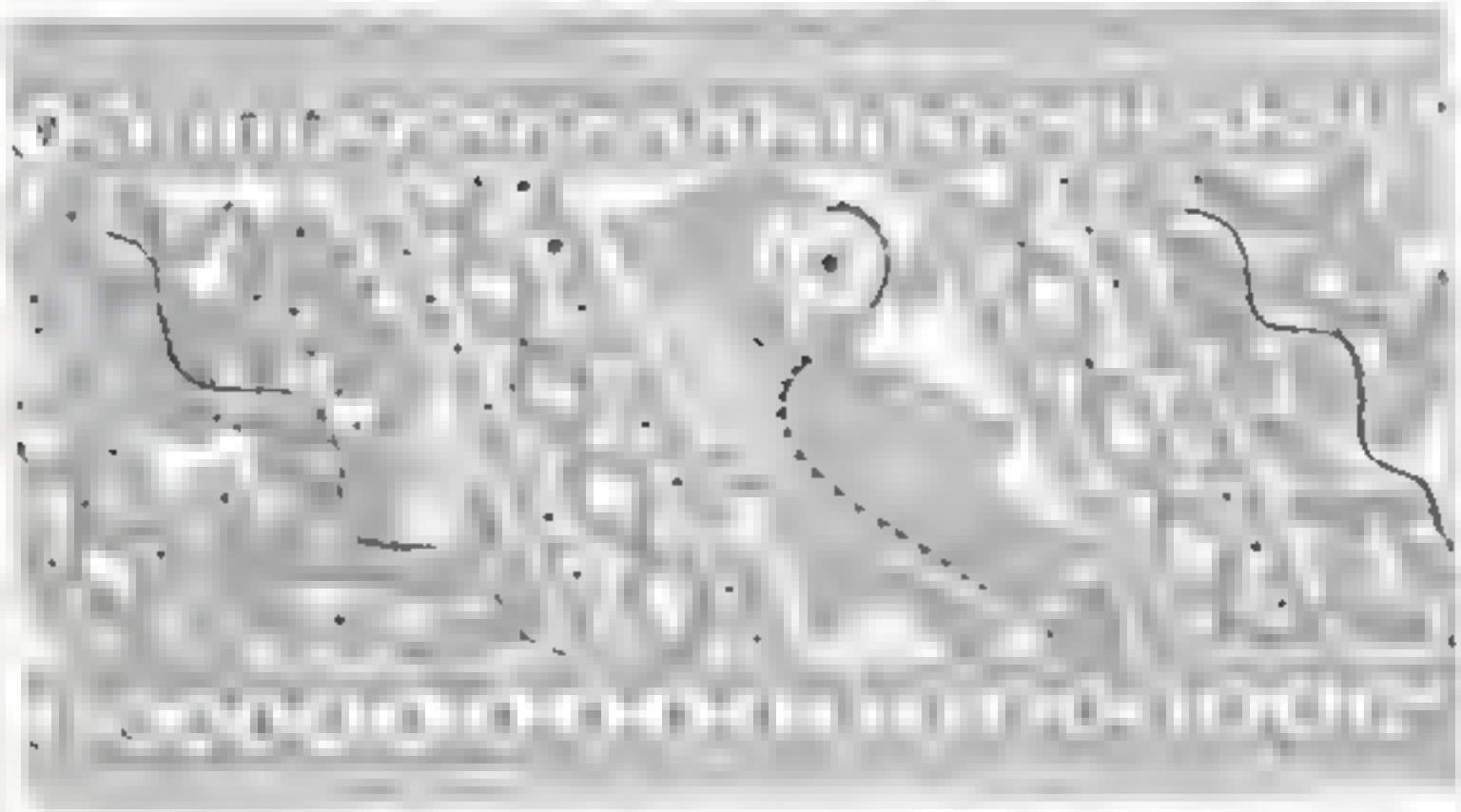

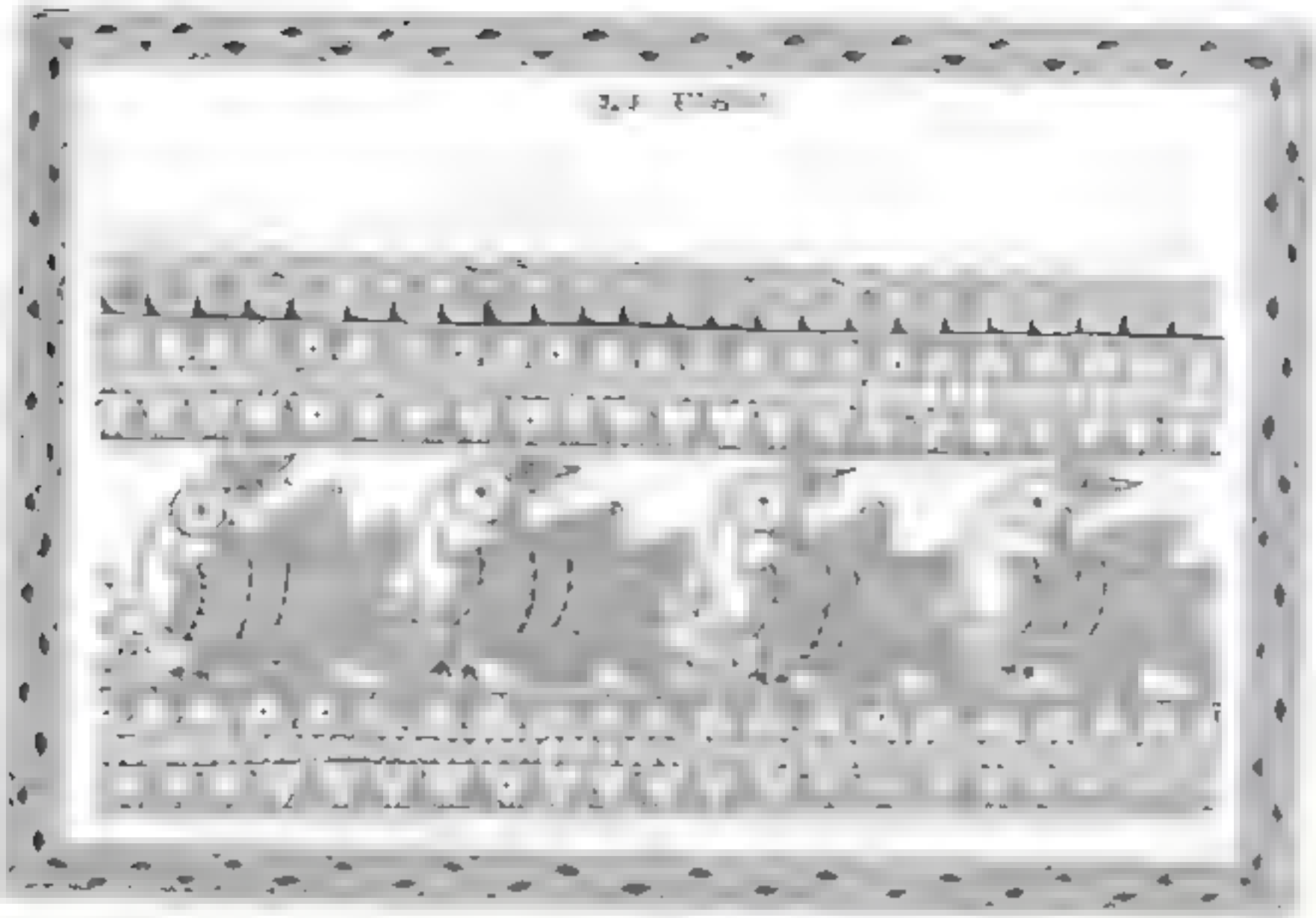

पानकोर

मिथिला संस्कृतिमें पान स्नेह, आदर और शारीरिक कोमलताका प्रतीक है। ताम्बूल भक्तिका षोडशोपचारकी एक विधि माना है

" पनमा जे बथल रे भइया सकिया नेरौले रही ठाम।
आही पीके बहि गेल रे भइया गंगा रे जमुनमाके धार॥"

(सामाके कण्ठगीत)।

पान-पल्लव

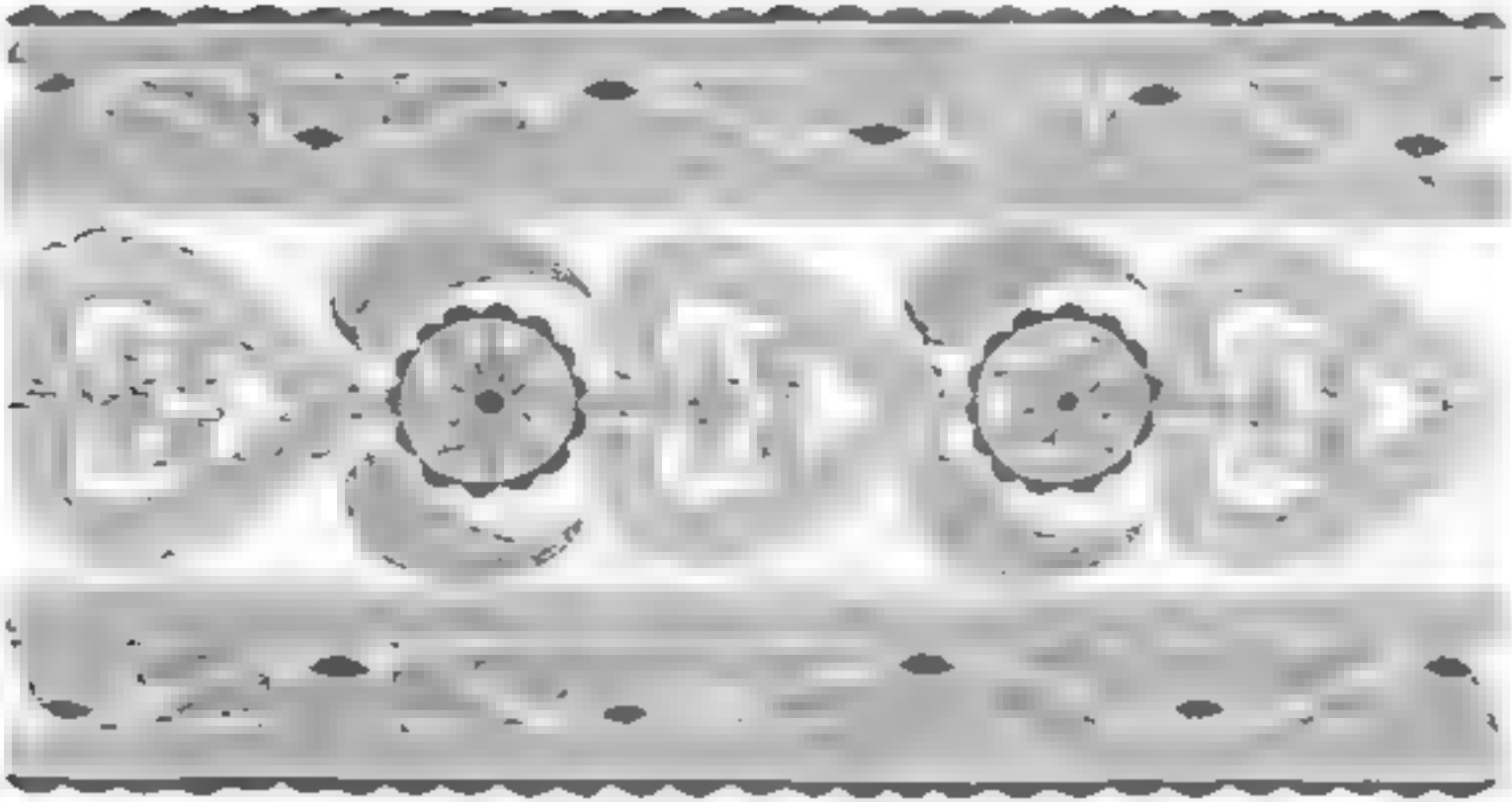

हरीर पान

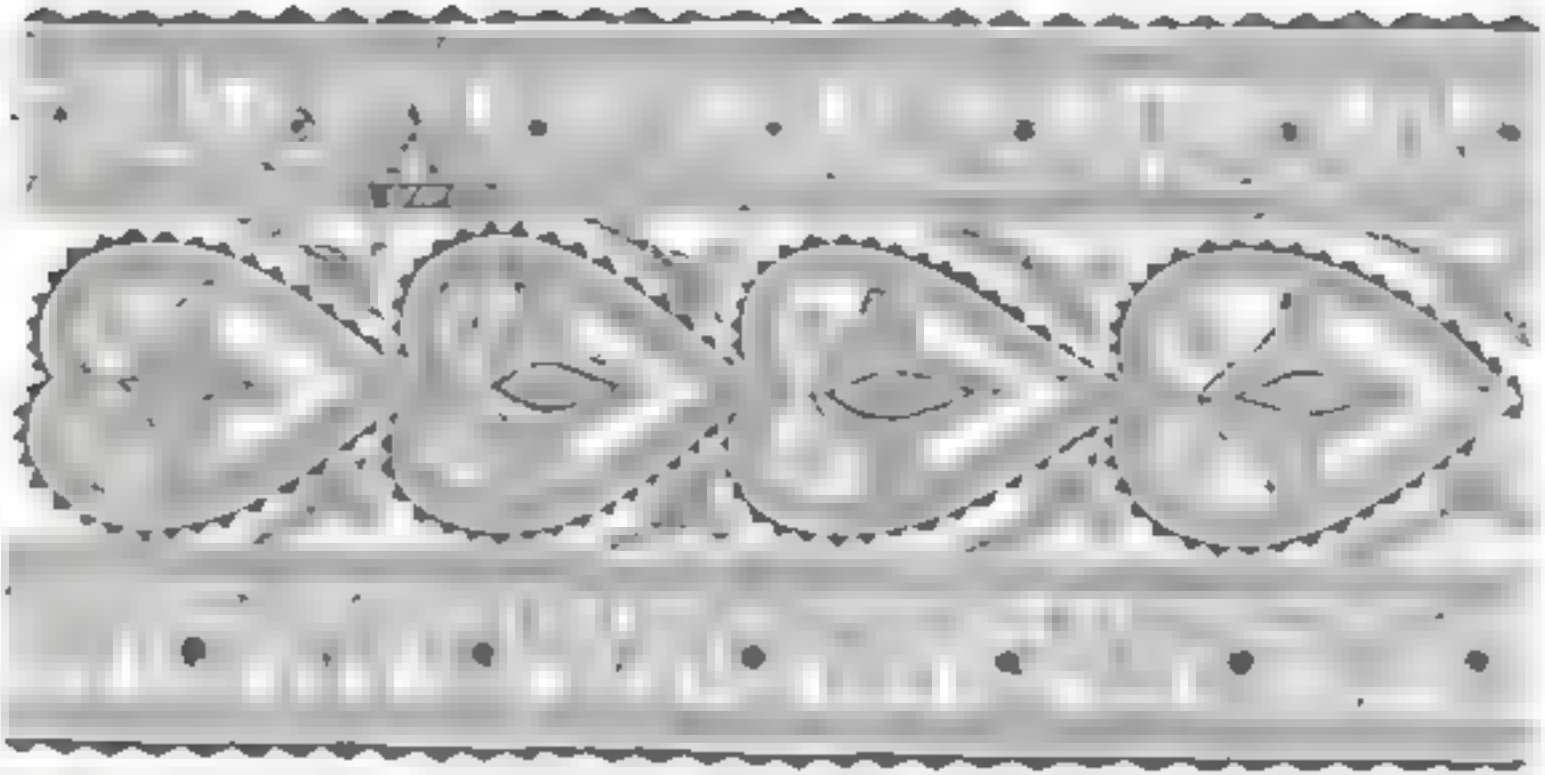

भ्रमरकोर

"पद राजीव बरनि नहिं जाहीं ।
मुनिमन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं ।।"

श्री रामचन्द्रजीके चरण कमलोंकी शोभा का वर्णन कठिन है, जिन चरणोंमें मुनियोंके मन रूपी भ्रमरोंका वास है

(श्रीरामचरित मानस)।

कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा
कुटिल केश जनु मधुप समाजा ।

(तुलसीदास)।

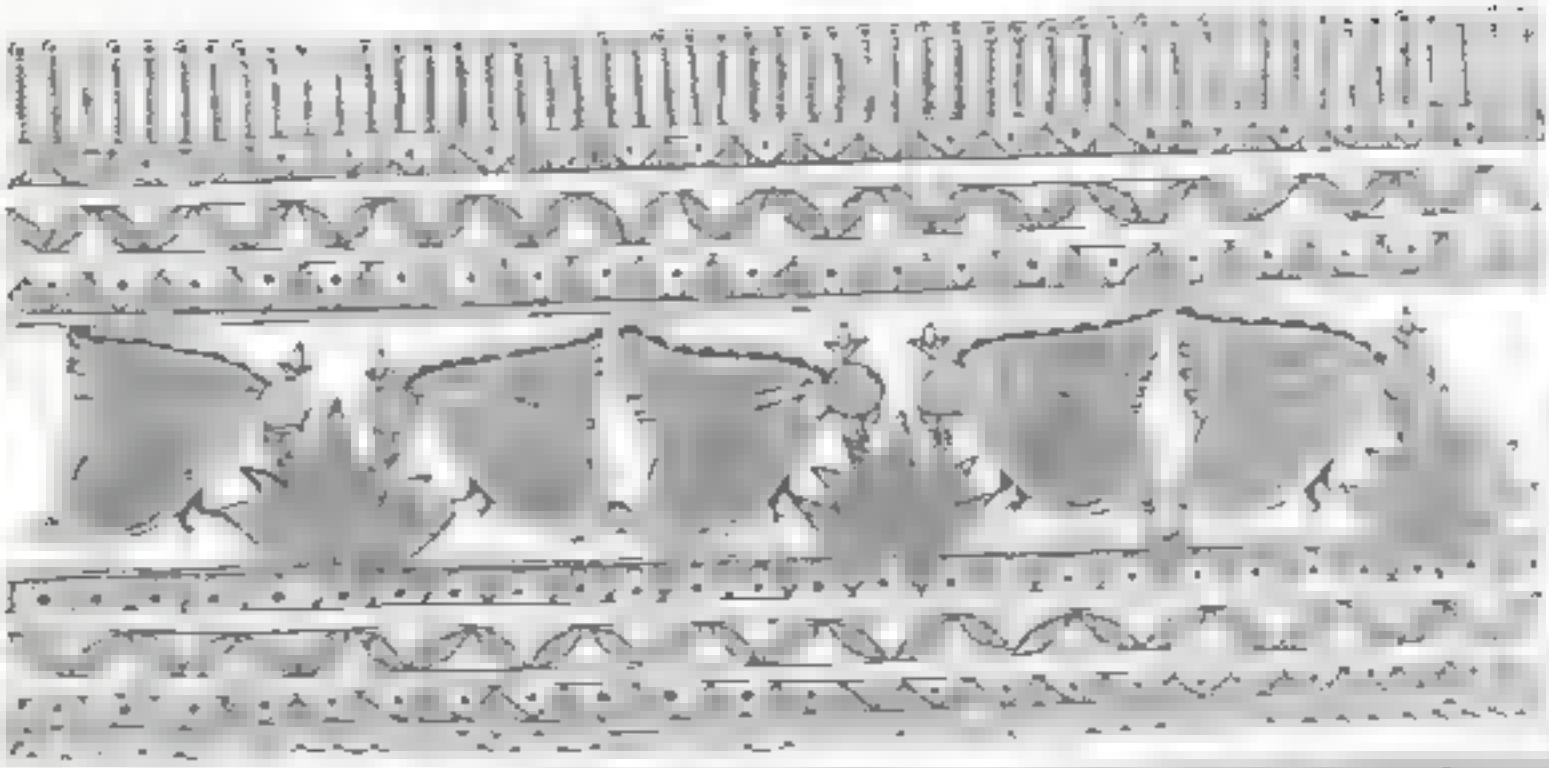

[illegible]
भौंरोंके झुण्ड हों।

(श्रीरामचरित मानस)

"मुग्धे रमणीयतरं तरुणी मनोहरमधुपविरावम् ।
कुसुमशरासनशासनवन्दिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥"

हे मुग्धे ! तरुणियोंको भी मोहित करनेवाली भ्रमरोंकी ध्वनि सुनो तथा कामदेवकी आज्ञाका उद्घोष करनेवाले कोकिल-समूहमें अपने भावको प्राप्त करो

(गीतगोविन्दम्)।

बाँसकोर

बाँस [illegible] एक [illegible] प्रतिरूप है।
[illegible] बाँसकोर [illegible] नहीं है जैसा कि चित्रमें
स्वयं देखा।

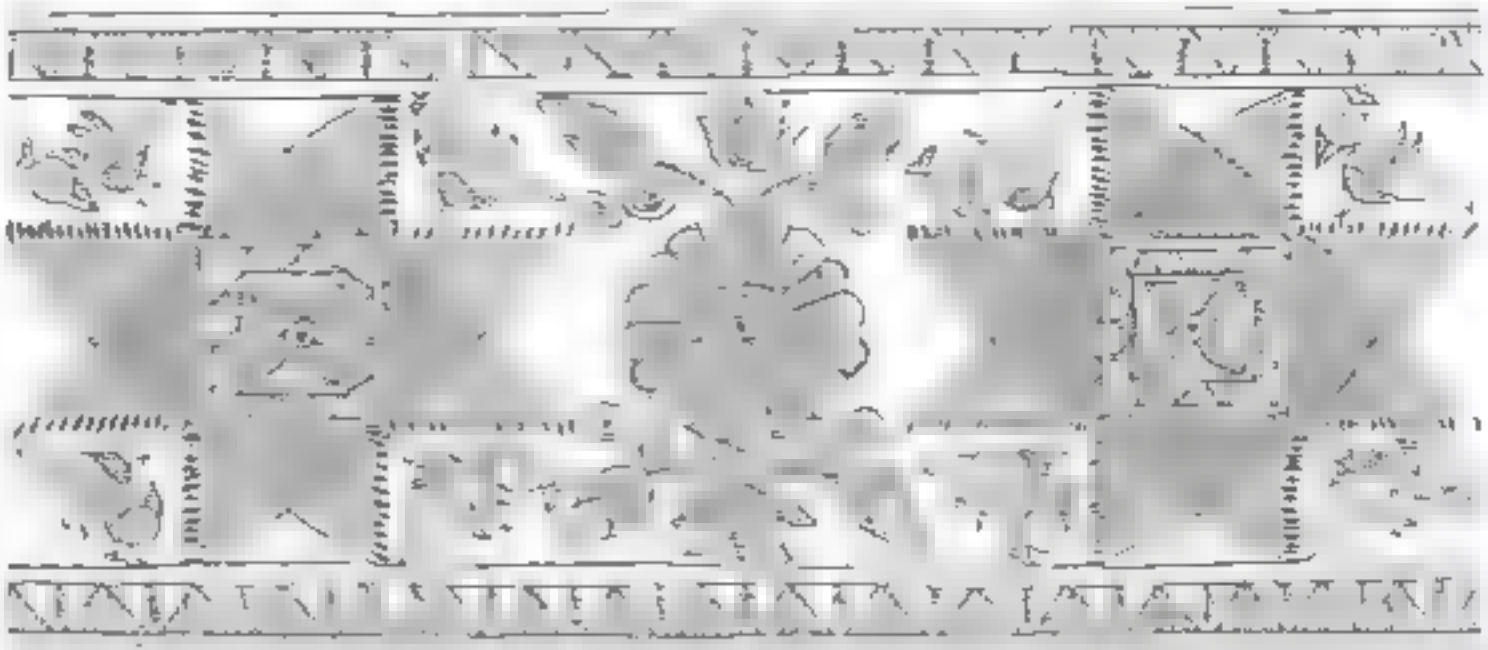

बाँसको मैथिल जीवन पद्धतिमें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दैनन्दिन जीवनमें इसकी उपयोगिताके कारण ही इसे जीवन और मृत्यु दोनोंका संगी कहा गया है। इसकी सदाबहार वृद्धि और सघन उत्पत्तिके कारण बाँसको भौतिक विकासका द्योतक और वंश-वृद्धिका प्रतीक माना जाता है।

बाँस लिङ्ग का प्रतीक है और 'पुरुष' का प्रतिनिधित्व करता है।

वैदिक चित्र : कोचर के दो मूल रूप हैं
बाँस और पुरइन। बाँस पुरुषत्व [illegible] और पुरइन स्त्री [illegible]।
कोचर चित्रमें बाँसका मध्यतन मुख्य पुरइनसे अभिव्याप्त [illegible]
है अन्य पुरइनोंसे परिवृत दिखाते हैं [illegible]
स्त्री-पुरुष या नर [illegible]।

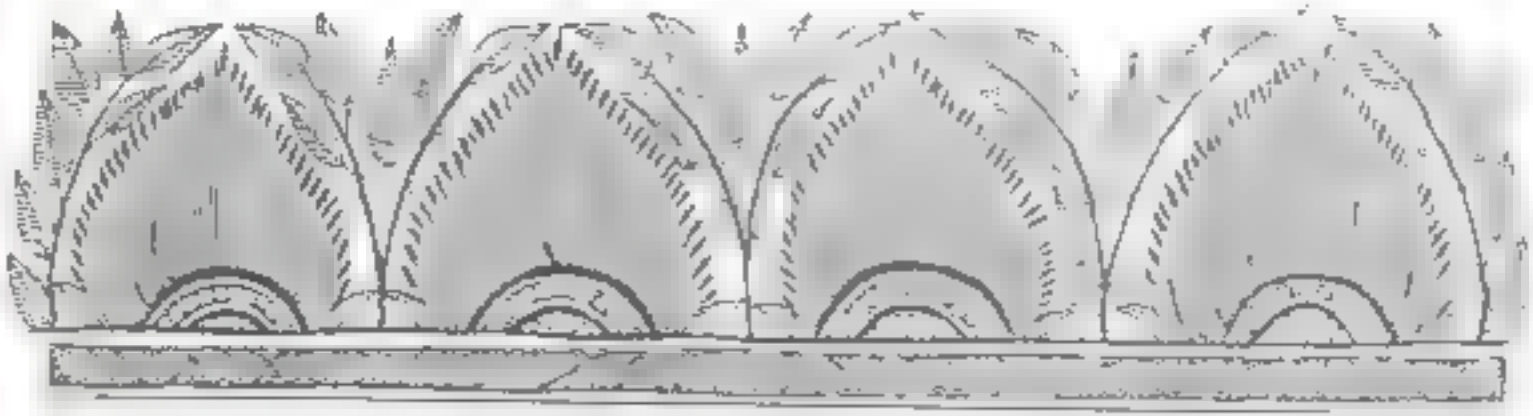

बाँसके फूल

पुरुष और प्रकृतिके संयोगसे ही नेव भी
सृष्टिका द्योतक है बाँसका फूल ।

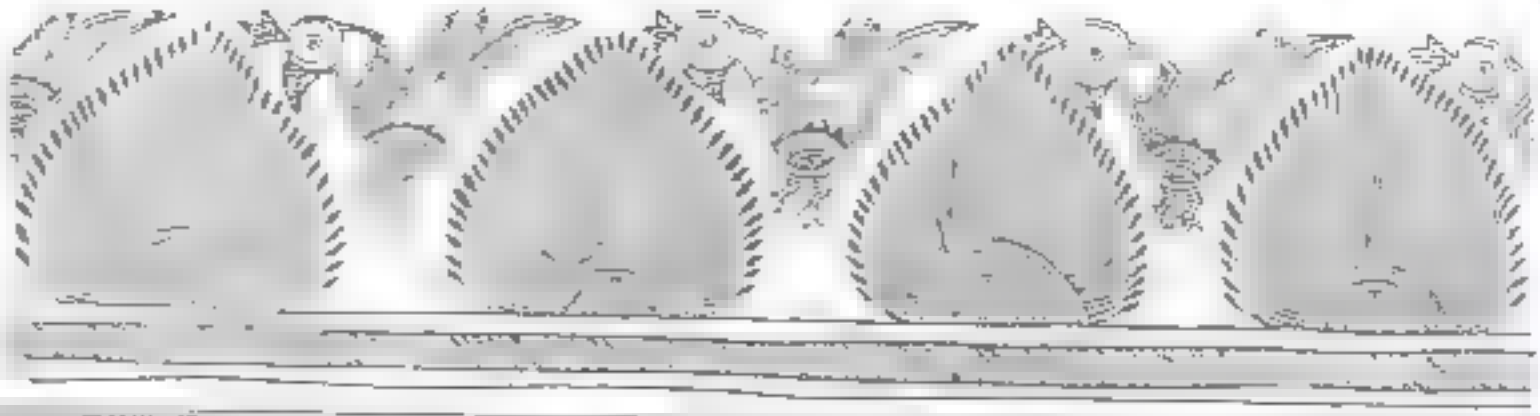

चित्रमें बाँसका शीर्ष पुष्पित दिखलाया जाता है।
कहते हैं जब भीषण अकाल पड़ता है, शस्य श्यामला भूमि
हरीतिमा विहीन हो जाती है और समस्त पादप समूह नीरस-निश्चेष्ट
हो जाते हैं तब बाँसमें फूल लगते हैं। यह फूल नीरस नामें सम्पन्नताके द्योतक
और अन्यतम धैर्यके परिचायक हैं।

नयनकोर

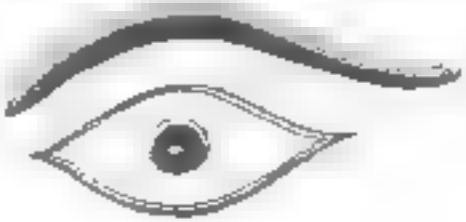

मिथिला चित्रके कतिपय विशिष्ट प्रसंग जिनका आलेखन आधुनिक कालमें लुप्तप्राय है, नयनकोर उनमें से एक है। मिथिला चित्र-लेखनकी प्राचीन परम्परामें काबरचरकी एक विशिष्ट लिखिया है नयनकोर।

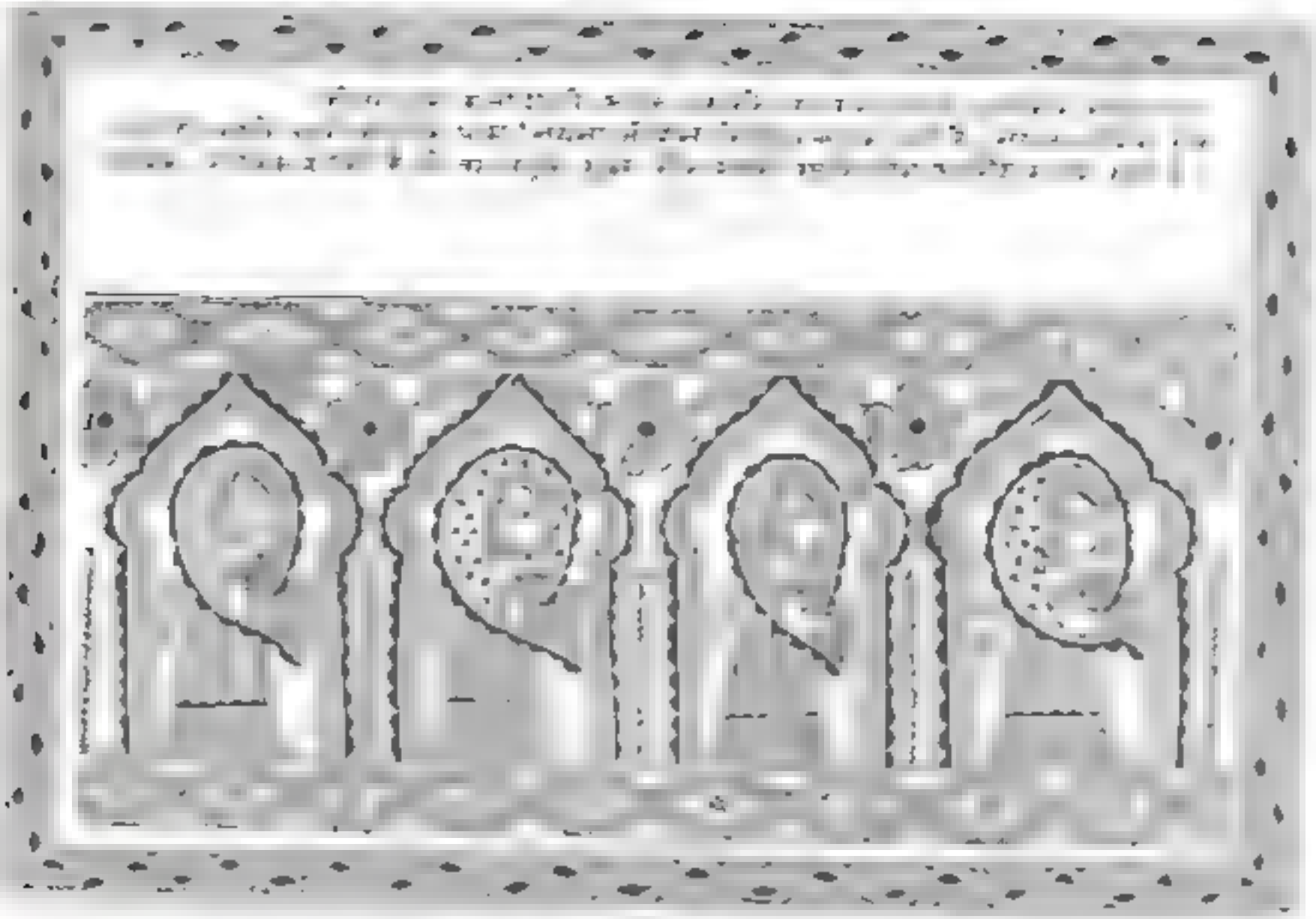

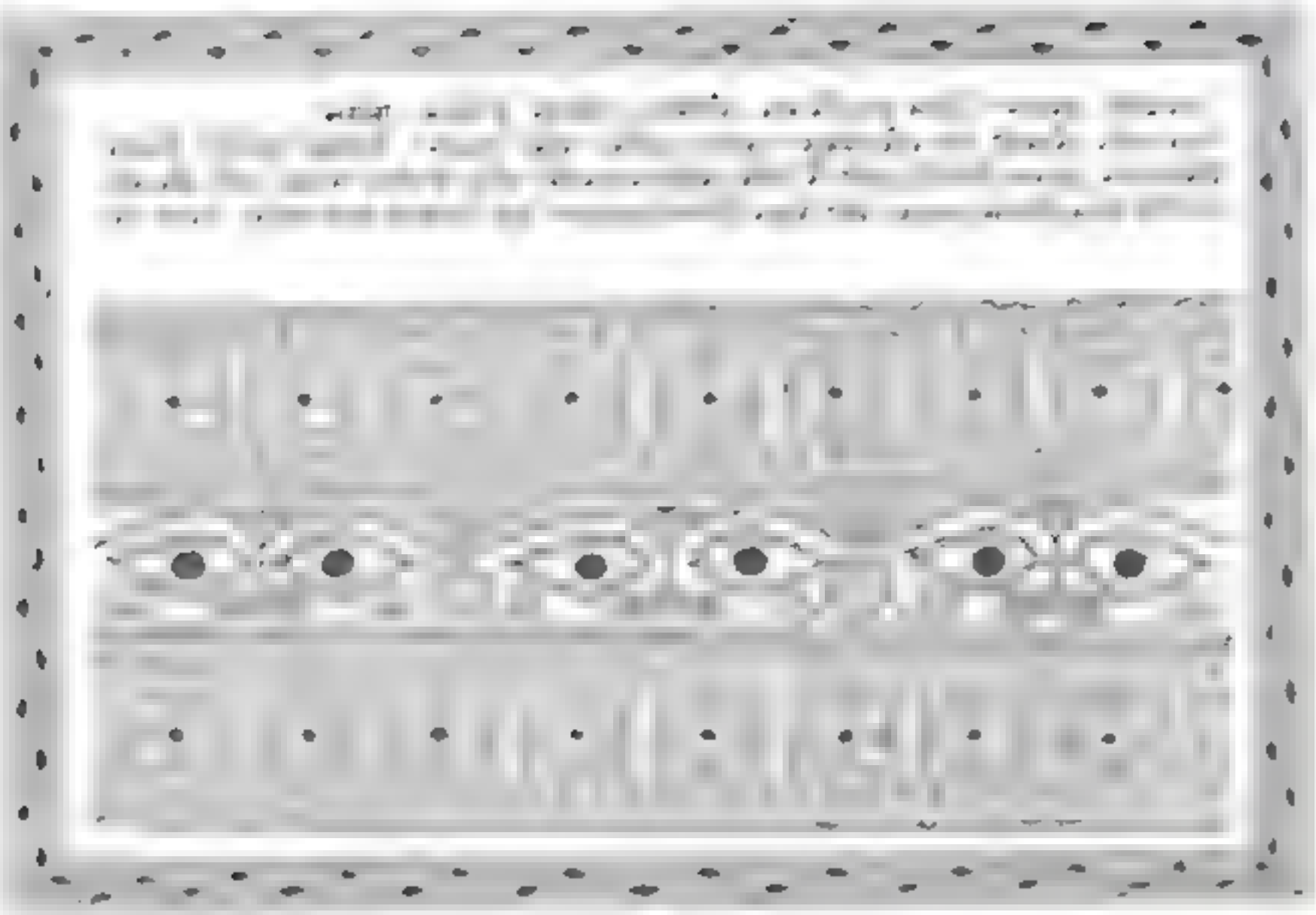

नारी नयनकी जादूई सुन्दरता ने समस्त विश्वके कवियोंको युग युगसे सम्मोहित किया है। विश्वके महान कवियों और कलाकारोंने स्त्रीके नेत्रसे प्रेरणा लेकर अपनी काल्पनिक सृजनशीलताको अनेक प्रकारसे कविता, चित्रकला, मूर्तिकला और नृत्य कलामें अभिव्यक्त किया है।

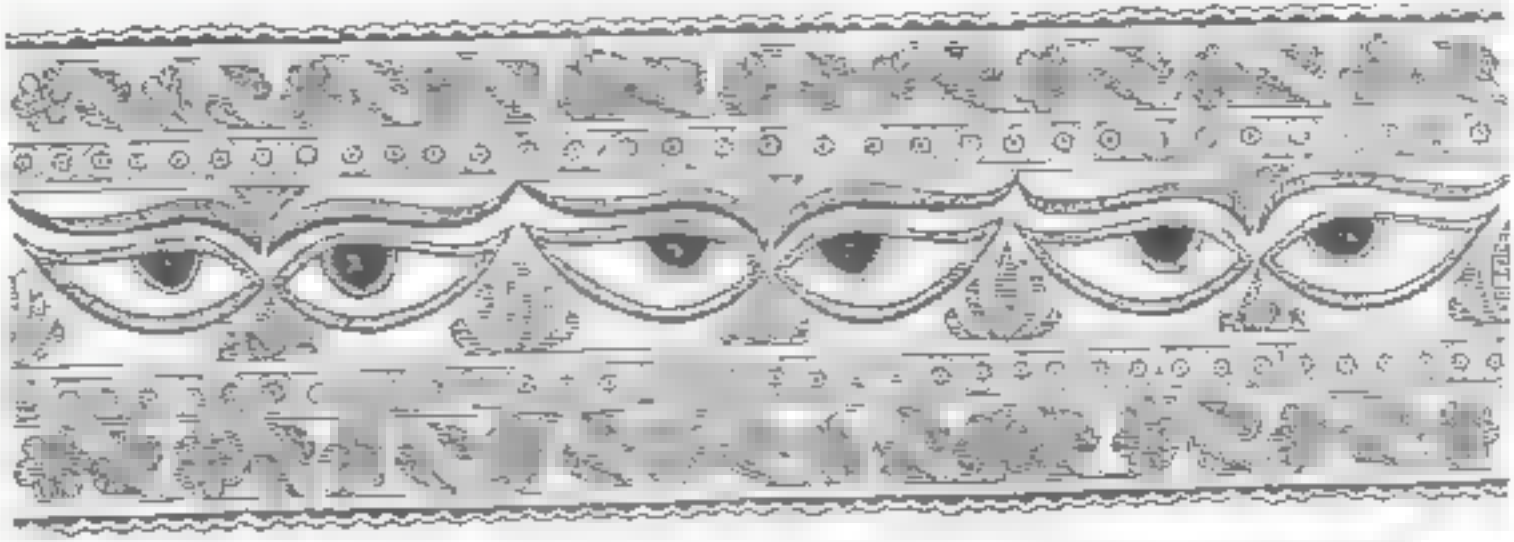

भारतीय साहित्यमें 'नयन' से सम्बन्धित [illegible] उपमा है पद्मिनीके [illegible] पदार्थों — सूर्य, चन्द्रमा, कमल, भौंरा, [illegible], खंजन, चकोर, मत्स्य, [illegible] से अनेक उपमानोंसे उपमित [illegible] वाद में 'नयन' [illegible] कतुर्चर्य है।

" कतेक जतन कि हे अपने सम्हारल
तइयो तुलित नहि भेला ।"

(विद्यापति)।

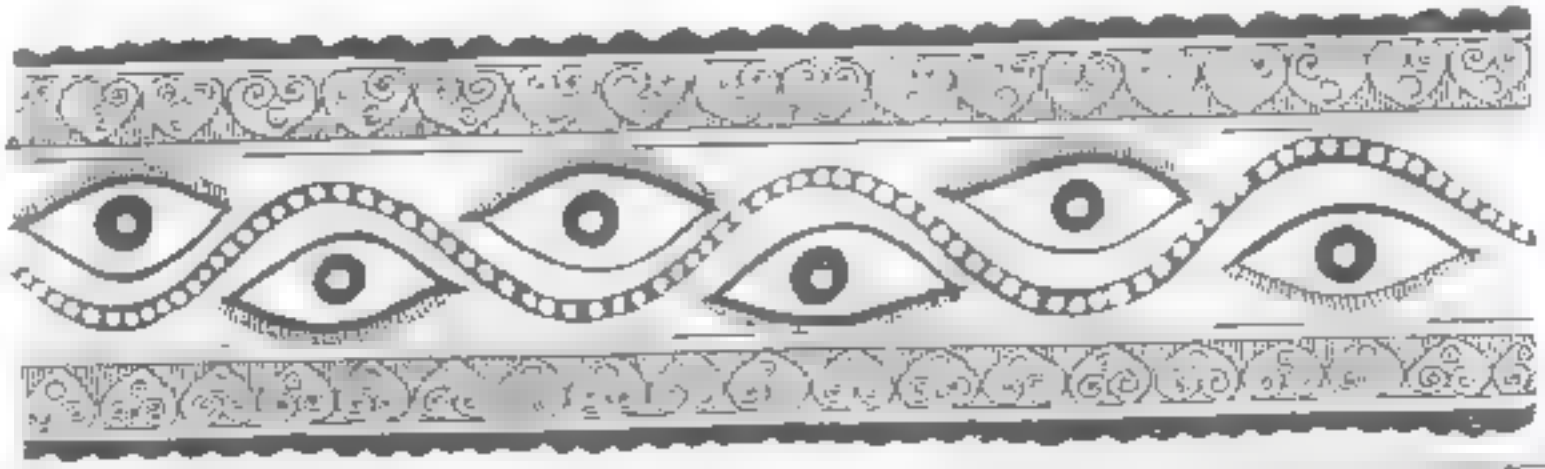

अथर्ववेदके ऋषयने 'मेरे' में [illegible]
आत्म प्रवेशका द्वार देखा —

[illegible]

(अथर्ववेद - काण्ड 7)

" हे प्रिय तेरे और मेरे दोनोंके नेत्र [illegible] हैं [illegible]
नेत्रोंके आगेके भागमें अञ्जन लगे [illegible] तू मुझे [illegible]
समान मनवाले हो जाँय।"

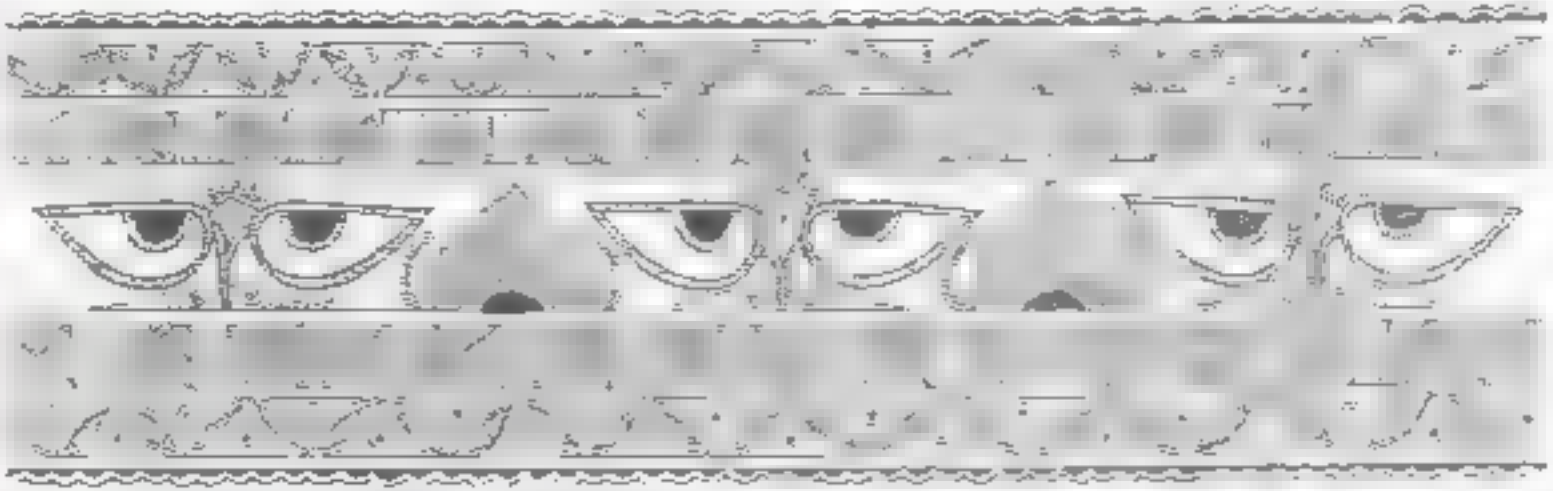

मृगनयनी

महान कवि कालिदास नव यौवना पार्वतीके मृग-से नयनों देखकर द्विविधामें पड़ गए। जिस साहित्यमें यत्र तत्र लोकके अपरिमित सौन्दर्यको सजीव करते यह निश्चित नहीं कर पा रहे हैं कि पार्वतीके नेत्रोंकी उपमा मृगनयनसे दें या मृगनयनकी उपमा शिव-प्रियाके नयनसे —

प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषमधीरविप्रेक्षितमायतक्ष्या ।
तया गृहीतं नु मृगाङ्गनाभ्यस्ततो गृहीतं नु मृगाङ्गनाभिः

कुमारसम्भवम्

हवाके झोंकोंमें प्रकम्पित नीलकमल के ये सुदर्शन नयन यह सुन्दरीने किस मृगसे भेंट उधार लिए हैं या फिर मृगोंने इस किशोरीसे नयन माँग लिए हैं।

खंजन-नयन

'खंजन नयन रूप बस माते
सूरदास [illegible] अलस अंबुज [illegible] जाते।'

—(सूरदास)।

विद्यापतिकी तरह ही सूरदासके खंजन-नयन भी काजलकी डोरसे बँधे हैं, वरना कबके उड़ गए होते।

[illegible]

'नारी [illegible] मैं अपना यह सिद्धान्त निश्चित करता हूँ कि
उसकी आँखों में [illegible] का चमक है,
उसकी आँखों में सब [illegible] विद्यागार हैं
[illegible] पुस्तकें [illegible] पुस्तकों की पेटिका हैं।"

(Love's Labour's Lost)

सत्ता के मद में चूर देवराज इन्द्र ने एक बार गौतम पत्नी अहिल्या का सतीत्व-हरण कर लिया। उसी समय वहाँ ऋषि गौतम आ गये; उन्होंने इन्द्र को 'सहस्रयोनि' होने का शाप दे दिया, ऋषि के शाप से इन्द्र के रोम-रोम में योनि हो गई।

मिथिला में जब श्रीराम और सीता का विवाह हो रहा था तो सीता राम के दर्शन से इन्द्र का शाप नष्ट हुआ और उनके रोम-रोम में योनि बदल कर नेत्र हो गये। तब से इन्द्र 'सहस्राक्ष' कहाने लगे।

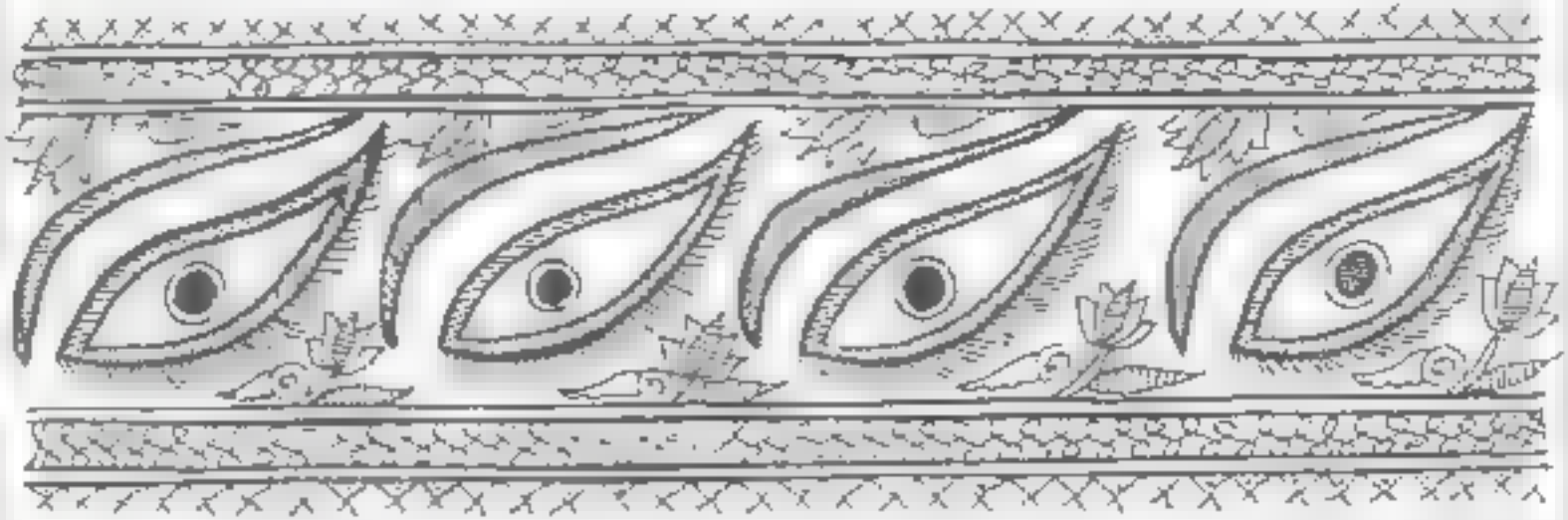

कच्छपकोर

" [illegible]
धरणिधारणकिणचक्रगरिष्ठ ।
केशव [illegible] कच्छपरूप
जय [illegible] जगदीश हरे ॥ "

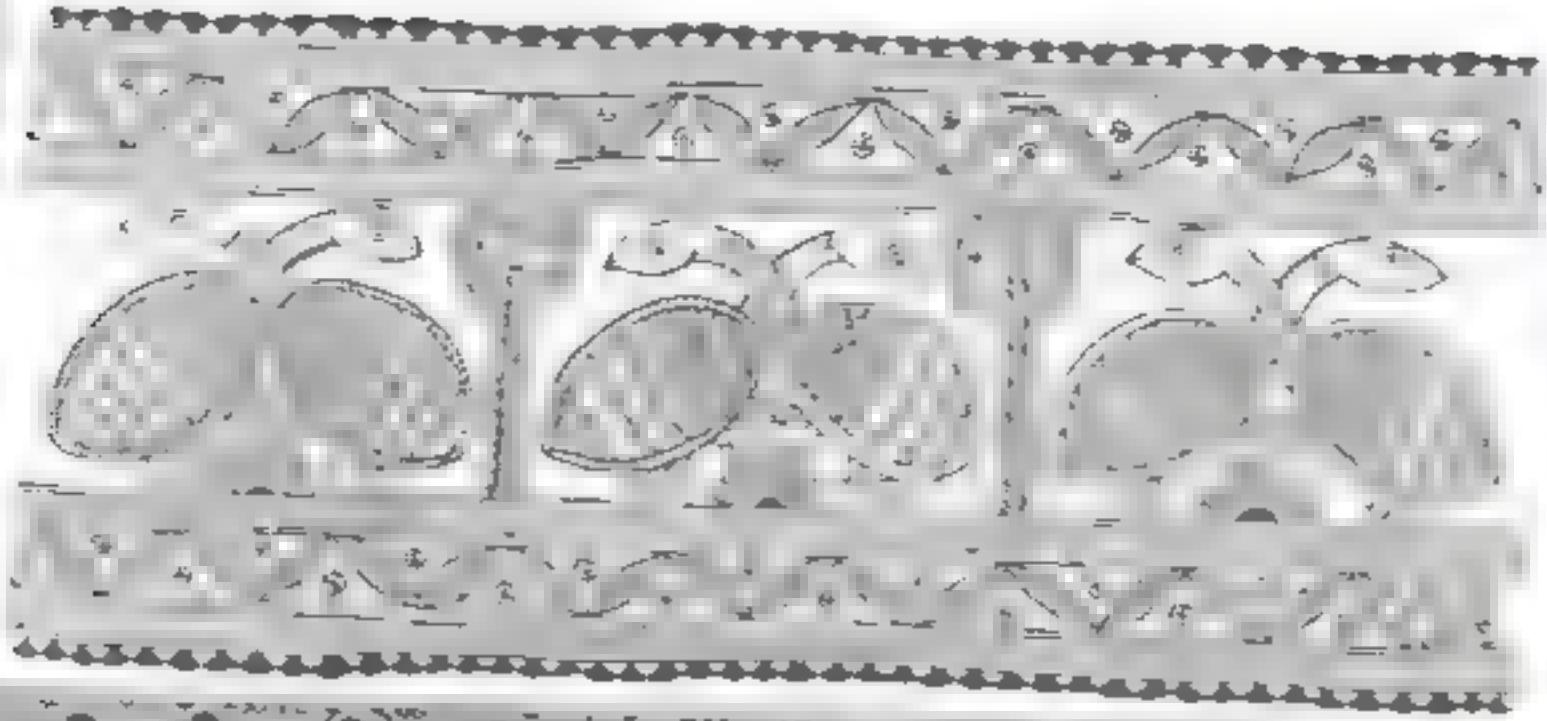

(गीतगोविन्द)।

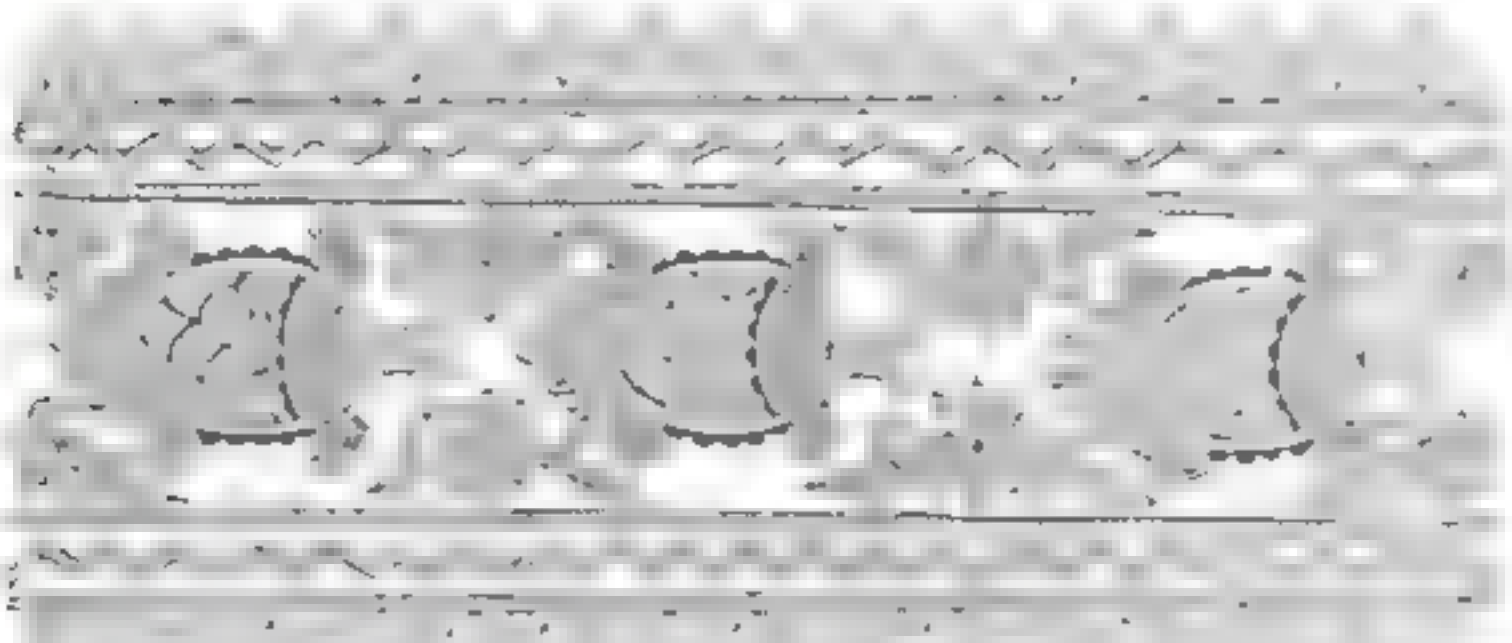

सर्पकोर

सर्प धैर्य, उत्कट अभिलाषा, भौतिक सम्पदा और कामातिरेकका प्रतीक है।

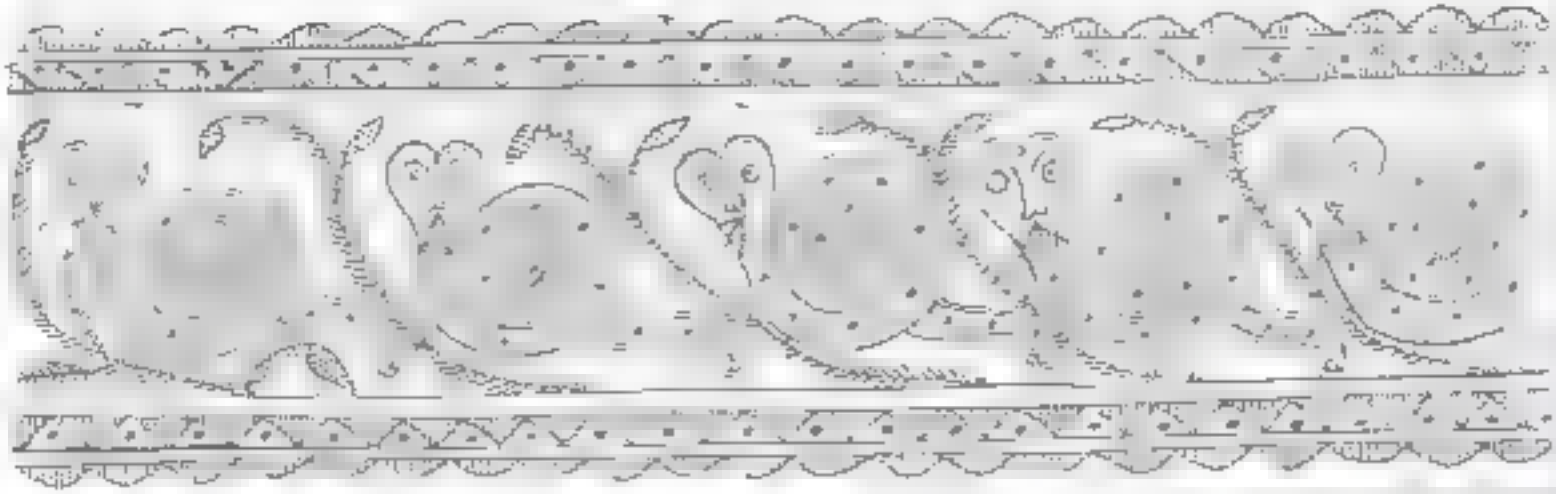

"मदन भुजगम दंसल कान। बिनहि अमिअ रस की करब आन॥"

[illegible]

'श्रीकृष्णको काम रूपी सर्पने डँस लिया है, अमृत (रस (राधा) के बिना और किसी रससे उसे क्या लाभ होगा?

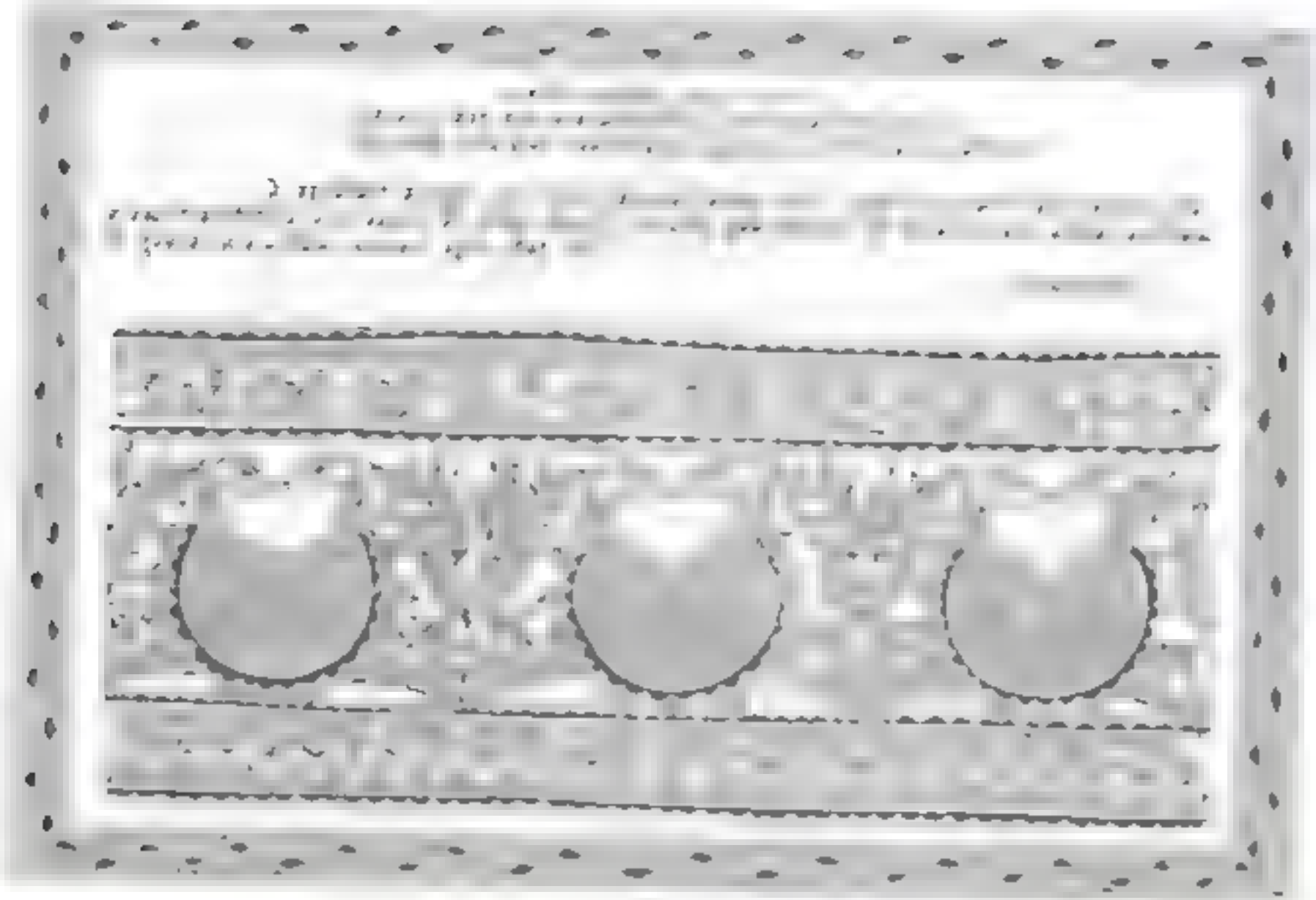

हस्तिकोर

[illegible]

हे राधा तुम अमृत के सागर के समान हो और मन्मथ [illegible] उत्तम विहार किया है। (विद्यापति)।

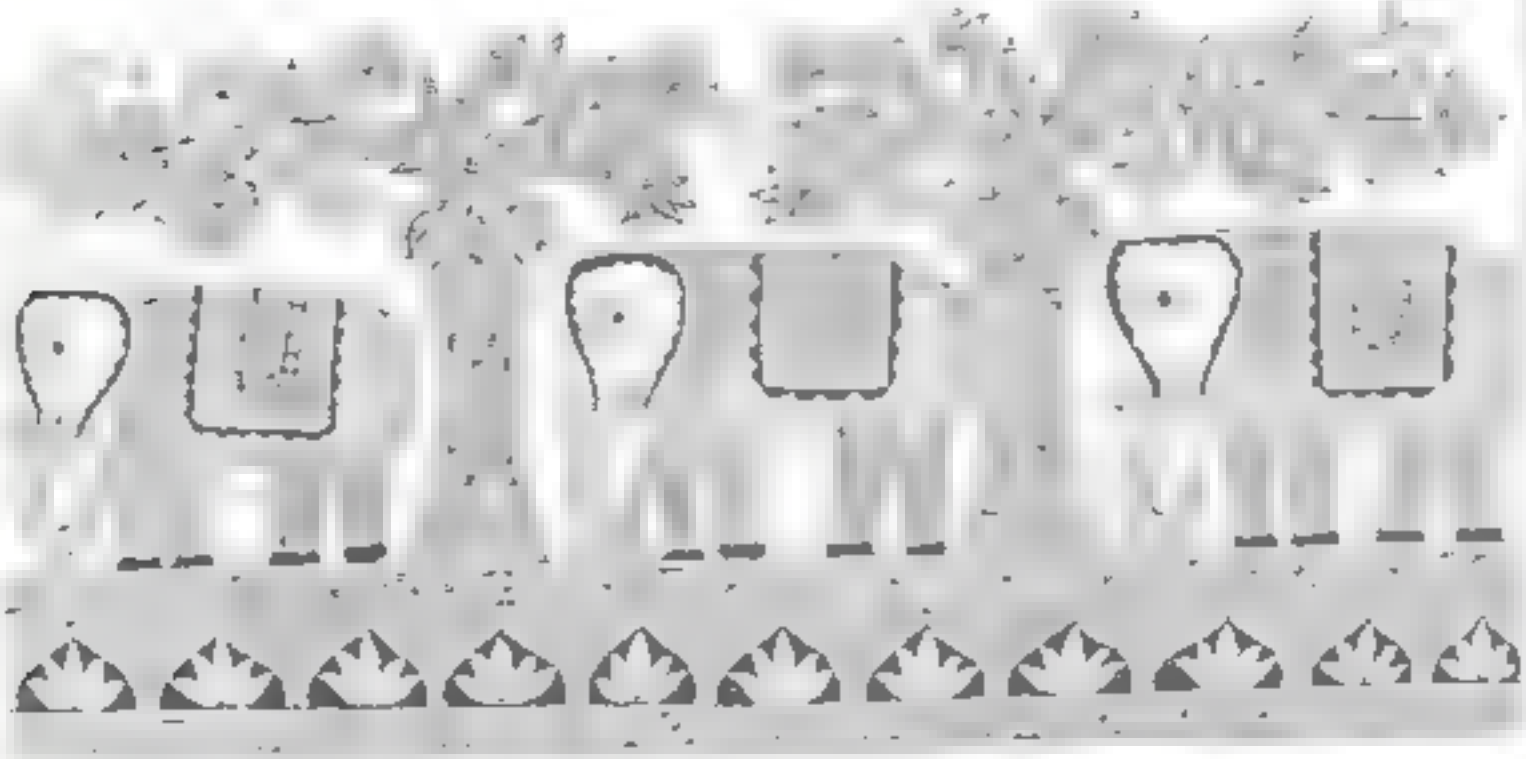

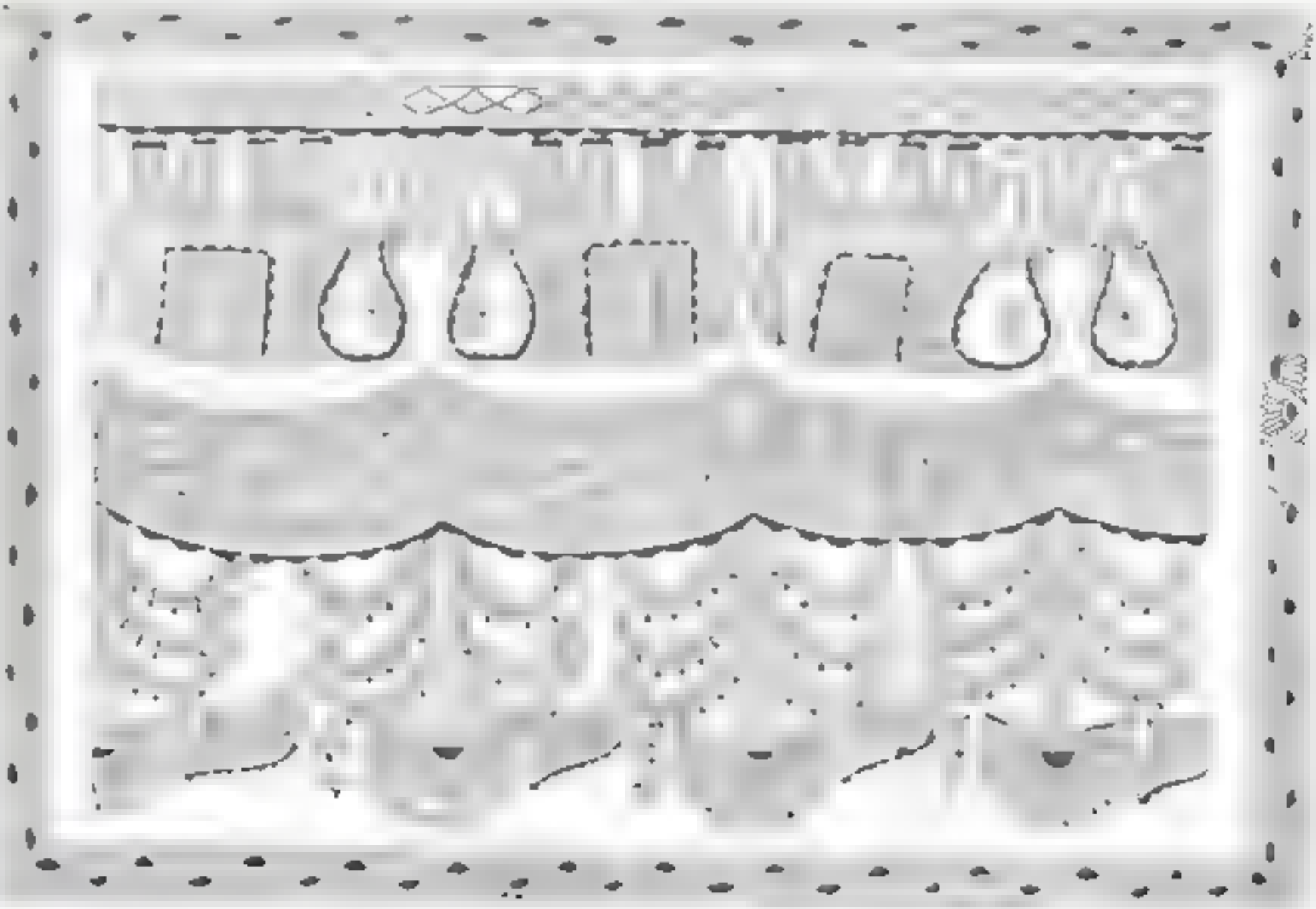

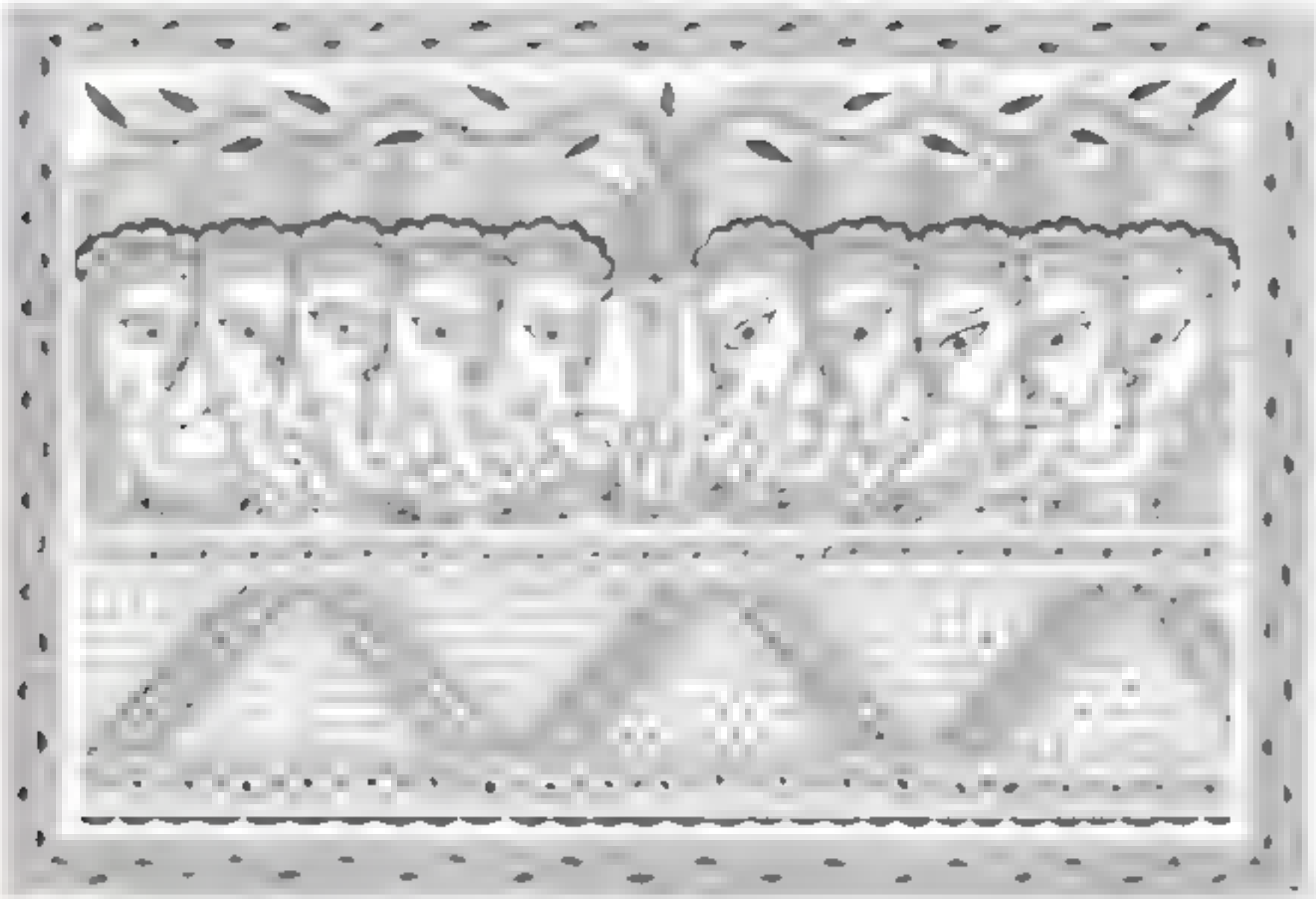

मूर्तिकोर

सन उन्नीस सौ सत्तरके दशकमें जब मिथिला चित्र चटक रंगों और महीन रेखाओंसे सज्जित होकर नेत्र कलाके मंचपर [illegible] हुए उस समय इस कलाकी ओर मध्य बिहारके प्रसार बहुत सीमित थे। पौराणिक- वैवाहिक मूर्ति चित्रों और दो एक ज्यामितिक अभिप्रायसे समन्वित इन चित्रोंने जनजीवन ने ही समुद्रपार तकके कलाप्रेमियोंका अपनी छवि-छटासे जैसे मंत्र कीलित कर दिया।

सन अस्सीके दशकमें इस पुस्तकके लेखकद्वयने सीमालेन, आर्थिक परिवर्तनके लिए कलाके माध्यमसे एक आन्दोलनका प्रवर्तन किया इस क्रममें आपने मिथिला [illegible] शैलीना चित्रशैलियोंको जिसके साथ ही विविध औद्योगिक माध्यमके रूपमें विकसित किया। आज इन शैलियोंमें फैशन वस्त्रोंके मनमोहक प्रारूपोंमें प्रतीकात्मक कारकजाके साथ ही मूर्तिकोरोंका प्रचलन बढ़ रहा है। अगले कुछ पृष्ठोंमें मूर्तिकोर देख जा रहे हैं

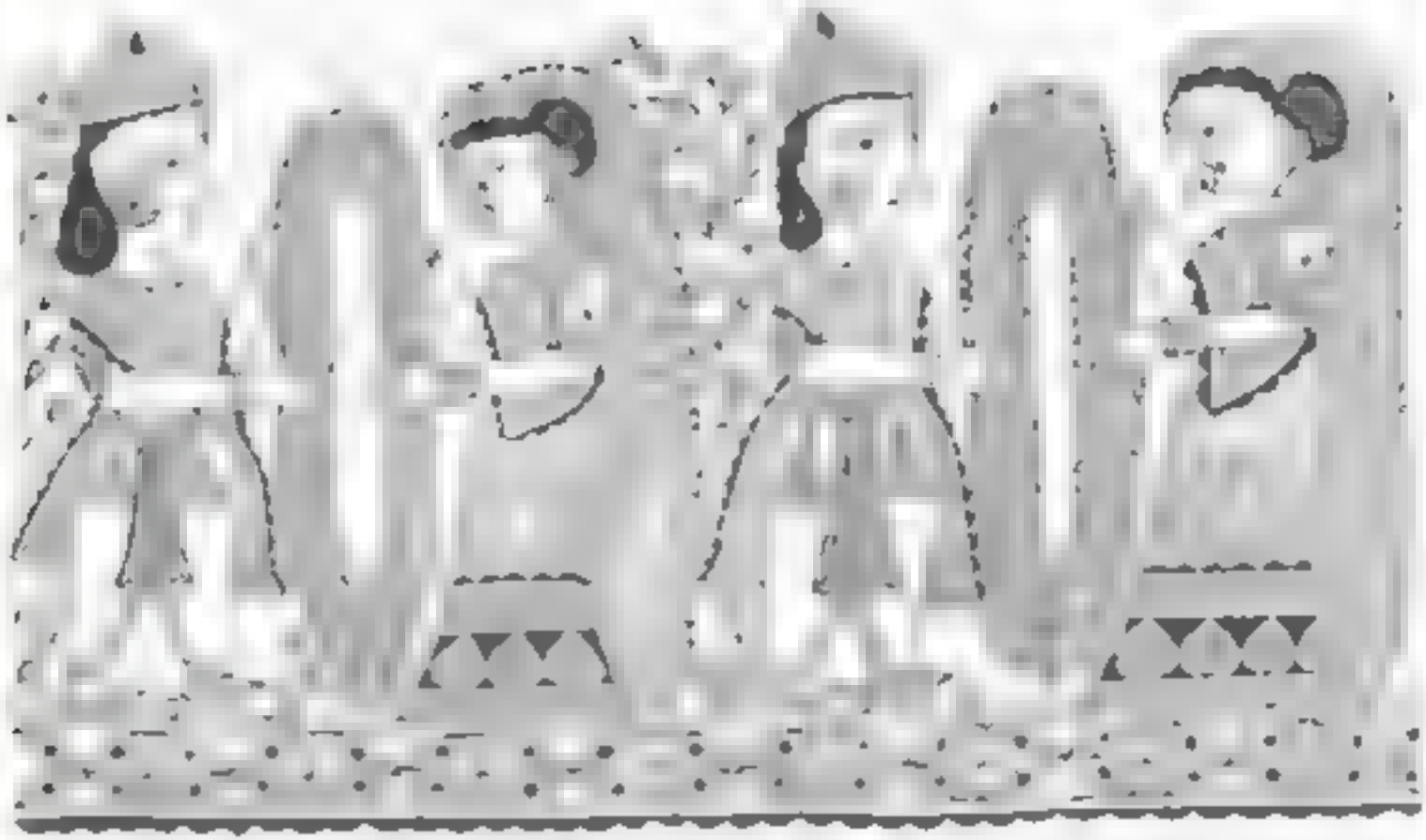

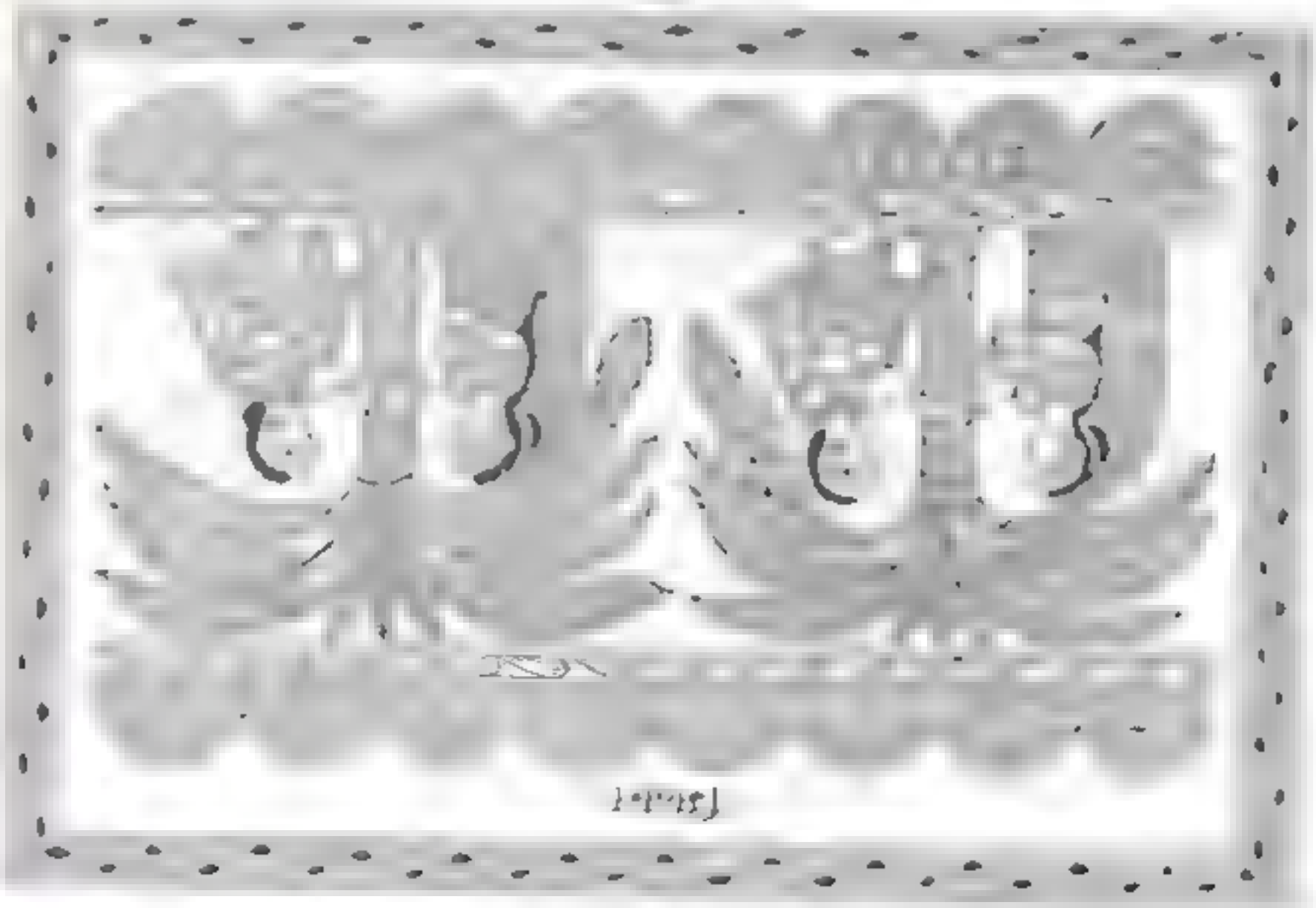

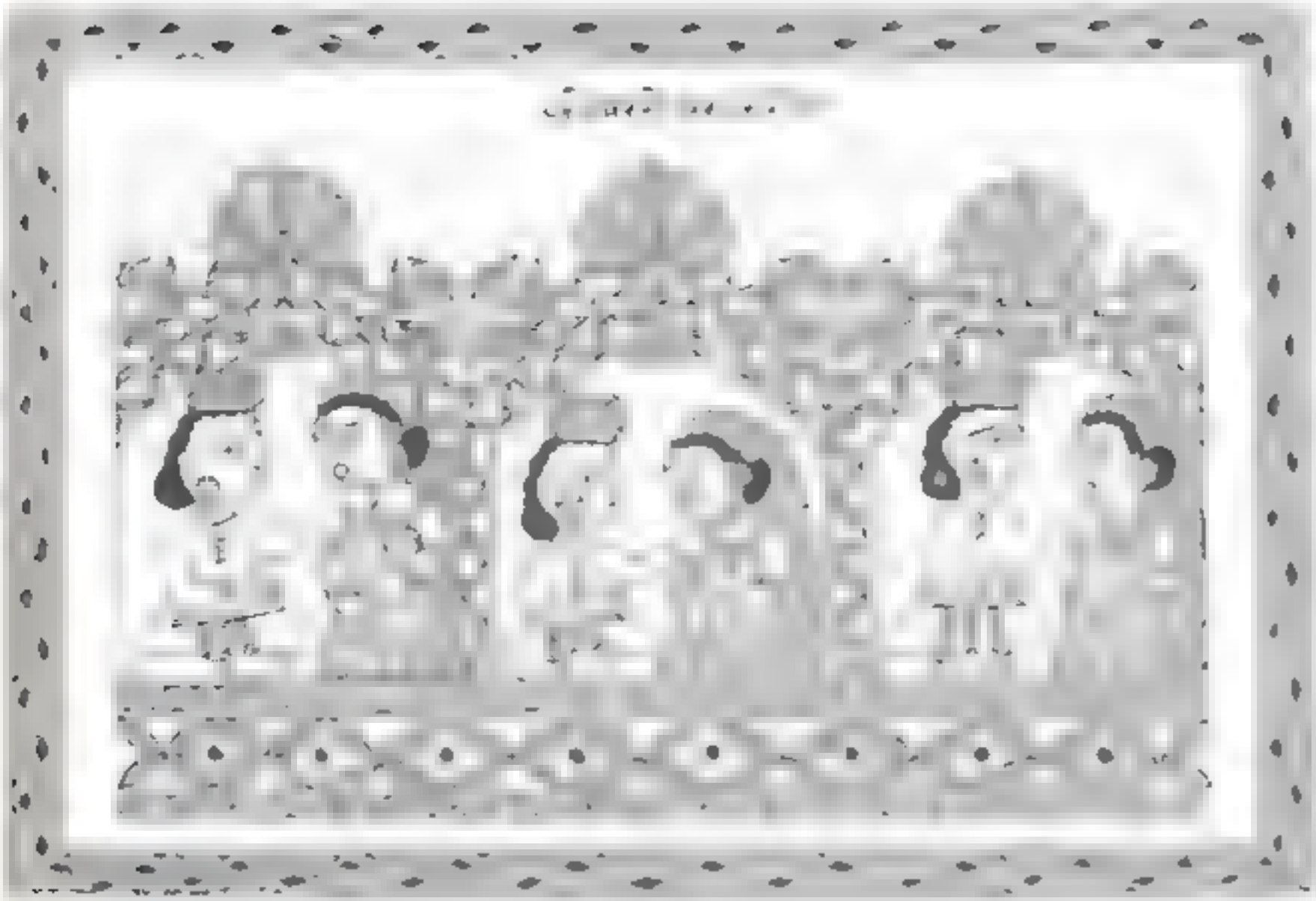

पालके मर्कोनया

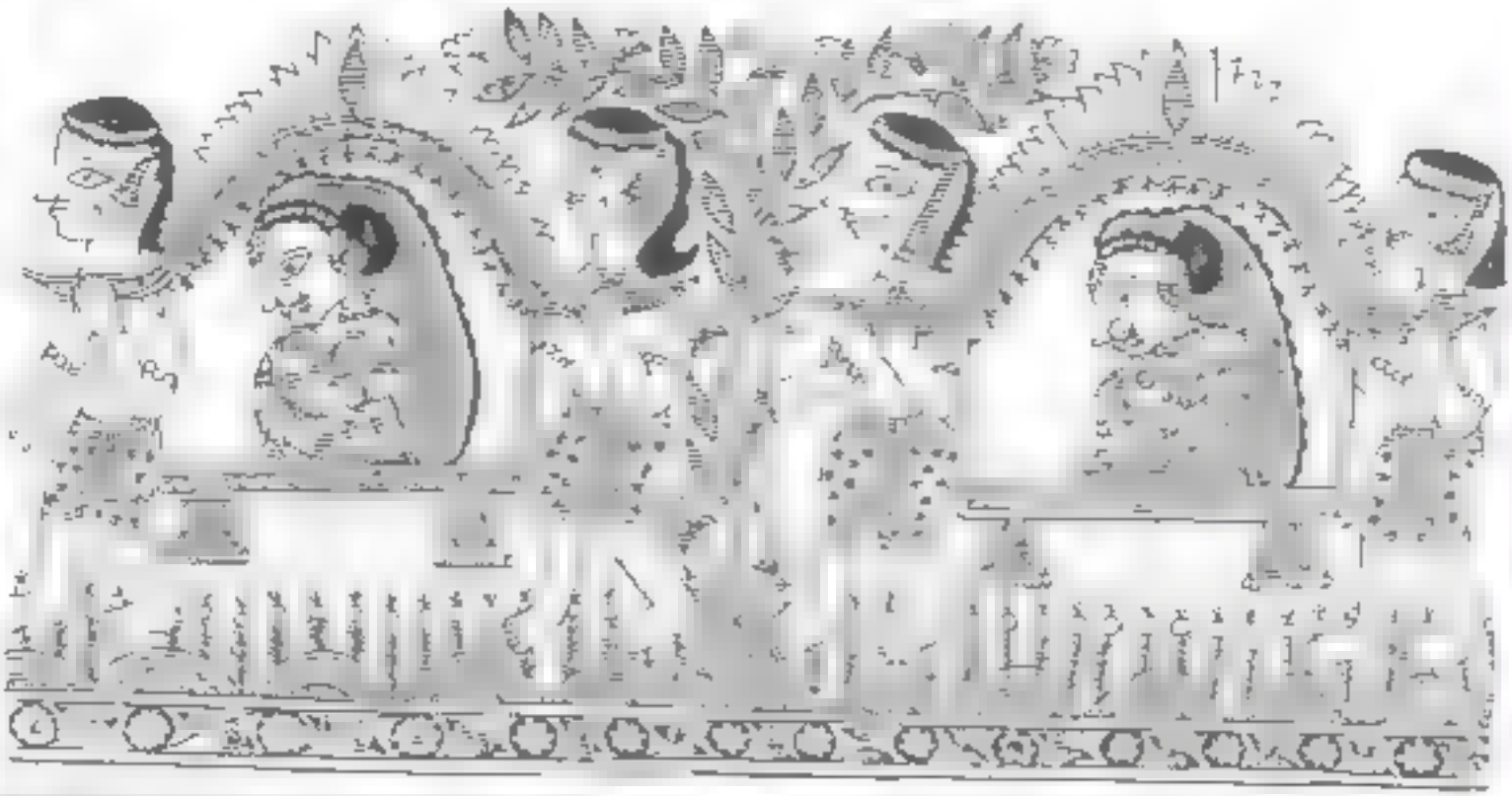

पालकीमें वर-कनिया

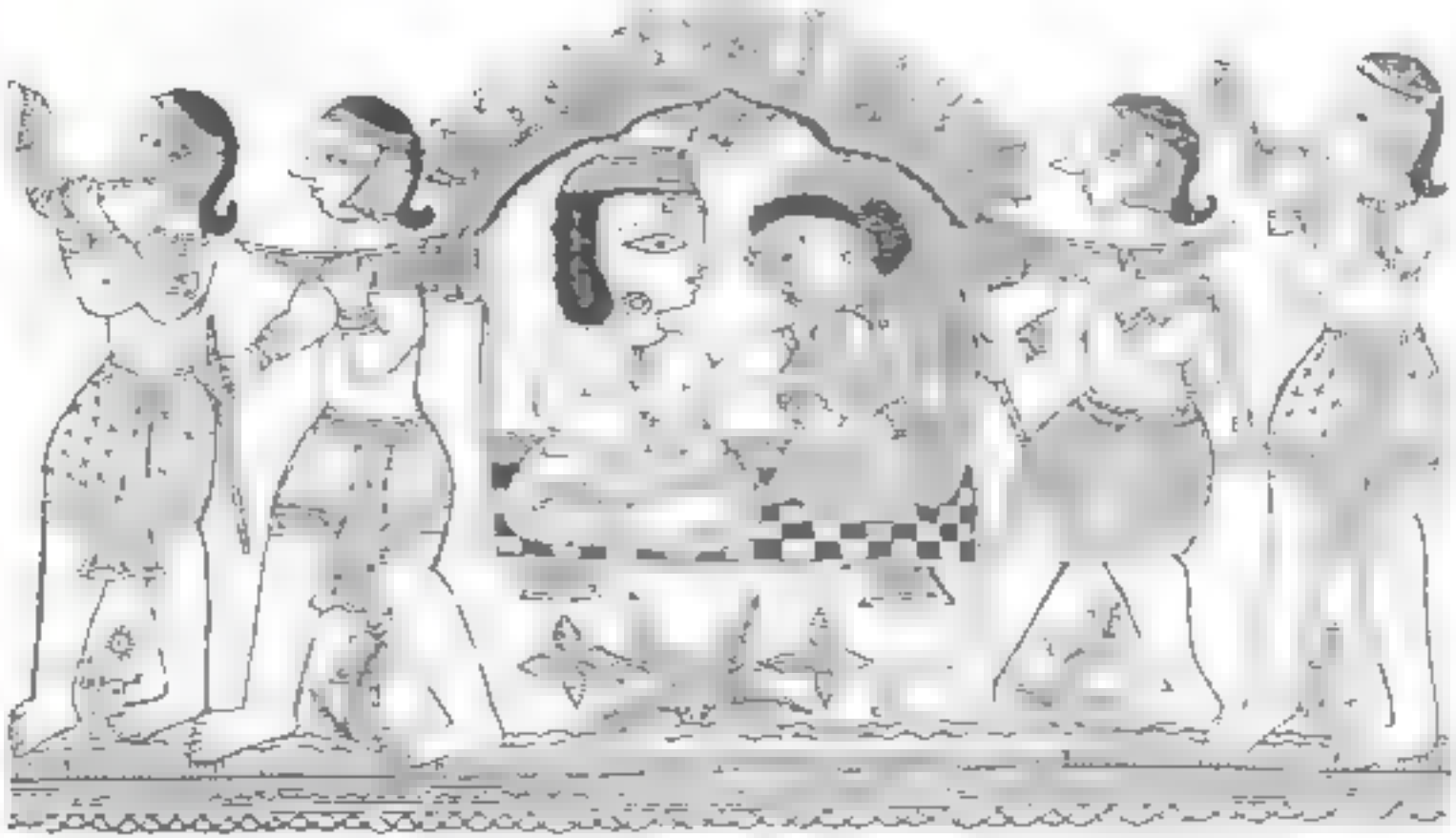

नर्त्तकी

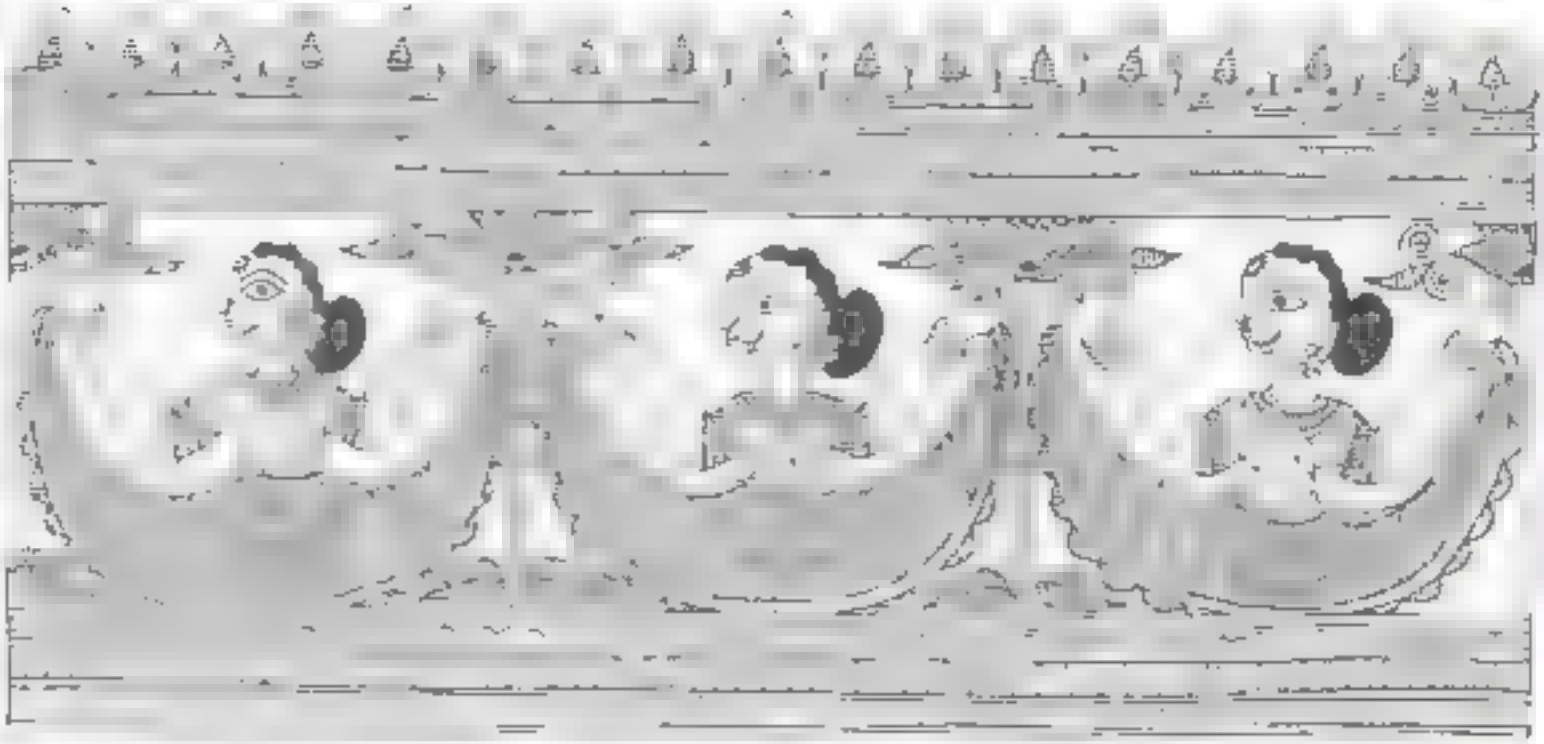

सर्वकोर

[illegible]

(विद्यापति)।

हे कृष्ण [illegible]
[illegible] पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर [illegible]
गया है। [illegible] उपरोक्त अन्धकार [illegible]

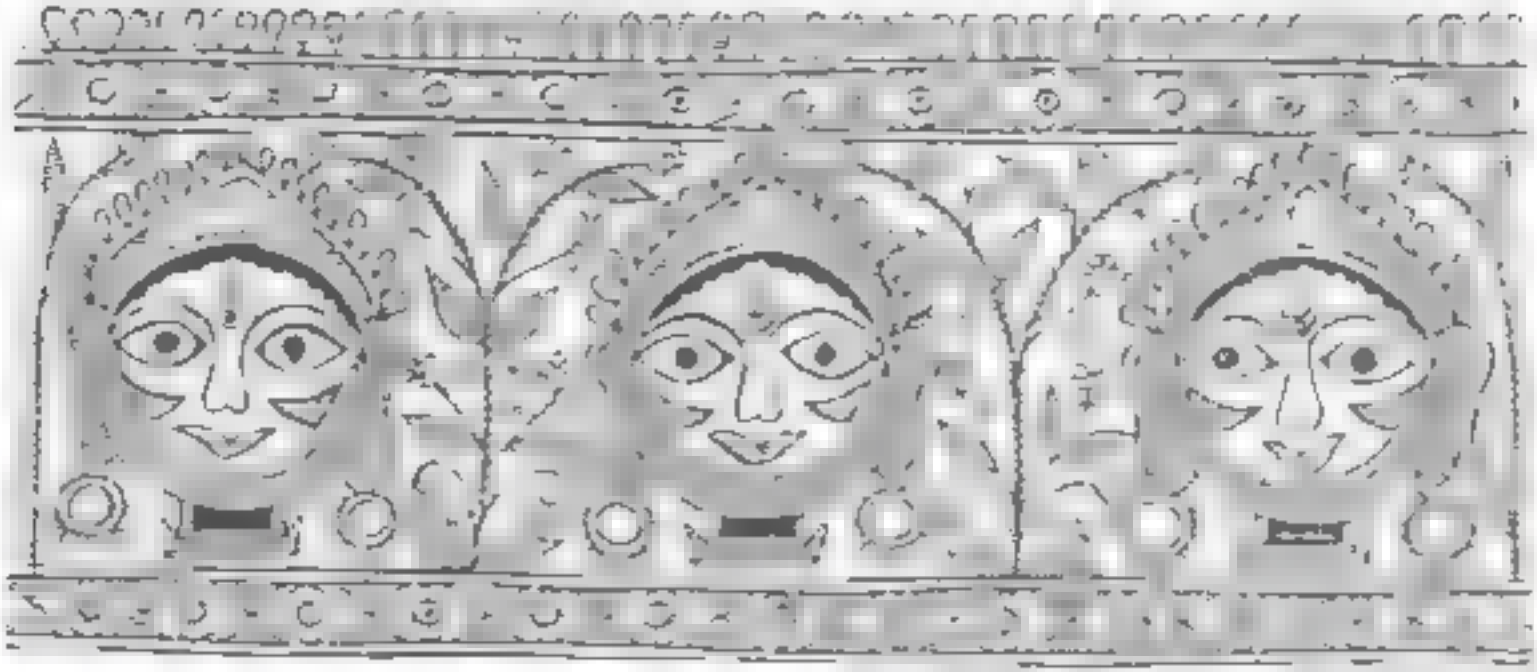

चन्द्रवीर

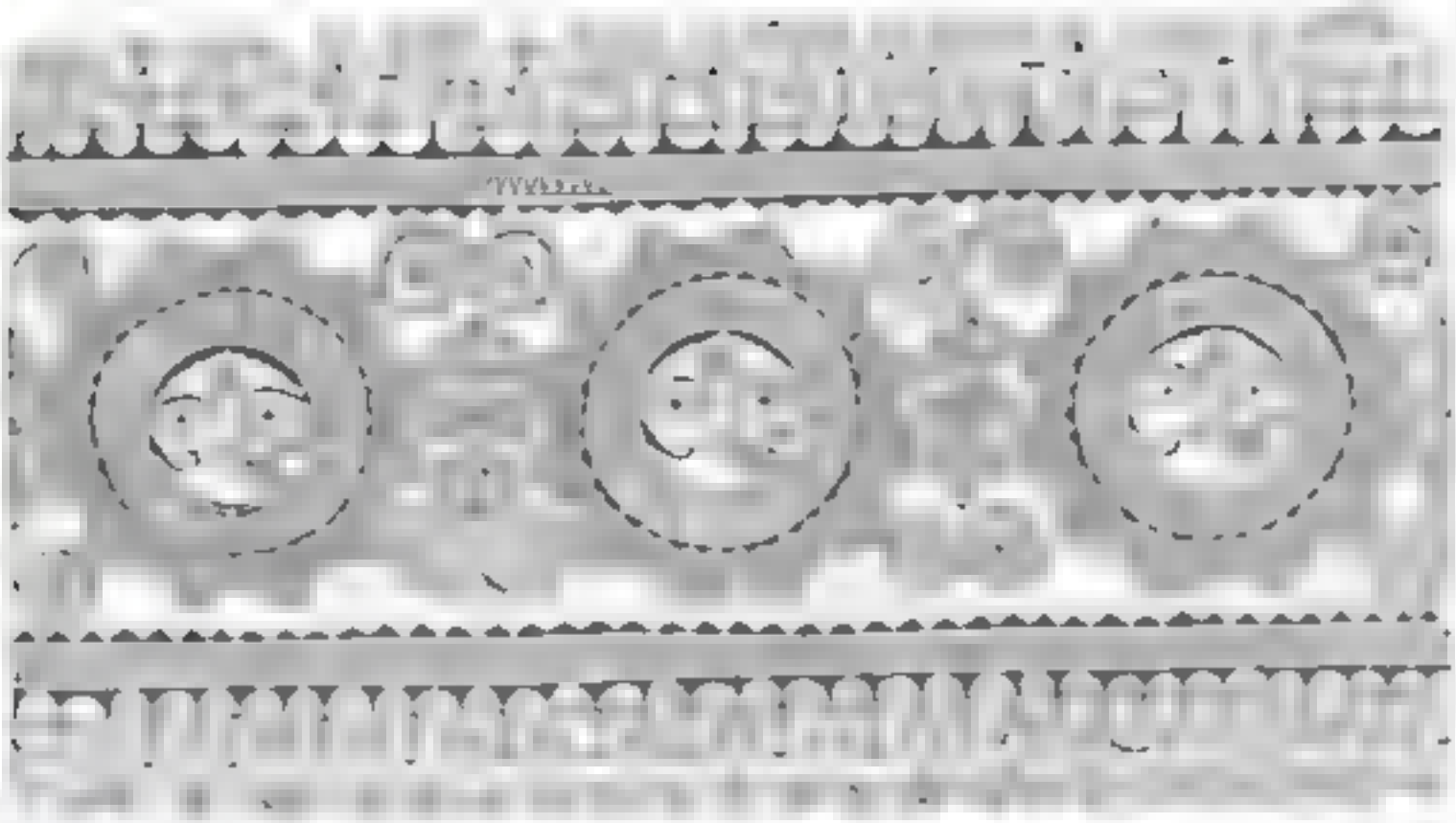

"सुन्दर बदन सिंदूर बिन्दु भामर चिकुर नार ।
जानि रवि ससि संगाह कमल पाचु कर अंधकार ।"

सुन्दरीका मुखमण्डल — सुन्दर मुख सिंदूरका बिंदु तथा काला केशपाश —
[illegible] अंधकारको पीछे धकेलकर सूर्य सिंदूर बिंदु, और चन्द्रमा मुख एवं [illegible] उग आए हों।

—विद्यापति

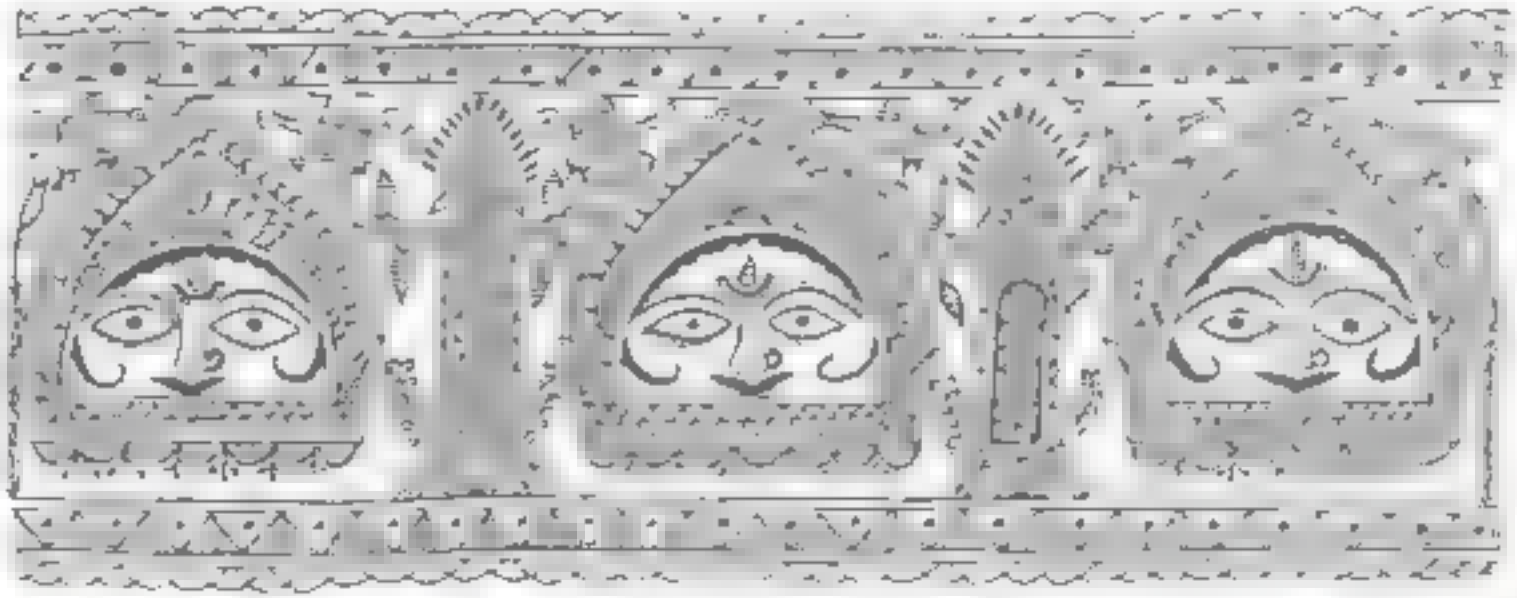

योनिकोर

मिथिला चित्रशैलीमें 'दोने' छड़या सम्यताके उपहृत है।
शिव और शक्तिके प्रतीक और सृष्टि-सौभाग्यकी बढ़ावेज रूपमें पूजित
'योनि' कोबर घर (मधुकक्ष) का परमावश्यक आलेखन है। प्राचीन परम्परामें
योनिका अंकन मिथिलेके इस भागमें किया जाता था जहाँ मधुमक्खी
सम्पृक्त युगल जोड़ीकी सम्मुख दृष्टि पड़ती है।

मिथिला चित्रकलामें योनि धारिणीकी तरह आराध्य है।

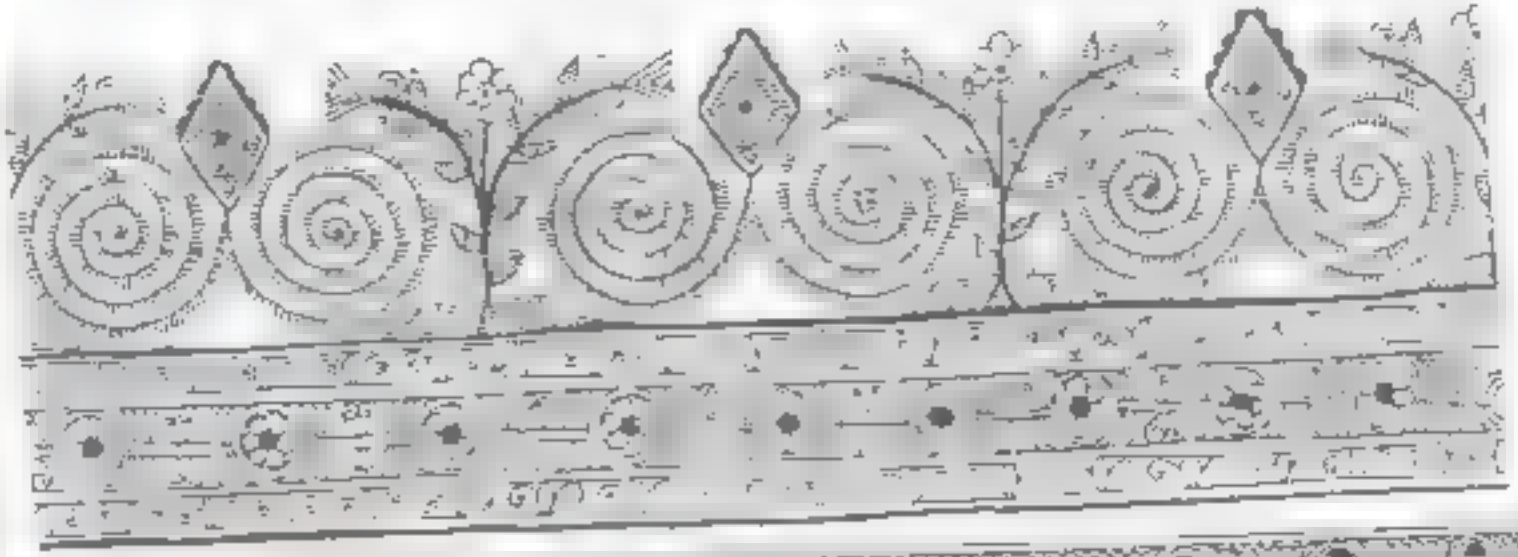

ओषधय आपो अग्निर्गौरन्न
तद्यथा तृणस्य एव समिल्लोमानि धूमो
यो नेहर्चिर्यदन्तः करोति तेऽर्चिष
अभिनन्दा विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नग्नौ
देवा एतां जुह्वति तस्या आहुत्यै पुरुष
सम्भवति स जीवति यावज्जीवत्यथ
यदा म्रियते ॥

— (बृहदारण्यकोपनिषद्)

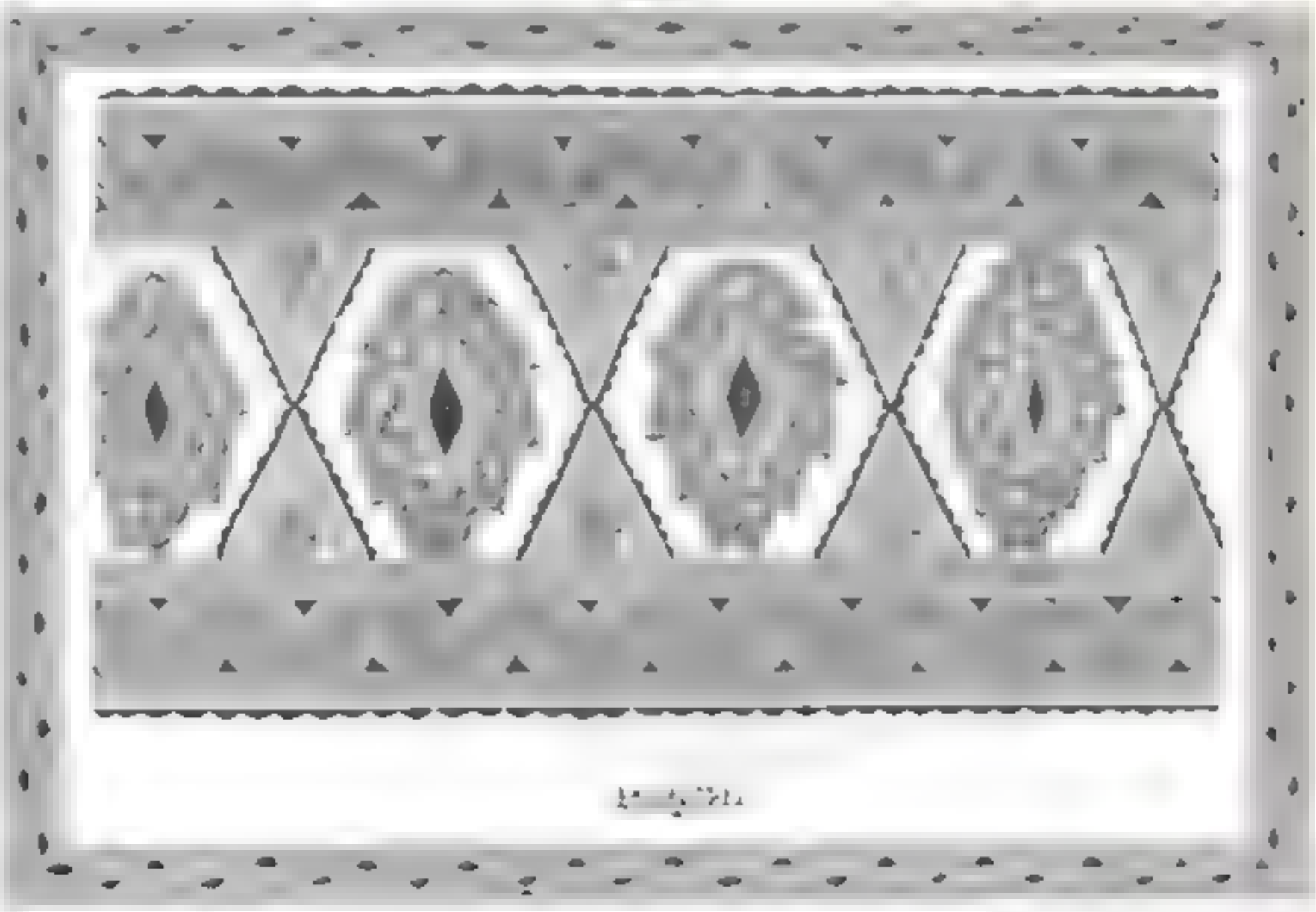

हे गौतम ! स्त्री ही अग्नि है,
उपस्थ ही उसकी समिध है,
लोम धूम है, योनि ज्वाला है,
मैथुनव्यापार अंगार है और
आनन्द-अनुभूति ही स्फुलिंग है ।
उस अग्निमें देवगण वीर्यकी आहुति देते हैं
जिससे जन्मता है मानव ;
जब तक कर्म शेष रहता है ,
वह जीवित रहता है ।

(बृहदारण्यकोपनिषद)।

हस्तिपोनि

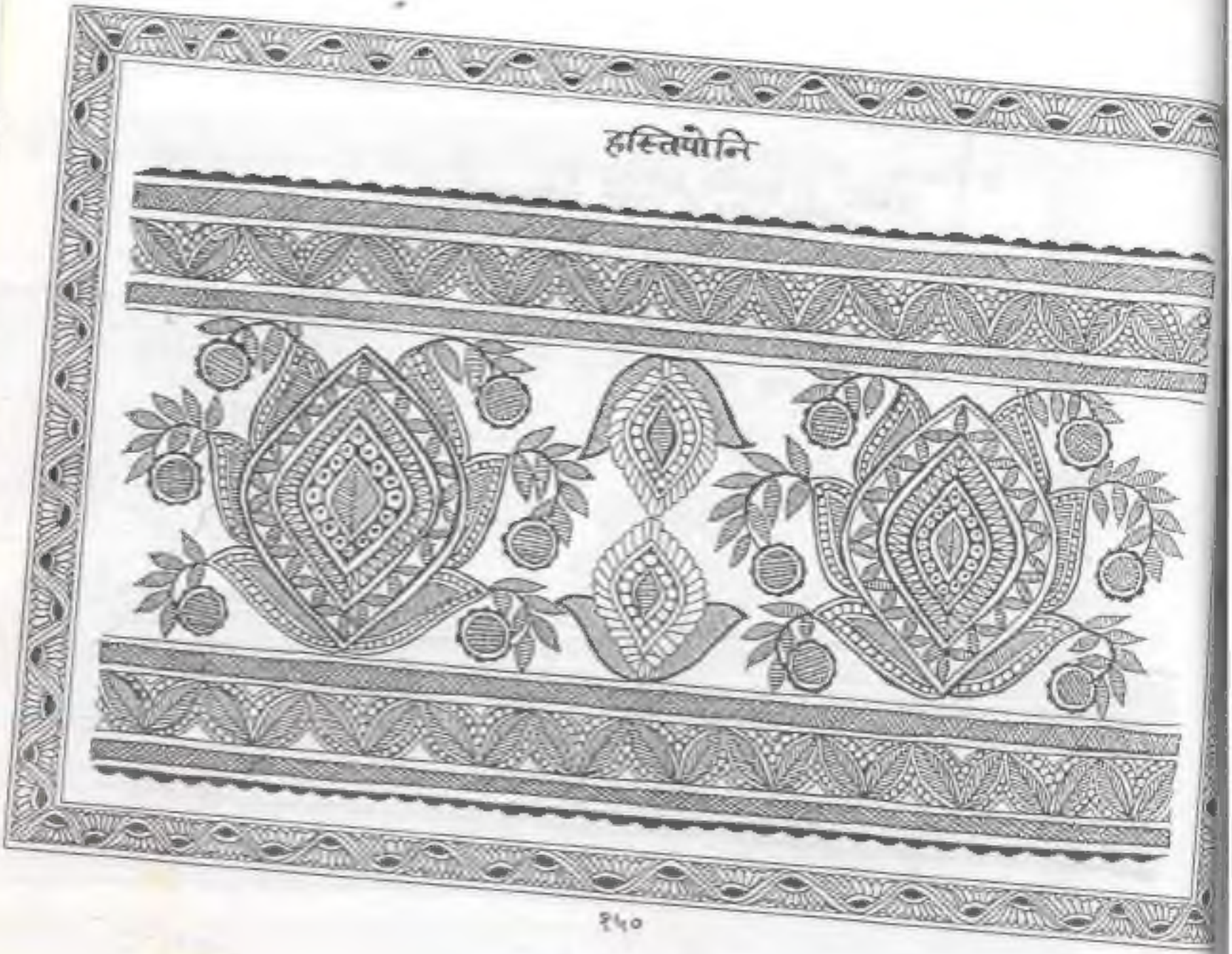

मुद्रक : शेखर प्रकाशन, पटना – 24 दूरभाष : 9334102305